53 मुख़्तलिफ़ आ'माल की 692 अच्छी निय्यतों का बयान

کتاب النیات

तर्जमा ब नाम

बहारे निय्यत

मुअल्लिफ़

हज़रते अ़ल्लामा मुहम्मद बिन अ़लवी बिन उ़मर ऐ़दरूस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

(वफ़ात 1432 हिजरी)

MC 1286

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

शो'बए तराजिमे कुतुब

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह किताब मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब की है। मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो मजलिस को सफ़हा और सत्र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबिता न फ़रमाएं!!!

...राबिता :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1, गुजरात (हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ु = و	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

53 मुख़्तलिफ़ आ'माल की 692 अच्छी नियतों का बयान

तर्जमा ब नाम

बहारे नियत

-: मुअल्लिफ़ :-

ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अ़लवी बिन उ़मर

ऐ़दरूस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात 1432 हिजरी)

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(शो'बए तराजिमे कुतुब)

नाशिर

मक्तबतुल मदीना देहली-6

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِکَ وَاَصْحٰبِکَ یَا حَبِیْبَ اللہ

नाम किताब : کتابُ النِّیّات
तर्जमा बनाम : **बहारे निय्यत**
मुअल्लिफ़ : अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अ़लवी बिन उ़मर ऐदरूस رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (वफ़ात 1432 हिजरी)
मुर्तजिमीन : मदनी उ़लमा (शो'बए तराजिमे कुतुब)
पहली बार : रजबुल मुरज्जब, सिने 1438 हिजरी
ता'दाद : 3100
नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली-6

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 19 जुल क़ा'दतिल ह़राम 1438 हि. **ह़वाला नम्बर :** 215

الحمد للّٰہ رب العٰلمین و الصلٰوۃ و السلام علٰی سید المرسلین و علٰی اٰلہ و اصحابہ اجمعین

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"बहारे निय्यत" (उर्दू)

(मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है । मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इबारात, अख़्लाक़िय्यात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़रबी इबारात वग़ैरा के ह़वाले से मक़्दूर भर मुलाह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़लतियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं ।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल
(दा'वते इस्लामी)
12-08-2017

Web : www.dawateislami.net
E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं ।

याददाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

इजमाली फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा
किताब पढ़ने की निय्यतें	7	छटी निय्यत	45
तआ़रुफ़े इ़ल्मिय्या अज़ अमीरे अहले सुन्नत مَدَظِّلُهُ	8	सातवीं निय्यत	46
पहले इसे पढ़ लीजिये !	10	आठवीं निय्यत	49
आग़ाज़े सुख़न	13	नवीं निय्यत	50
मस्जिद जाने की आठ निय्यतें	19	दसवीं निय्यत	51
पहली निय्यत	19	ग्यारहवीं निय्यत	52
दूसरी निय्यत	21	बारहवीं निय्यत	53
तीसरी निय्यत	22	मस्जिद में बैठने की निय्यतों का ख़ुलासा	55
चौथी निय्यत	24	मुसलमान भाइयों से मुलाक़ात की निय्यतें	56
पांचवीं निय्यत	27		
छटी निय्यत	29	मुलाक़ात की पांच आफ़तें और बुरी निय्यतें	57
सातवीं निय्यत	31		
आठवीं निय्यत	34	पहली आफ़त	57
मस्जिद जाने की निय्यतों का ख़ुलासा	36	दूसरी आफ़त	59
मस्जिद में बैठने की 12 निय्यतें	39	तीसरी आफ़त	60
पहली निय्यत	40	चौथी आफ़त	61
दूसरी निय्यत	41	पांचवीं आफ़त	61
तीसरी निय्यत	42	मुलाक़ात की सात अच्छी निय्यतें	63
चौथी निय्यत	43	पहली निय्यत	63
पांचवीं निय्यत	44	दूसरी निय्यत	65

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा
तीसरी निय्यत	67	छटी निय्यत	102
चौथी निय्यत	71	सातवीं निय्यत	102
पांचवीं निय्यत	72	भूका रहने की निय्यतों का ख़ुलासा	103
छटी निय्यत	74	किताबों के हुसूल और मुत़ालए़ की 48 निय्यतें	103
सातवीं निय्यत	76		
मुलाक़ात की निय्यतों का ख़ुलासा	78	दर्स सुनने और देने नीज़ इल्मो ज़िक्र के ह़ल्क़ों और सालिह़ीन की जगहों पर ह़ाज़िरी की 40 निय्यतें	107
दुरूद शरीफ़ पढ़ने की निय्यतें	80		
मसाजिद में तिलावते क़ुरआन की मजालिस और दौरए क़ुरआन की 42 निय्यतें	81	मुसलमानों पर वक़्फ़ मफ़ादाते आ़म्मा की चीज़ें, ज़मीन और अमवाल में 46 निय्यतें	109
रात की इ़बादत की 15 निय्यतें	84		
नेकी की दा'वत की 19 निय्यतें	85		
निकाह़ की 23 निय्यतें	86	मशाइख़ व बुज़ुर्गाने दीन से मुलाक़ात की सात निय्यतें	111
निकाह़ की दुआ़एं	89		
पढ़ने पढ़ाने की 13 निय्यतें	90	नेक इजतिमाआ़त में ह़ाज़िरी की 11 निय्यतें	112
गोशा नशीनी की 21 निय्यतें	91		
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये भूका रहने की सात निय्यतें	91	इजतिमाए़ मीलाद में ह़ाज़िरी की 10 निय्यतें	112
पहली निय्यत	92	ज़ियारते क़ुबूर की सात निय्यतें	113
दूसरी निय्यत	95	गाड़ी चलाने की चार निय्यतें	114
तीसरी निय्यत	98	मस्जिद की सफ़ाई की 10 निय्यतें	114
चौथी निय्यत	99	घर में रहने की छ निय्यतें	115
पांचवीं निय्यत	100	हाथ मिलाने की आठ निय्यतें	115

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा
रिश्तेदारों से मुलाक़ात की पांच निय्यतें	116	वुज़ू की छ निय्यतें	126
लाइब्रेरी में दाख़िल होने की 21 निय्यतें	116	नया कपड़ा पहनने की छ निय्यतें	130
सदक़ा करने की 11 निय्यतें	117	बाज़ार जाने की नव निय्यतें	130
किताब की ख़रीदो फ़रोख़्त की सात निय्यतें	117	बैतुल ख़ला में जाने की आठ निय्यतें	131
		खाना खाने की नव निय्यतें	133
अपने पास तस्बीह़ रखने की छ निय्यतें	117	क़हवा और चाए पीने की चार निय्यतें	134
चादर इस्ति'माल करने की 10 निय्यतें	118	तिजारत की 20 निय्यतें	134
घड़ी इस्ति'माल करने की चार निय्यतें	118	लोगों की ह़ाजतें पूरी करने और उन का हाथ बटाने की छ निय्यतें	135
अ़जाइब घरों और तफ़रीह़ गाहों की पांच निय्यतें	119	पालतू जानवर ख़रीदने की 7 निय्यतें	135
अज़ान देने की 12 निय्यतें	119		
मशरूबात पीने की 23 निय्यतें	121	सुवारी वग़ैरा ख़रीदने की चार निय्यतें	136
मिस्वाक की सात निय्यतें	122	मरीज़ से मुलाक़ात की छ निय्यतें	137
बुलन्द आवाज़ से तिलावत वग़ैरा की छ निय्यतें	123	उ़र्स वग़ैरा में ह़ाज़िरी की आठ निय्यतें	138
		हस्पताल वग़ैरा जाने की 35 निय्यतें	138
आख़िरी सफ़ों में नमाज़ पढ़ने की निय्यत	123	सफ़र की 11 निय्यतें	140
तालाब वग़ैरा पर जाने की पांच निय्यतें	124	सय्यिदुना हूद عَلَيْهِ السَّلَام के मज़ार की ज़ियारत की 49 निय्यतें	142
दर्स में ह़ाज़िरी की छ निय्यतें	125	फ़ेहरिस्त ह़िकायात	147
मुसलमान भाइयों को नसीह़त करने की सात निय्यतें	125	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	148
		मआख़िज़ो मराजेअ़	155
मसाइल लिखने की तीन निय्यतें	125	❁❁❁	

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

"अ़मल से बेहतर" के 9 हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "9 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्तफ़ा : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ या'नी मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।" (معجم کبیر، ۱۸۵/۶، حدیث: ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :

- बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
- जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व सलात और तअ़व्वुज़ व तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा। (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इ़बारात पढ़ लेने से इस पर अ़मल हो जाएगा) ﴾2﴿ रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾3﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾4﴿ क़ुरआनी आयात और अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा ﴾5﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और जहां जहां किसी **सह़ाबी या बुज़ुर्ग** का नाम आएगा वहां رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه और رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पढ़ूंगा। ﴾6﴿ इस किताब का मुत़ालआ़ शुरूअ़ करने से पहले इस के मुअल्लिफ़ को ईसाले सवाब करूंगा। ﴾7﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े के) याददाश्त वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾8﴿ दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा। ﴾9﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी तौ़र पर मुत्त़लअ़ करूंगा।

(नाशिरीन वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना* ***अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी*** *रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, इह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दिद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या''** भी है जो **दा'वते इस्लामी** के **उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छ शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत ﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब

﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब ﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब

﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब ﴾6﴿ शो'बए तख़रीज[1]

---

1 .....तादमे तह़रीर (ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1438 हिजरी) 10 शो'बे मज़ीद क़ाइम हो चुके हैं : (7) फ़ैज़ाने कुरआन (8) फ़ैज़ाने ह़दीस (9) फ़ैज़ाने सह़ाबा व अहले बैत (10) फ़ैज़ाने सह़ाबियात व सालिह़ात (11) शो'बए अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ (12) फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा (13) फ़ैज़ाने औलिया व उ़लमा (14) बयानाते दा'वते इस्लामी (15) रसाइले दा'वते इस्लामी (16) अ़रबी तराजुम। (**मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**)

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां माया तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ **ह़त्तल वस्अ़** सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती मदनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **'दा'वते इस्लामी'** की तमाम मजालिस ब शुमूल **'अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या'** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हिजरी

दा'वते इस्लामी के **सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों** में सफ़र और रोज़ाना **फ़िक्रे मदीना** के ज़रीए **मदनी इन्आ़मात का कार्ड** पुर कर के हर **मदनी माह** के दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से **पाबन्दे सुन्नत** बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

पहले इसे पढ़ लीजिये

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा सा'दुद्दीन तफ़्ताज़ानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّورانی फ़रमाते हैं : اَلنِّيَّةُ اَنْ يَّقْصُدَ بِقَلْبِهٖ تَوَجِّيْهَ فِعْلِهٖ اِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى وَحْدَهٗ या'नी दिल से अपने अ़मल को सिर्फ़ **अल्लाह** तआ़ला के लिये रखने का इरादा करना **निय्यत** कहलाता है।[1]

हर जाइज़ काम में एक से ज़ियादा अच्छी निय्यतें की जा सकती हैं और इस त़रह़ वोह अ़मल इ़बादत बन जाता, सवाब बढ़ता और बन्दा आ'ला दरजात पा लेता है, तो इस से बड़ा ख़सारा क्या होगा कि बन्दा ग़फ़्लत व भूल के सबब अपने अ़मल में निय्यत ही न करे या एक से ज़ियादा निय्यतें न करे। आ़लिमे निय्यत, सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : "जब काम कुछ बढ़ता नहीं, सिर्फ़ निय्यत कर लेने में एक नेक काम के दस हो जाते हैं तो एक ही निय्यत करना कैसी ह़माक़त और बिला वज्ह अपना नुक़्सान है।"[2]

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 72 **मौज़ूआ़त** पर अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ अपने रिसाले "**सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े**" सफ़ह़ा 3 पर निय्यत के पांच रहनुमा उसूल बयान फ़रमाए हैं जिन का ख़ुलासा येह है : (1)...बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी नेक काम का सवाब नहीं मिलता (2)....जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा (3)....निय्यत दिल के इरादे को कहते हैं, दिल में निय्यत होते हुए ज़बान से भी दोहरा लेना ज़ियादा

1 ...شرح التلویح علی التوضیح، ۱/۲۱۰

2 ....फ़तावा रज़विय्या, 23 / 157

अच्छा है, दिल में निय्यत न हो तो ज़बान से निय्यत के अल्फ़ाज़ अदा कर लेने से निय्यत नहीं होगी (4)....अ़मले ख़ैर में अच्छी निय्यत का मत़लब येह है कि दिल अ़मल की त़रफ़ मुतवज्जेह हो और वोह अ़मल रिज़ाए इलाही के लिये किया जा रहा हो । निय्यत से इ़बादात को एक दूसरे से अलग करना या इ़बादत और आ़दत में फ़र्क़ करना मक़्सूद होता है। याद रहे ! सिर्फ़ ज़बानी कलाम या सोच या बे तवज्जोगी से इरादा करना इन सब से निय्यत कोसों दूर है क्यूंकि निय्यत इस बात का नाम है कि दिल उस काम को करने के लिये बिल्कुल तय्यार हो (5)....जो अच्छी निय्यतों का आ़दी नहीं उसे शुरूअ़ में ब तकल्लुफ़ इस की आ़दत बनानी पड़ेगी नीज़ निय्यतों की आ़दत बनाने के लिये इन की अहम्मिय्यत पर नज़र रखते हुए सन्जीदगी के साथ पहले अपना ज़ेहन बनाना पड़ेगा ।

53 **मौज़ूआ़त** के मुतअ़ल्लिक़ 692 अच्छी निय्यतों पर मुश्तमिल पेशे नज़र किताब "**बहारे निय्यत**" ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अ़लवी बिन उ़मर ऐ़दरूस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की तालीफ़ "**किताबुन्निय्यात**" (مرکز تریم للدراسات والنشر، مطبوعہ:۱۴۲۴ ہجری) का उर्दू तर्जमा है जिस में इमामे अजल ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू त़ालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی की तस्नीफ़ "इ़ल्मुल क़ुलूब" से भरपूर इस्तिफ़ादा किया गया है । अ़ल्लामा मुह़म्मद ऐ़दरूस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه 1351 हिजरी को तिरयम (यमन) में पैदा हुए और सारी ता'लीम यहां के उ़लमाए किराम से ह़ासिल की, फिर त़लबे रोज़गार में शहर अ़द्न चले गए वहीं आप ने क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ किया, चार साल के बा'द वापस तिरयम आ गए और मस्जिदे सक़ाफ़ में इमाम व मुअ़ल्लिम मुक़र्रर हुए और तस्नीफ़ व तालीफ़ में मश्ग़ूल हो गए, दीनी इ़ल्मी और सक़ाफ़ती मौज़ूआ़त पर आप ने तक़रीबन 100 किताबें लिखीं जिन में से चन्द येह हैं :

(۱)خَمْسُمِائَةِ سُنَّةٍ مِّنْ سُنَنِ الصَّلَاۃ(۲)فَوَائِدٌ مِّنَ الْاِعْجَازِ الْقُرْاٰنِی(۳)تُحَفُ الزَّمَانِ فِیْ اَخْبَارِ مَاقَدْکَان(۴)عِلَاجُ النِّسْیَان(۵)خَوَّاصُ اَسْمَاءِ اللّٰہِ الْحُسْنٰی(۶)فَضَائِلُ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ(۷)کَیْفَ تَکُوْنُ غَنِیًّا وغیرہ۔

इल्मो अ़मल की पैकर येह शख़्सिय्यत बरोज़े जुमा'रात 8 ज़ुल क़ा'दतिल ह़राम 1432 हिजरी को दुन्याए फ़ानी से कूच कर गई, आप का विसाल भी बड़ा क़ाबिले रश्क था । चुनान्चे, जब आप को हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى के हाथ का लिखा हुवा "इह़याउल उ़लूम" का नुस्ख़ा मिला तो आप बे इन्तिहा ख़ुश हुए और अपनी जगह से हिले बिग़ैर उस का मुत़ालआ़ करते रहे और इसी ह़ालत में मुस्कुराते हुए इन्तिक़ाल फ़रमा गए। मज़ारे फ़ाइज़ुल अन्वार **ह़ज़्रमौत** के इलाक़े **तिरयम** (यमन) में वाक़ेअ़ है।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बए **तराजिमे कुतुब** ने इस किताब का उर्दू तर्जमा करने की सआ़दत ह़ासिल की, किताब में दिये गए ह़वालाजात की ह़त्तल मक्दूर तख़्रीज कर दी गई है, पढ़ने वालों की दिलचस्पी के लिये जा बजा मुख़्तलिफ़ उ़नवानात क़ाइम किये गए हैं और अ़वाम की तशवीश का बाइ़स बनने वाले दो एक मक़ामात का तर्जमा नहीं किया गया। ख़ुद भी इस किताब का मुत़ालआ़ कीजिये और दूसरे इस्लामी भाइयों को भी तरग़ीब दिलाइये, मुमकिन हो तो दूसरों को तोह़फ़े में पेश कीजिये, **अल्लाह** करीम हमें अच्छी अच्छी **निय्यतें** कर के अपने आ'माल का सवाब बढ़ाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

आग़ाज़े सुख़न

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَصَلَّى اللّٰهُ وَسَلَّمَ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْاَنْبِيَاءِ وَالْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْن، اَمَّا بَعْدُ

मैं सब से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करता हूं कि उस ने मुझे येह किताब लिखने की तौफ़ीक़ दी और इस पर मेरी मदद फ़रमाई और मैं उसी रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करता हूं कि येह किताब उस की बारगाह में क़बूल हो जाए। येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल है कि इस किताब का पांच मुख़्तलिफ़ ज़बानों में तर्जमा हो चुका है और इसे मुल्क व बैरूने मुल्क में बड़ी पज़ीराई ह़ासिल हुई। अब येह किताब दोबारा छपने जा रही है और येह एडीशन तस्ह़ीह़ शुदा है और इस में कुछ इज़ाफ़ा जात भी किये गए हैं।

अल्लाह रब्बुल आ़लमीन से दुआ़ है कि वोह इस एडीशन के नफ़्अ़ व भलाई को आ़म फ़रमाए, बेशक आ'माल निय्यतों के साथ हैं और हर शख़्स को वोही मिलेगा जिस की उस ने निय्यत की।

अच्छी निय्यतों की अहम्मिय्यत

रसूले अकरम, शफ़ीए़ आ'ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَاِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَّا نَوٰى या'नी आ'माल का मदार निय्यतों पर है और हर शख़्स के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की।[1]

हुज़ूर रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّمَا يُبْعَثُ النَّاسُ عَلٰى نِيَّاتِهِمْ या'नी रोज़े महशर लोगों को उन की निय्यतों पर उठाया जाएगा।[2]

---

1 ...بخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی الی رسول اللّٰہ، ۱/۵، حدیث: ۱

2 ...ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب النیۃ، ۴/ ۴۸۲، حدیث: ۴۲۲۹

रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने जिहाद किया और उस ने सिर्फ़ ऊंट का पैर बांधने की रस्सी हासिल करने की निय्यत की तो उस के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की[1]।[2]

मोमिन की निय्यत अ़मल से बेहतर है

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِه या'नी मोमिन की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।[3]

निय्यत पर कामिल नेकी का सवाब

येह इस लिये है कि निय्यत दिल का अ़मल है और दिल सब से अफ़्ज़ल उ़ज़्व है लिहाज़ा उस का अ़मल दीगर आ'ज़ा के अ़मल से बेहतर है और इस लिये कि निय्यत अकेली भी नफ़्अ़ देती है जब कि दीगर आ'ज़ा के आ'माल निय्यत के बिग़ैर कुछ नफ़्अ़ नहीं देते, जैसा कि ह़दीसे पाक में है : "जिस ने किसी नेकी का इरादा किया मगर उस पर अ़मल न किया उस के लिये एक मुकम्मल नेकी का सवाब लिख दिया जाता है फिर अगर वोह उस नेकी को कर ले तो उस के लिये 10 नेकियां लिखी जाती हैं।"[4]

तौफ़ीक़ के 70 दरवाज़े

मरवी है कि "जिस ने ख़ुद पर अच्छी निय्यत का एक दरवाज़ा खोला अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये तौफ़ीक़ के 70 दरवाज़े खोल देता है।"

---

1 ....मुराद येह है कि जिहाद से उस का इरादा कुछ माले ग़नीमत ह़ासिल करना हो ख़्वाह थोड़ा ही क्यूं न हो जैसे कि ऊंट का पाउं बांधने की रस्सी। (التیسیر بشرح الجامع الصغیر، ۲/ ۴۳۲)

2 ...نسائی، کتاب الجهاد، باب من غزا فی سبیل اللّٰه...الخ، ص ۵۱۰، حدیث: ۳۱۳۵

3 ...معجم کبیر، ۶/ ۱۸۵، حدیث: ۵۹۴۲

4 ...بخاری، کتاب الرقاق، باب من هم بحسنة...الخ، ۴/ ۲۴۴، حدیث: ۶۴۹۱

ऐ बन्दे ! अल्लाह तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाए ! तुम पर अच्छी निय्यत लाज़िम है और उसे ख़ालिस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये रखना ज़रूरी है और जब भी कोई त़ाअ़त व फ़रमां बरदारी वाला काम करो तो उस में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के क़ुर्ब, उस की मर्ज़ी चाहने और उस की रिज़ा त़लब करने की निय्यत करो और इस इत़ाअ़त पर अपने फ़ज़्लो एह़सान से जिस सवाब का रब तआ़ला ने वा'दा फ़रमाया है उस का इरादा करो ।

हर मुबाह़ काम पर सवाब ह़ासिल हो

मुबाह़ चीज़ों ह़त्ता कि खाने पीने और सोने का आग़ाज़ उस वक़्त तक न करो जब तक इन से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त पर मदद और उस की इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत न कर लो कि इस निय्यत से मुबाह़ चीज़ें भी इत़ाअ़त में शुमार होंगी क्यूंकि वसाइल व ज़राएअ़ के लिये भी मक़ासिद वाले अह़काम होते हैं (या'नी जो हुक्म मक़्सद का होता है वोही उस तक ले जाने वाले ज़रीए़ का भी होता है) और जिस ने अच्छी निय्यत में कमी की वोह नुक़्सान में रहा ।

जितनी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा

तुम इत़ाअ़त वाले और मुबाह़ व जाइज़ कामों में बहुत सी अच्छी निय्यतें कर लिया करो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम से तुम्हें इन में से हर एक निय्यत के ज़रीए़ मुकम्मल सवाब ह़ासिल होगा और इत़ाअ़त व भलाई वाले ऐसे काम जिन से तुम आ़जिज़ हो और उन्हें अ़मल में लाना तुम्हारे बस की बात न हो तो उस की निय्यत कर लो और ब वक़्ते क़ुदरत इस का पुख़्ता इरादा कर लो और सिद्क़े दिल, पुख़्ता इरादे और दुरुस्त निय्यत के साथ कहो : "अगर मुझे इस की इस्तित़ाअ़त

हुई तो इसे ज़रूर करूंगा।" यूं तुम्हें अ़मल करने वाले का सवाब ह़ासिल हो जाएगा जैसा कि हमें येह रिवायत पहुंची है :

ह़िकायत : अच्छी निय्यत का फ़ाएदा

बनी इसराईल का एक शख़्स क़ह़त़ के ज़माने में रेत के एक टीले के पास से गुज़रा तो दिल में कहा : "अगर येह सारा खाना होता और मेरी मिल्किय्यत में होता तो मैं इसे लोगों में तक़्सीम कर देता।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई कि फ़ुलां शख़्स से फ़रमा दीजिये : "**अल्लाह** तआ़ला ने तेरा सदक़ा क़बूल कर लिया है और तेरी अच्छी निय्यत को शरफ़े क़बूलिय्यत से नवाज़ा है।"[1]

फ़क़त़ निय्यत पर सवाब

ह़दीसे पाक में है : फ़िरिश्ते जब बन्दे का नामए आ'माल ले कर बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होते हैं तो **अल्लाह** करीम عَزَّوَجَلَّ उन से इरशाद फ़रमाता है : इस के लिये ऐसा ऐसा सवाब लिखो। फ़िरिश्ते अ़र्ज़ करते हैं : इस बन्दे ने तो येह अ़मल नहीं किया। **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : इस ने इस की निय्यत की थी।[2]

आ'माल के सवाब का मदार

रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है और हर शख़्स के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की, लिहाज़ा जिस की हिजरत **अल्लाह** तआ़ला और

1...تفسیر کبیر، پ۱، البقرۃ، تحت الآیۃ: ۱۱۲، ۲/ ۷

2...روح المعانی، پ۲۶، ق، تحت الآیہ: ۱۸، ۱۳/ ۴۶۲

उस के रसूल की त़रफ़ है तो उस की हिजरत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ है और जिस की हिजरत दुन्या को पाने या किसी औ़रत से निकाह़ करने के लिये है तो उस की हिजरत उसी त़रफ़ है जिस की उस ने निय्यत की।[1]

अमीरुल मोमिनीन फ़िल ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى ने अपनी किताब सह़ीह़ बुख़ारी शरीफ़ का आग़ाज़ इसी ह़दीसे पाक से किया और ख़ुत़्बे की जगह इस ह़दीसे मुबारक को रखा।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन नहदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى फ़रमाते हैं : अगर मैं कई अबवाब पर मुश्तमिल कोई किताब लिखता तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ह़दीस ''आ'माल निय्यतों के साथ हैं'' को हर बाब में रखता।[2]

तिहाई इ़ल्म

येह ह़दीसे पाक उन अह़ादीस में से है जिन पर दीन का मदार है। ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : येह ह़दीसे पाक तिहाई इ़ल्म है और फ़िक़्ह के 70 अबवाब में दाख़िल है।[3]

निय्यत के मुत़अ़ल्लिक़ अस्लाफ़ के अक़्वाल

﴿1﴾.....ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या बिन कसीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَدِيْر फ़रमाते हैं : निय्यत को सीखो कि येह अ़मल से ज़ियादा पुख़्ता होती है।[4]

---

1 ... بخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی الی رسول اللّٰہ، ۱/۵، حدیث: ۱

2 ... جامع العلوم والحکم، الحدیث الاول، ص۱۷

3 ... جامع العلوم والحکم، الحدیث الاول، ص۱۷

4 ... حلیۃ الاولیاء، یحیی بن ابی کثیر، ۳/ ۸۲، رقم: ۳۲۵۷

﴾2﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद शामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامِی फ़रमाते हैं : मुझे येह पसन्द है कि मेरे लिये हर शै में कोई न कोई निय्यत हो ह़त्ता कि खाने और पीने में भी।[1]

﴾3﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं ने येही देखा है कि सारी भलाई को अच्छी निय्यत ही जम्अ़ करती है।[2]

﴾4﴿.....सलफ़ सालिह़ीन से मन्क़ूल है कि जिसे येह पसन्द हो कि उस के अ़मल को पायए तक्मील तक पहुंचा दिया जाए तो वोह अपनी निय्यत अच्छी करे।[3]

﴾5﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : बहुत से छोटे आ'माल को निय्यत बड़ा कर देती है और बहुत से बड़े आ'माल को निय्यत छोटा कर देती है।[4]

﴾6﴿.....ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़द्दाद علیہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الجَوَاد फ़रमाते हैं :

وَلِصَالِحِ النِّيَّاتِ كُنْ مُّتَحَرِّيًا　　مُّسْتَكْثِرًا مِّنْهَا وَرَاقِبْ وَاخْشَعْ

तर्जमा : अच्छी निय्यतों की जुस्तजू करने और उन में इज़ाफ़ा करने वाले बनो और निगहबानी करो और डरते रहो।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन ज़ैन ह़बशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने इस शे'र की कामिल शर्ह़ लिखी है जो चाहे उस का मुत़ालआ़ कर ले।

सलफ़ सालिह़ीन अपनी औलाद को निय्यत की ता'लीम इस त़रह़ देते थे जैसे वोह उन्हें सूरए फ़ातिह़ा सिखाते थे।

---

1 ...جامع العلوم والحکم، الحدیث الاول، ص ۲۳

2 ...جامع العلوم والحکم، الحدیث الاول، ص ۲۳

3 ...جامع العلوم والحکم، الحدیث الاول، ص ۲۳

4 ...احیاء العلوم، کتاب النیۃ والاخلاص والصدق، الباب الاول فی النیۃ، ۵/ ۸۹

मस्जिद जाने की आठ निय्यतें

मसाजिद की त़रफ़ आमदो रफ़्त परहेज़गारों के आ'माल में ने'मते उ़ज़्मा की हैसिय्यत रखती है और इस के सबब **अल्लाह** तआ़ला ने मोमिनों का ईमान ज़ाहिर फ़रमाया है। बन्दए मोमिन को चाहिये कि जब घर से मस्जिद में जाने के इरादे से निकले तो आठ त़रह़ की मुस्तह़ब निय्यतें कर ले ताकि उस के लिये फ़ज़्ले अ़ज़ीम लिखा जाए और वोह क़ियामत में बड़े सवाब का मुस्तह़िक़ ठहरे क्यूंकि आ'माल निय्यतों के साथ हैं और हर शख़्स के लिये वोही है जिस की उस ने निय्यत की और हर फ़ज़ीलत वाले को उस का फ़ज़्ल पहुंचाया जाएगा।

पहली निय्यत

मस्जिद जाने वाला रब्बे जलील عَزَّوَجَلَّ के घर में उस से मुलाक़ात की निय्यत करे क्यूंकि मसाजिद **अल्लाह** करीम के घर हैं और तुम **अल्लाह** तआ़ला के बन्दे हो और बन्दा जब किसी घरवाले से मुलाक़ात का इरादा करता है तो उस के घर का क़स्द करता और वहां उसे तलाश करता है।[1]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात करने वाला

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस फ़ज़्लो एह़सान की ख़बर देते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की ह़दीस में

1....मसाजिद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की ख़ास जगहें हैं लिहाज़ा मसाजिद की त़रफ़ जाने वाला इन मक़ामात पर रह़मते इलाही और रिज़ाए इलाही पाने के लिये जाने की निय्यत करे। (अज़ इ़ल्मिय्या)

इरशाद फ़रमाया : जो मुसलमान वुज़ू करे पस अच्छा वुज़ू करे फिर **अल्लाह** तआ़ला की मस्जिदों में से किसी मस्जिद में आए तो वोह **अल्लाह** तआ़ला से मुलाक़ात करने वाला होता है और जिस से मुलाक़ात की जाए उस पर ह़क़ है कि मुलाक़ात करने वाले को इ़ज़्ज़त दे।[1]

मस्जिद की ह़ाज़िरी भी तौफ़ीक़े इलाही से मिलती है

ऐ बन्दे ! ग़ौर कर अगर तू अपने जैसे किसी बन्दे के साथ बुराई से पेश आए फिर मुआ़फ़ी मांगने उस के घर चला जाए तो वोह तुझे इ़ज़्ज़त देगा, तुझे अपने क़रीब करेगा, तुझे मुआ़फ़ कर देगा और उस वक़्त बे रुख़ी से पेश नहीं आएगा तो फिर अ़ज़मत वाले **अल्लाह** करीम का मुआ़मला कैसा होगा जब कि वोह सब से बढ़ कर इ़ज़्ज़त देने वाला है। येह भी तै़ शुदा है कि तेरा अपने रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ के घर (मस्जिद) जाना उसी की तौफ़ीक़ व इनायत से है और अगर **अल्लाह** तआ़ला उस बन्दे के साथ इ़ज़्ज़त व उल्फ़त का इरादा न फ़रमाता तो उसे अपने घर में अपनी मुलाक़ात की तौफ़ीक़ अ़त़ा न फ़रमाता।

ह़िकायत : महबूबो मुह़िब ही को बुलाया जाता है

इसी मफ़्हूम की एक प्यारी ह़िकायत आ़बिदो ज़ाहिद ह़ज़रते सय्यिदुना मुवफ़्फ़क़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के बारे में मन्क़ूल है। चुनान्चे, आप फ़रमाते हैं : जब मेरे 60 ह़ज मुकम्मल हो गए तो मैं मस्जिदे ह़राम में मीज़ाबे रह़मत (ख़ानए का'बा के परनाले) के नीचे बैठ गया और मेरे दिल में ख़याल आया कि "मैं और कितनी बार इस घर में आता रहूंगा ?" पस मुझ पर नींद का ग़लबा हुवा और किसी कहने वाले ने कहा : "ऐ मुवफ़्फ़क़ ! अगर तेरा कोई घर हो जिस में तू मेहमानों को जम्अ़ करता हो

[1]...معجم کبیر، ۲/ ۲۵۵، حدیث: ۲۱۴۵

तो तू सिर्फ़ उसी को दा'वत देगा जिस से तुझे मह़ब्बत हो और वोह तुझ से मह़ब्बत करता हो।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : फिर मेरे दिल में आने वाला ख़याल मुझ से दूर हो गया।[1]

"لَا اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ" के बा'द सब से अच्छा कलाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब मुसलमान मस्जिद में दाख़िल हो कर येह कहता है :

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ وَعَلَيْهِ السَّلَامُ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ और **अल्लाह** तआ़ला (की मदद) के साथ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम नाज़िल हो और आप पर सलामती हो और **अल्लाह** की रह़मत।" तो उस से दो फ़िरिश्ते कहते हैं : **अल्लाह** तआ़ला तुझ पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए कि तू ने "لَا اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ" के बा'द सब से अच्छा कलाम किया है।[2]

दूसरी निय्यत

मस्जिद जाने वाला येह निय्यत करे कि मेरे अ़मल की बदौलत मुझे रब तआ़ला की बारगाह से अ़ह्द मिल जाए ताकि वोह बारगाहे इलाही में बुज़ुर्गी और शफ़ाअ़त वालों में से हो जाए। इरशादे बारी तआ़ला है :

لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿۸۷﴾

(پ۱۶،مریم:۸۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *लोग शफ़ाअ़त के मालिक नहीं मगर वोही जिन्हों ने रह़मान के पास क़रार कर रखा है।*

1 ...علم القلوب،باب نية الاختلاف فی المسجد،ص۱۸۷

2 ...ابن ماجه، کتاب المساجد،باب الدعاء عند دخول المسجد،۱/ ۴۲۵،حدیث: ۷۷۱، دون قول الملائكة،عن فاطمة بنت رسول اللّٰه

इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में एक क़ौल येह है : इस क़रार (अ़ह्द) से मुराद जमाअ़त के साथ नमाज़ है।[1]

अ़ज़ाब से महफ़ूज़ व मामून

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए, उस वक़्त हम सात अफ़राद थे, आप ने इरशाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ ने क्या फ़रमाया है ? हम ने अ़र्ज़ की : اَللّٰہُ وَرَسُوْلُہٗ اَعْلَم या'नी अल्लाह तआ़ला और उस का रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बेहतर जानते हैं। फ़रमाया : बेशक तुम्हारा रब عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : जिस ने अपने घर में वुज़ू किया फिर नमाज़ के ह़क़ की ता'ज़ीम, उस की रग़बत और दूसरी चीज़ों पर उसे तरजीह़ देते हुए नमाज़ के लिये चला तो उस के लिये मेरे पास अ़ह्द है कि मैं उसे कभी अ़ज़ाब न दूंगा।[2]

तीसरी निय्यत

मस्जिद जाने वाला उस इज़ाफ़ी इन्आ़म की निय्यत करे जिस पर आख़िरत में अहले जन्नत ह़सरत करेंगे जैसा कि मरवी है, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से अ़र्ज़ की गई : क्या जन्नत वाले जन्नत में दाख़िल होने के बा'द किसी शै की ह़सरत करेंगे ? आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : जन्नतियों को जन्नत में दाख़िले और दाइमी ने'मतें मिलने के

1 ...علم القلوب، باب نیۃ الاختلاف فی المسجد، ص۱۸۸

2 ...معجم کبیر، ۱۹/ ۱۴۲، حدیث: ۳۱۲، بتغیر، عن کعب بن عجرۃ

बा'द सिर्फ़ इस पर ह़सरत होगी कि काश ! वोह मस्जिद की त़रफ़ आमदो रफ़्त रखने में मज़ीद इज़ाफ़ा कर लेते।[1]

ऐ अ़मल करने वाले ! नदामत व अफ़्सोस से पहले पेश क़दमी कर क्यूंकि नदामत तुझे नफ़्अ़ नहीं देगी, तुम लोगों की उस सई के मुतअ़ल्लिक़ क्या गुमान करते हो कि अहले जन्नत उस से मह़रूम होने पर ह़सरत में मुब्तला होंगे ह़ालांकि वोह अ़ज़ीम बादशाह के जवारे रह़मत में ने'मतों और बुज़ुर्गियों से मालामाल होंगे।

सुब्ह़ो शाम मस्जिद जाने की फ़ज़ीलत

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो सुब्ह़ या शाम मस्जिद की त़रफ़ जाएगा अल्लाह तआ़ला उस के लिये हर बार के जाने पर जन्नत की मेहमानी का सामान बनाएगा।[2]

एक बुज़ुर्ग का मा'मूल था कि वोह जब इ़शा की नमाज़ के बा'द अपने घर जाते तो अक्सर फ़रमाया करते : हम शबो रोज़ सुब्ह़ शाम मस्जिद जाते हैं मगर अ़न्क़रीब न सुब्ह़ को जा सकेंगे न शाम को जा सकेंगे।[3]

कफ़्फ़ारात

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए़ आ'ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : शबे मे'राज अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से फ़रमाया कि मलाए

❶... علم القلوب، باب نية الاختلاف فى المسجد، ص ١٨٨

❷... مسند بزار، عطاء بن يسار عن ابي هريرة، ١٥/ ٢٥١، حديث: ٨٧١٢

❸... علم القلوب، باب نية الاختلاف فى المسجد، ص ١٨٨

आ'ला (मुक़र्रबीन फ़िरिश्ते) किस बात में झगड़ रहे हैं? मैं ने अ़र्ज़ की : मैं नहीं जानता। फिर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपना दस्ते कुदरत मेरे दोनों कान्धों के दरमियान रखा जिस की ठन्डक मैं ने अपने सीने में महसूस की और मैं ने ज़मीनो आस्मान में मौजूद हर चीज़ को जान लिया। अल्लाह तआ़ला ने फिर फ़रमाया : ऐ महबूब ! मलाए आ'ला किस बात में झगड़ रहे हैं? मैं ने अ़र्ज़ की : हां, ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! कफ़्फ़ारात के बारे में झगड़ रहे हैं और कफ़्फ़ारात येह हैं : (1)....नमाज़ के लिये मस्जिद में ठहरना (2)....मसाजिद की त़रफ़ चल कर जाना (3)....मशक़्क़त के वक़्त कामिल वुज़ू करना[1]।[2]

मस्जिद की त़रफ़ चल कर जाने की फ़ज़ीलत

मन्क़ूल है कि जब बन्दा मस्जिद के इरादे से अपने घर से निकलता है तो ज़मीन के जिन हिस्सों पर उस के पाउं पड़ते हैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत तहतस्सरा तक उन हिस्सों को उस बन्दे के नेकियों वाले पलड़े में रखेगा।[3]

चौथी निय्यत

मस्जिद जाने वाला अपने मौला तआ़ला के घर जल्दी जाने, अज़ान के जवाब (या'नी जमाअ़त के लिये मस्जिद पहुंचने) में तेज़ी और ह़क़्क़े गुलामी की अदाएगी के लिये सबक़त ले जाने की निय्यत करे ताकि उसे बहुत सा अज्रो सवाब ह़ासिल हो क्यूंकि ऐसा नहीं है कि बुलावे से पहले आने वाला मुलाक़ात करने वाला नहीं होता।

---

1 ....इस मक़ाम पर तिरमिज़ी में मौजूद अल्फ़ाज़ के मुत़ाबिक़ तर्जमा दिया गया है। (अज़ इ़ल्मिय्या)

2 ...ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ ص، ۵/ ۱۵۸، حدیث: ۳۲۴۴

3 ...علم القلوب، باب نیۃ الاختلاف فی المسجد، ص۱۸۸

अल्लाह तबारक व तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

سَابِقُوْۤا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ

(پ۲۷،الحدید:۲۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *बढ़ कर चलो अपने रब की बख़्शिश (की त़रफ़) ।*

इस आयते त़य्यिबा की तफ़्सीर में एक क़ौल येह भी है : या'नी मसाजिद की त़रफ़ बढ़ कर चलो (सबक़त करो) क्यूंकि मस्जिदों में तुम्हें अपने रब तआ़ला की बख़्शिश ह़ासिल होगी ।(1)

एक मक़ूला है : "तुम हरगिज़ बुरे ग़ुलाम की त़रह़ न बनना जो अपने आक़ा के पास सिर्फ़ बुलाने पर ही आता है ।" पस तुम नमाज़ के लिये बुलावे से पहले पहुंच जाओ ।(2)

अच्छे और बुरे उम्मती

एक रिवायत में है कि वोह उम्मती बुरे हैं जो (नमाज़ के लिये) इक़ामत का इन्तिज़ार करते हैं और वोह उम्मती अच्छे हैं जो अज़ान से पहले ही नमाज़ के लिये ह़ाज़िर हो जाते हैं ।(3)

नमाज़ का एह़तिराम

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हम से बातें कर रहे होते और हम में से किसी की त़रह़ घर में काम कर रहे होते, पस जैसे ही अज़ान सुनते तो यूं खड़े हो जाते गोया हमें जानते ही न हों और येह नमाज़ के एह़तिराम में मश्ग़ूलिय्यत की वज्ह से होता ।(4)

1 ...علم القلوب،باب نیة الاختلاف فی المسجد،ص۱۸۹

2 ...علم القلوب،باب نیة الاختلاف فی المسجد،ص۱۸۹

3 ...علم القلوب،باب نیة الاختلاف فی المسجد،ص۱۸۹

4 ...احیاء العلوم، کتاب اسرار الصلاة ومهماتها، الباب الاول فی فضائل الصلاة...الخ،۱/ ۲۰۵

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : जिस ने "حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ" की पुकार सुनी और बिग़ैर किसी उ़ज़्र के जमाअ़त के लिये ह़ाज़िर न हुवा उस की नमाज़ क़बूल नहीं होगी[1]।[2]

नमाज़ियों का जन्नत में दाख़िला

मन्क़ूल है कि क़ियामत के दिन मुख़्तलिफ़ नमाज़ियों को गुरौह दर गुरौह जन्नत की त़रफ़ लाया जाएगा। पहला गुरौह जब आएगा तो उन के चेहरे इन्तिहाई चमकदार सितारों जैसे होंगे, फ़िरिश्ते उन से मिल कर पूछेंगे : तुम कौन हो ? वोह कहेंगे : हम नमाज़ी हैं। वोह पूछेंगे : तुम्हारी नमाज़ का क्या ह़ाल था ? वोह कहेंगे : हम अज़ान सुनते ही वुज़ू कर लेते थे और किसी दूसरे काम में मश्ग़ूल नहीं होते थे। फ़िरिश्ते कहेंगे : तुम इसी के मुस्तह़िक़ हो। फिर दूसरा गुरौह आएगा जिन का ह़ुस्नो जमाल पहले गुरौह से बढ़ कर होगा, उन के चेहरे चौदहवीं के चांद की मानिन्द चमकते होंगे, फ़िरिश्ते पूछेंगे : तुम कौन हो ? वोह कहेंगे : हम नमाज़ पढ़ने वाले हैं। वोह पूछेंगे : तुम्हारी नमाज़ का क्या ह़ाल था ? तो वोह कहेंगे : हम नमाज़ का वक़्त शुरूअ़ होने से पहले ही नमाज़ के लिये वुज़ू कर लिया करते थे। फ़िरिश्ते कहेंगे : तुम इसी के मुस्तह़िक़ हो। फिर तीसरा गुरौह आएगा जो ह़ुस्नो जमाल में दूसरे

---

1 ....(मुराद येह है कि) "उस की नमाज़ क़बूल नहीं या कामिल नहीं इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि मस्जिद की ह़ाज़िरी वहां तक कि लोगों पर वाजिब है जहां तक अज़ान की आवाज़ पहुंचे, इस के मा सिवा से मस्जिद में आना भी बड़ी आ'ला इ़बादत है। येह अह़काम जब हैं जब वहां का इमाम बद मज़हब न हो। (नीज़) अज़ान की आवाज़ पहुंचने से मुराद आज कल के लाऊडस्पीकर की आवाज़ नहीं (कि) येह दो दो मील तक पहुंच जाती है।"

(मिरआतुल मनाजीह़, 2 / 169, 178, मुल्तक़त़न)

2 ...ترمذی، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فیمن یسمع النداء فلا یجیب، ۱/ ۲۵۷، حدیث: ۲۱۷، بتغیر قلیل

गुरौह से भी बढ़ कर होंगे और उन के चेहरे आफ़्ताब की त़रह़ रोशन होंगे। फ़िरिश्ते पूछेंगे : तुम्हारे चेहरे सब से ह़सीन हैं, तुम्हारा मक़ाम सब से आ'ला और तुम्हारा नूर सब से बढ़ कर है, तुम कौन हो ? तो वोह कहेंगे : हम नमाज़ी हैं। वोह पूछेंगे : तुम्हारी नमाज़ कैसी थी ? जवाब देंगे : जिस वक़्त हमें अज़ान सुनाई देती थी हम पहले ही से मस्जिद में मौजूद होते थे। फ़िरिश्ते कहेंगे : तुम इसी के मुस्तह़िक़ हो।[1]

फ़िरिश्ते ख़ुश नसीबों के नाम लिखते हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ज़मीन में **अल्लाह** तआ़ला के कुछ सियाह़त करने वाले फ़िरिश्ते हैं जिन के साथ झन्डे होते हैं, वोह इन झन्डों को मसाजिद के दरवाज़ों पर गाड़ देते हैं और वोह मस्जिद में आने वालों के नाम लिखते हैं कि कौन पहले आया और कौन बा'द में।[2]

पांचवीं निय्यत

मस्जिद जाने वाला **अल्लाह** तआ़ला को वोह अमानत पहुंचाने की निय्यत करे जिसे **अल्लाह** करीम عَزَّوَجَلَّ ने उस पर ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام की पुश्त से निकालते वक़्त लाज़िम फ़रमाया था और उस ने इस पर गवाही भी दी थी। लिहाज़ा वोह इस फ़र्ज़ की अदाएगी **अल्लाह** तआ़ला की महबूब तरीन जगहों में करे और वोह मस्जिदें हैं।

अ़ज़ाब से छुटकारा

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि मेरा बन्दा मेरी त़रफ़

---

1 ...قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام...الخ، ۲/ ۱۶۸

2 ...مسند احمد، مسند علی بن ابی طالب، ۱/ ۲۰۱، حدیث: ۷۱۹، بتغیر قلیل، عن علی

से फ़र्ज़ किये गए अ़मल को बजा ला कर ही मुझ (या'नी मेरे अ़ज़ाब) से बच सकेगा।[1]

क़ुर्बे इलाही कैसे हासिल हो ?

एक रिवायत में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मेरा क़ुर्ब चाहने वाले फ़राइ़ज़ की अदाएगी की मिस्ल किसी और अ़मल से मेरा क़ुर्ब नहीं पा सकते।[2]

अ़ज़ीम अमानत की अदाएगी का वक़्त

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم जब नमाज़ के लिये अज़ान की आवाज़ सुनते तो आप का रंग मुतग़य्यर हो जाता और जिस्म पर कपकपी त़ारी हो जाती। आप से इस बारे में अ़र्ज़ की जाती तो फ़रमाते : उस अ़ज़ीम अमानत की अदाएगी का वक़्त आ गया जिसे **अल्लाह** तआ़ला ने ज़मीन और आस्मानों पर पेश किया तो उन्हों ने इस के उठाने से इन्कार कर दिया और डर गए मगर इन्सान ने इसे उठा लिया बेशक येह अपनी जान को मशक़्क़त में डालने वाला और अमानत की क़द्र से ना वाक़िफ़ है तो अब हम नहीं जानते कि इसे कमा ह़क़्क़ुहू अदा कर सकेंगे या नहीं।[3]

नमाज़ के वक़्त फ़िरिश्तों की पुकार

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाया करते थे : जब भी नमाज़ का वक़्त आता है तो फ़िरिश्ते यूं पुकारते

1 ...قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام...الخ، ۲/ ۱۷۰

2 ...مسند بزار، ما روی شریک بن ابی نمر عن عطا، ۱۵/ ۲۷۰، حدیث: ۸۷۵۰

3 ...تنبیہ الغافلین، باب اتمام الصلاۃ والخشوع فیھا، ص ۲۹۱

हैं : ऐ मुसलमानों के गुरौह ! उस आग की त़रफ़ उठो जिसे तुम ने अपनी जानों के लिये भड़का रखा है पस उसे नमाज़ के ज़रीए़ बुझा दो।[1]

मन्कू़ल है कि जब मुअज़्ज़िन अज़ान देता है तो तमाम चौपाये और परिन्दे अपने कानों को उस की जानिब लगा देते हैं और इन्सानों और जिन्नात के इ़लावा हर शै उस के लिये आ़जिज़ी व इन्किसारी करती है।[2]

सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और नमाज़

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَهُ الْکَرِیْم जब नमाज़ शुरूअ़ फ़रमाते तो आप पर कपकपी और ख़ौफ़ त़ारी हो जाता। जब इस बारे में आप से अ़र्ज़ की जाती तो फ़रमाते : येह **अल्लाह** तआ़ला के फ़राइज़ में से एक फ़र्ज़ है, मैं नहीं जानता कि येह मुझ से क़बूल किया जाएगा या मेरे मुंह पर मार दिया जाएगा।[3]

छटी निय्यत

मस्जिद जाने वाला अपनी नमाज़ से मस्जिद को आबाद करने की निय्यत करे ताकि वोह उन में से हो जाए जिन के ईमान की **अल्लाह** तआ़ला ने गवाही दी और जिन इन्आ़मात का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वा'दा फ़रमाया है उन के हुसूल की निय्यत करे, यूं वोह अल्लाह वालों और उस के ख़ास बन्दों में से हो जाएगा। जैसा कि

कामिल मोमिन की अ़लामत

हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नबुव्वत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम किसी शख़्स को मस्जिद आता जाता देखो तो उस के ईमान की

1 ...علم القلوب، باب نیة الاختلاف فی المسجد، ص ۱۹۰

2 ...علم القلوب، باب نیة الاختلاف فی المسجد، ص ۱۹۰

3 ...علم القلوب، باب نیة الاختلاف فی المسجد، ص ۱۹۰

गवाही दो।[1] क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

(پ۱۰، التوبۃ:۱۸)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** की मस्जिदें वोही आबाद करते हैं जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान लाते (हैं)।*

अल्लाह वाले

रसूले मुकर्रम, नबिय्ये मोहतरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के घरों को आबाद करने वाले ही अल्लाह वाले हैं।[2]

नूर में डूबे हुए

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि बरोज़े क़ियामत एक पुकारने वाला पुकारेगा : सूरज की रिआ़यत करने वाले कहां हैं ? उस वक़्त मुअज़्ज़िनीन को लाया जाएगा फिर पुकारा जाएगा : मेरे पड़ोसी कहां हैं ? तो फ़िरिश्ते कहेंगे : कौन है जो पड़ोसी हो सके ? फ़रमाया जाएगा : मेरी मस्जिदों को आबाद करने वाले कहां हैं ? तो वोह नूर में डूबे हुए आएंगे और नूर के मिम्बरों पर बैठेंगे।[3]

मसाजिद आबाद करने वालों का मक़ामो मर्तबा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद

1...ترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء فی حرمۃ الصلاۃ، ۴/ ۲۸۰، حدیث: ۲۶۲۶

2...مسند طیالسی، ثابت البنانی عن انس بن مالک، ص ۲۷۲، حدیث: ۲۰۴۱، مساجد بدلہ بیوت

3...تنبیہ الغافلین، باب فضل الاذان والاقامۃ، ص ۱۵۹، حدیث: ۳۹۶، بتغیر قلیل

الجامع فی الحدیث، باب الاخاء فی اللّٰہ، ۱/ ۳۲۱، حدیث: ۲۲۰، بتغیر قلیل

फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि मैं अपनी मख़्लूक़ को अ़ज़ाब देने का इरादा करता हूं मगर जब अपने घरों (मस्जिदों) को आबाद करने वालों, मेरी ख़ातिर बाहम महब्बत करने वालों और सह़र के वक़्त इस्तिग़फ़ार करने वालों को देखता हूं तो उन से अपना अ़ज़ाब रोक लेता हूं।[1]

एक रिवायत में है : जब मैं मस्जिदों को मेरे ज़िक्र से आबाद करने वालों, क़ुरआने करीम की तिलावत करने वालों और मुसलमान बच्चों को देखता हूं तो उस वक़्त मेरा ग़ज़ब रुक जाता है।[2]

एक रिवायत में है : मैं जब मेरी ख़ातिर भूक प्यास इख़्तियार करने वालों को देखता हूं तो उन से अपना अ़ज़ाब फेर लेता हूं।[3]

सातवीं निय्यत

मस्जिद जाने वाला اَمْرٌ بِالْمَعْرُوْف और نَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَر (या'नी नेकी की दा'वत देने और बुराई से मन्अ़ करने) की निय्यत करे ताकि अल्लाह तआ़ला के उन ख़ास बन्दों में से हो जाए जिन्हों ने रिज़ाए इलाही की त़लब में अपनी जानें बेच दीं तो बरोज़े क़ियामत उन के पास अल्लाह करीम की त़रफ़ से ख़ुश ख़बरी आएगी। जैसा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَلْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾

(پ۱۱، التوبۃ: ۱۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : भलाई के बताने वाले और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की ह़दें निगाह रखने वाले और ख़ुशी सुनाओ मुसलमानों को।

---

1 ...شعب الایمان، باب فی الصلوات، فصل المشی الی المساجد، ۳/ ۸۲، حدیث: ۲۹۴۶

2 ...الزھد لاحمد، بقیۃ زھد عیسی علیہ السلام، ص ۱۲۹، رقم: ۵۰۰، بتغیر قلیل

3 ...التبصرۃ لابن جوزی، المجلس الثالث فی ذکر الارض وعجائبھا، ۲/ ۱۹۶

मस्जिद में नेकी की दा'वत देने के मवाक़ेअ़

जब बन्दा मस्जिद में अपने मुसलमान भाइयों को सफ़ों की दुरुस्ती, रुकूअ़ व सुजूद को पूरा करने, पहली सफ़ की त़रफ़ बढ़ने, जूते दरवाज़ए मस्जिद पर उतारने और क़ियाम में दायां हाथ बाएं हाथ पर रखने वग़ैरा बातों का हुक्म देता है और यूं ही जब वोह इन्हें नमाज़ में इधर उधर देखने, क़िराअत में आवाज़ बुलन्द करने, ख़ुशूअ़ तर्क करने, लोगों की गर्दनें फलांगने, मस्जिद में गुमशुदा चीज़ तलाश करने, दुन्या की बातें करने, हंसी मिज़ाह़ करने, फ़ुज़ूल गोई करने, मज़ाक़ उड़ाने, ख़रीदो फ़रोख़्त और झगड़े वग़ैरा से मन्अ़ करता है तो वोह नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वालों के हिस्सों से वाफ़िर हिस्सा पा लेता है।

मसाजिद को इन कामों से बचाओ

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि मुअ़ल्लिमे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मिम्बर शरीफ़ पर इरशाद फ़रमाया : अपनी मसाजिद को बच्चों, पागलों, झगड़ों, आवाज़ें बुलन्द करने, तलवारें खींचने और हुदूद क़ाइम करने से बचाओ और हर जुमुआ़ को इन में ख़ुश्बू सुलगाया करो।[1]

नीज़ हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस्जिद में गुमशुदा शै का ए'लान करने और इस में (ख़िलाफ़े शरअ़) शे'र पढ़ने से मन्अ़ फ़रमाया है[2] और कोई गुमशुदा चीज़ का ए'लान करे तो सुनने वाले को

1...ابن ماجہ، کتاب المساجد، باب مایکرہ فی المساجد، ۱/ ۴۱۵، حدیث: ۷۵۰

2...ابن ماجہ، کتاب المساجد، باب النہی عن انشاد الضال فی المسجد، ۱/ ۴۲۳، حدیث: ۷۶۶

हुक्म दिया कि वोह यूं कहे : "अल्लाह तआ़ला तुझे वोह चीज़ न मिलाए।"[1] और शे'र पढ़ने वाले से यूं कहने का हुक्म दिया : अल्लाह तआ़ला तेरे दांत गिराए, तू ठीक त़रह़ से बोल न सके[2]।[3]

ह़िकायत : ऐ सांप के बच्चो !

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام लोगों के एक गुरौह के पास आए जो मस्जिद में ख़रीदो फ़रोख़्त कर रहे थे तो आप ने अपनी चादर को बल दिये और उन्हें उस से मारते हुए फ़रमाने लगे : ऐ सांप के बच्चो ! तुम ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मस्जिदों को बाज़ार बना लिया, येह तो आख़िरत के बाज़ार हैं।[4]

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को उन से कोई काम नहीं

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इन मसाजिद की ह़िफ़ाज़त वोही शख़्स करता है जिस से अल्लाह तआ़ला राज़ी हो और जिस से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ राज़ी हो गया

---

1 ...مسند بزار، محمد بن عبد الرحمٰن بن ثوبان عن ابی ھریرۃ، ۱۵/ ۴۷، حدیث: ۸۲۶۰

2 ....(यहां) अश्आ़र से मुराद बुरे या इ़श्क़िया (ख़िलाफ़े शरअ़) अश्आ़र हैं। ह़म्दे इलाही, ना'ते मुस्त़फ़वी, मनाक़िबे औलिया, पन्दो नसीह़त, कुफ़्फ़ार की बुराइयों के अश्आ़र पढ़ना जाइ़ज़ बल्कि सुन्नते सह़ाबा है। लिहाज़ा येह ह़दीस इस के ख़िलाफ़ नहीं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मस्जिद में ह़ज़रते ह़स्सान (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के लिये मिम्बर बिछवाते जिस पर आप खड़े हो कर हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की ना'त और काफ़िरों की हजू (मज़म्मत) के अश्आ़र पढ़ते और हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) दुआएं देते। नीज़ ह़ज़रते ह़स्सान और का'ब बिन ज़ुहैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) मस्जिदे नबवी में हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के सामने ना'त ख़्वानी किया करते थे।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1 / 451)

3 ...معجم کبیر، ۲/ ۱۰۳، حدیث: ۱۴۵۴

4 ...تفسیر قرطبی، پ۱۸، النور، تحت الآیۃ: ۳۶، ۱۲/ ۲۰۷

उस के लिये जन्नत है[1] और अ़न क़रीब लोगों पर ऐसा ज़माना आएगा कि वोह मस्जिदों में तो जाया करेंगे मगर उन का मक़्सद सिर्फ़ दुन्या की बातें होगा लिहाज़ा जब वोह ज़माना आए तो तुम ऐसे लोगों के साथ मत बैठना क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उन से कोई काम नहीं ।[2]

मसाजिद की ता'मीर का मक़्सद

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुछ लोगों को मस्जिद में कारोबार की बातें करते सुना तो फ़रमाया : येह मस्जिदें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र के लिये बनाई गई हैं, अगर तुम्हें अपनी तिजारत की या दुन्या की बातें करनी हों तो बक़ीअ़ की त़रफ़ निकल जाओ ।[3]

आठवीं निय्यत

मस्जिद जाने वाला दुन्या से आख़िरत, ख़्वाहिश की तिजारत से तक़्वा की तिजारत, ख़सारे वाले बाज़ार से रह़मतो रिज़्वान के बाज़ार और दुन्यवी दोस्तों से उख़रवी दोस्तों की त़रफ़ जल्द जाने की निय्यत करे । **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ ؕ (پ۲۷، الذّٰریٰت:۵۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो* ***अल्लाह*** *की त़रफ़ भागो ।*

नीज़ इरशादे बारी तआ़ला है :

---

❶...علم القلوب، باب نية الاختلاف فی المسجد، ص ۱۹۲

❷...مستدرک، کتاب الرقاق، باب من استحيى من اللّٰہ حق...الخ، ۵/ ۴۲۱، حدیث: ۷۹۸۶، بتغیر قلیل

❸...تاریخ مدینة لابن شبة، باب ما کرہ من رفع الصوت...الخ، ۱/ ۳۴

وَمَنۡ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ (پ۴، اٰلِ عمرٰن:۹۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो इस में आए अमान में हो ।*

ख़त़रात और हलाकतों से मह़फ़ूज़ कौन ?

बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस की तफ़्सीर में फ़रमाया : यहां मुराद मस्जिदें हैं । एक क़ौल के मुत़ाबिक़ इस से मुराद मक्का और ह़रम शरीफ़ है । एक क़ौल येह है कि इस से मुराद जन्नत है और बन्दा ख़त़रात और हलाकतों से उस वक़्त तक नजात नहीं पा सकेगा जब तक जन्नत में न पहुंच जाए ।(1)

बेहतरीन जगहें और बेहतरीन लोग

हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : सब से बेहतरीन जगहें मस्जिदें हैं और सब से बेहतरीन लोग इन्हें आबाद करने वाले वोह बन्दे हैं जो मस्जिदों में दाख़िल सब से पहले होते हैं और निकलते सब से आख़िर में हैं ।(2)

इब्लीस के फ़ितने से मह़फ़ूज़

बा'ज़ उ़लमाए किराम ने इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

وَمَنۡ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ (پ۴، اٰلِ عمرٰن:۹۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और जो इस में आए अमान में हो ।*

की तफ़्सीर में फ़रमाया : एक क़ौल के मुत़ाबिक़ यहां मुराद मस्जिदें हैं कि जो इन में दाख़िल हो जाता है वोह इब्लीस और उस के लश्कर के

❶...علم القلوب، باب نیۃ الاختلاف فی المسجد، ص ۱۹۳

❷...العظمۃ، ذکر حجب ربنا تبارک وتعالٰی، ص ۱۰۴، حدیث: ۲۶۹

फ़ितने से मह़फ़ूज़ हो जाता है और वोह अब उस बन्दे को गुनाह में मुब्तला कर के हलाकत में नहीं डाल सकते और बन्दे के मस्जिद में दाख़िले के बा'द ला'नती शैत़ान वस्वसा डालने के इ़लावा कुछ नहीं कर पाता।(1)

लिहाज़ा बन्दा अगर इन सब को दूर कर के जल्द मस्जिद पहुंच जाए तो उसे बड़ी कामयाबी ह़ासिल हो जाएगी।

मोमिन को शैत़ान से बचाने वाले क़ल्ए

मन्क़ूल है कि मोमिन को शैत़ान से बचाने वाले चार क़ल्ए हैं : (1) मस्जिदें (2) ग़ौरो फ़िक्र के साथ तिलावते क़ुरआने करीम (3) नमाज़ (4) दुन्या से बे रग़बत आ़लिम के चेहरे की ज़ियारत। ब वक़्ते वस्वसा सब से बेहतर इ़लाज ग़ौरो फ़िक्र के साथ तिलावत करना है क्यूंकि ग़ौरो फ़िक्र के बिग़ैर कुछ पढ़ना ज़ियादा मुफ़ीद नहीं होता।

किसी दाना (अ़क़्ल मन्द) का क़ौल है कि जब बन्दा मस्जिद से निकल कर अपना पाउं बाहर की ज़मीन पर रखता है तो दुन्या की ह़लावत उस के जिस्म में मौजूद 360 रगों में फैल जाती है जैसा कि सांप के डसने पर जिस्म में ज़हर फैल जाता है। येह बात कोई मा'रिफ़ते इलाही रखने वाला ही तुम पर वाज़ेह़ कर सकता है।(2)

मस्जिद जाने की निय्यतों का ख़ुलासा

(1).....मैं रब्बे जलील से उस के घर में मुलाक़ात करूंगा। (2)....वोह अ़ह्द ह़ासिल करूंगा जिस की बदौलत बारगाहे इलाही में बुज़ुर्गी और

❶...علم القلوب، باب نیۃ الاختلاف فی المسجد، ص ۱۹۳

❷...علم القلوب، باب نیۃ الاختلاف فی المسجد، ص ۱۹۳

शफ़ाअ़त करने वाला हो जाऊं। (3)....जिस इज़ाफ़ी इन्आ़म पर आख़िरत में अहले जन्नत ह़सरत करेंगे उसे ह़ासिल करूंगा। (4)....अपने मौला तआ़ला के घर जल्दी जाने, अज़ान के जवाब में तेज़ी और ह़क़्क़े ग़ुलामी की अदाएगी के लिये सबक़त ले जाने की कोशिश करूंगा। (5)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पुश्त से निकालते वक़्त जो अमानत लाज़िम की थी वोह उस तक पहुंचाऊंगा। (6)....अपनी नमाज़ से मस्जिद आबाद करूंगा (ताकि उन लोगों में से हो जाऊं जिन के ईमान की **अल्लाह** तआ़ला ने गवाही दी और जिन इन्आ़मात का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वा'दा फ़रमाया है उन के ह़ुसूल की निय्यत करे, यूं वोह अल्लाह वालों और उस के ख़ास बन्दों में से हो जाएगा।) (7)....नेकी की दा'वत दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा (ताकि **अल्लाह** तआ़ला के उन ख़ास बन्दों में से हो जाऊं जिन्हों ने रिज़ाए इलाही की त़लब में अपनी जानें बेच दीं।) (8)....दुन्या से आख़िरत और नफ़्सानी तिजारत से तक़्वा वाली तिजारत की त़रफ़ जल्द जाने की कोशिश करूंगा।

मस्जिद जाने की दुआ़

(9)....(मस्जिद की त़रफ़ जाने की दुआ़ पढ़ूंगा :)

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِیْ قَلْبِیْ نُوْرًا وَّفِیْ لِسَانِیْ

نُوْرًا وَّفِیْ سَمْعِیْ نُوْرًا وَّفِیْ بَصَرِیْ نُوْرًا وَّمِنْ فَوْقِیْ نُوْرًا وَّمِنْ تَحْتِیْ نُوْرًا وَّعَنْ یَّمِیْنِیْ نُوْرًا وَّ عَنْ شِمَالِیْ نُوْرًا وَّمِنْ اَمَامِیْ نُوْرًا وَّمِنْ خَلْفِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِیْ نَفْسِیْ نُوْرًا وَّاَعْظِمْ لِیْ نُوْرًا وَّ اجْعَلْ لِّیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْنِیْ نُوْرًا، اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِیْ عَصَبِیْ نُوْرًا وَّفِیْ لَحْمِیْ نُوْرًا وَّ فِیْ دَمِیْ نُوْرًا وَّفِیْ شَعْرِیْ نُوْرًا وَّفِیْ بَشَرِیْ نُوْرًا، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ بِحَقِّ السَّائِلِیْنَ عَلَیْكَ وَ بِحَقِّ مَمْشَایَ هٰذَا اِلَیْكَ وَبِحَقِّ الرَّاغِبِیْنَ اِلَیْكَ فَاِنِّیْ لَمْ اَخْرُجْ اَشَرًّا وَّلَا بَطَرًا وَّلَا رِیَاءً وَّلَا سُمْعَةً وَّلٰكِنْ خَرَجْتُ اِتِّقَاءَ سُخْطِكَ وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِكَ اَنْ تُدْخِلَنِیَ الْجَنَّةَ وَتُبْعِدَنِیْ عَنِ النَّارِ

या'नी : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे दिल में नूर, मेरी ज़बान में नूर, मेरी समाअ़त में नूर, मेरी बसारत में नूर, मेरे ऊपर नूर, मेरे नीचे नूर, मेरे दाएं, नूर, मेरे बाएं नूर, मेरे आगे नूर और मेरे पीछे नूर कर दे। मेरी जान में नूर कर, मेरे नूर को बढ़ा, मेरे लिये नूर कर दे और मुझे नूर बना दे। ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मुझे नूर अ़ता फ़रमा, मेरे पट्ठों में नूर, मेरे गोश्त में नूर, मेरे ख़ून में नूर, मेरे बालों में नूर और मेरी खाल में नूर कर दे।[1] ऐ मेरे मा'बूद عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से उस ह़क़ के तुफ़ैल सुवाल करता हूं जो मांगने वालों का तेरे ज़िम्मए करम पर है और तेरी त़रफ़ अपने इस चलने के ह़क़ और तेरी त़रफ़ रग़बत करने वालों के ह़क़ के तुफ़ैल तुझ से सुवाल करता हूं, मैं फ़साद व तकब्बुर और रियाकारी के लिये नहीं निकला और न ही इस लिये कि लोग सुन कर अच्छा जानें, बल्कि मैं तो तेरी नाराज़ी से बचने और तेरी ख़ुश्नूदी के ह़ुसूल के लिये निकला हूं कि तू मुझे जन्नत में दाख़िल फ़रमाना और जहन्नम से दूर रखना।[2]

मस्जिद में दाख़िले की दुआ़

(10)....(मस्जिद में दाख़िल होने की दुआ़ पढ़ूंगा :)

اَعُوْذُبِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

या'नी : मैं अ़ज़मत वाले अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की करीम ज़ात और उस की

1...مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین، باب الدعاء فی صلاۃ اللیل وقیامہ، ص ۳۰۰ تا ۳۰۲، حدیث: ۱۷۸۸، ۱۷۹۴، ۱۷۹۷، ۱۷۹۹

مشکاۃ المصابیح، کتاب الصلاۃ، باب صلاۃ اللیل، ۱/ ۲۳۵، حدیث: ۱۱۹۵

2...ابن ماجہ، کتاب المساجد، باب المشی الی الصلاۃ، ۱/ ۴۲۸، حدیث: ۷۷۸

हमेशा वाली सल्तनत की पनाह में आता हूं शैतान मर्दूद से ।[1] अल्लाह के नाम से शुरूअ और अल्लाह के नाम के साथ और दुरूदो सलाम नाज़िल हो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर । ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे लिये अपनी रह़मत के दरवाज़े खोल दे ।[2]

मस्जिद में बैठने की 12 निय्यतें

मस्जिद में बैठना दीन के अफ़्ज़ल तरीन कामों, परहेज़गारों के आ'माल और नेकूकारों के बुलन्द दरजात में से है और इस पर मुख़्लिस मोमिन ही कारबन्द रहते हैं । जैसा कि

मोमिनीन के बाग़ात

मरवी है कि "मसाजिद मोमिनों के बाग़ात हैं और मुनाफ़िक़ मस्जिद में ऐसे होता है जैसे पिन्जरे में परिन्दा क़ैद होता है ।"[3]

और जैसा कि किसी अ़क़्ल मन्द ने फ़रमाया : ख़ल्वत नशीनी में सब्र करना इख़्लास वालों की ख़ूबियों में से है और येह राहे रास्त पर क़ाइम रहने की निशानी है ।[4]

बन्दए मोमिन को चाहिये कि जब वोह मस्जिद में बैठे तो इस बैठने में 12 मुस्तह़ब निय्यतें कर ले ताकि उस के लिये हर निय्यत के इ़वज़ भरपूर अज्र लिखा जाए और उसे अ़ज़ीम सवाब अ़ता किया जाए और वोह इस के ज़रीए़ बड़ी कामयाबी ह़ासिल कर ले क्यूंकि आ'माल का मदार निय्यतों पर है और हर शख़्स को वोही मिलेगा जिस की उस ने निय्यत की होगी ।

---

1 ...ابو داود، کتاب الصلاۃ، باب فیما یقولہ الرجل عند دخولہ المسجد، ۱/ ۱۹۹، حدیث: ۴۶۶

2 ...ابن ماجہ، کتاب المساجد، باب الدعاء عند دخول المسجد، ۱/ ۴۲۵، حدیث: ۷۷۱، بتغیر قلیل

3 ...علم القلوب، باب النیۃ فی جلوس العبد فی المساجد والقعود فیھا، ص ۱۹۴

4 ...علم القلوب، باب النیۃ فی جلوس العبد فی المساجد والقعود فیھا، ص ۱۹۴

पहली निय्यत

मस्जिद में बैठने वाला निय्यत करे कि वोह जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ेगा और जमाअ़त की हिफ़ाज़त करेगा यूं उसे अज्रो सवाब बढ़ कर मिलेगा जैसा कि

बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आदमी का जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ना अकेले नमाज़ पढ़ने से 27 दरजे ज़ियादा अज्र रखता है।"(1)

लिहाज़ा बन्दा मस्जिद में बैठने की बदौलत इस ज़ाइद सवाब के हुसूल की निय्यत कर ले।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बयान करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मिम्बरे अत़हर पर ख़ुत्बा दिया और येह आप का आख़िरी ख़ुत्बा था, इरशाद फ़रमाया : ऐ लोगो ! जिस ने पांचों नमाज़ों को उन के वक़्त में बा जमाअ़त अदा किया वोह साबिक़ीन के साथ पहले गुरौह में पुल सिरात़ से चमकती बिजली की त़रह़ गुज़र जाएगा और वोह क़ियामत में आएगा तो उस का चेहरा चौदहवीं के चांद की त़रह़ चमकता होगा और उसे हर दिन के इ़वज़ जिस में उस ने जमाअ़त की हिफ़ाज़त की होगी राहे ख़ुदा में शहीद होने वाले का अज्र दिया जाएगा।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : हम तौरैत शरीफ़ में येह लिखा हुवा पाते हैं कि जमाअ़त में बन्दे की नमाज़ का सवाब ह़ाज़िरीन की ता'दाद के बराबर बढ़ जाता है, अगर वोह एक हज़ार हों तो एक हज़ार दरजे अज्र ज़ियादा हो जाता है।(3)

1...بخاری، کتاب الاذان، باب فضل صلاۃ جماعۃ، ۱/ ۲۳۲، حدیث: ۶۴۵، مفہوماً

2...مسند حارث، کتاب الصلاۃ، باب فی خطبۃ قد کذبہا... الخ، ۱/ ۳۱۹، حدیث: ۲۰۵، مفہوماً

3...فتح الباری لابن رجب، کتاب الاذان، باب فضل صلاۃ الجماعۃ، ۶/ ۱۹، تحت الحدیث: ۶۴۷، بتغیر قلیل

बा जमाअ़त नमाज़ में चार ख़ूबियां हैं

हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने में चार ख़ूबियां हैं : (1)....सुन्नत का इत्तिबाअ़ (2)....सवाब की ज़ियादती (3).....सह्व (भूल) से बचाव और (4)....रियाकारी से छुटकारा।[1]

दूसरी निय्यत

मस्जिद में बैठने वाला रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुवाफ़क़त की निय्यत करे जैसा कि मरवी है : "बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने तुम्हारे नबी के लिये सुनने हुदा मुक़र्रर फ़रमाई हैं और सुनने हुदा पर इक्तिफ़ा फ़रमाया है, अगर तुम अपने घरों में नमाज़ पढ़ोगे जैसा कि येह पीछे रह जाने वाला पढ़ता है तो तुम ज़रूर अपने नबी की सुन्नत छोड़ने वाले होगे और लाज़िमी गुमराह हो जाओगे।"[2]

सुन्नत पर अ़मल का सवाब

हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने मेरी सुन्नतों में से एक सुन्नत को ज़िन्दा किया मैं बरोज़े क़ियामत उस की शफ़ाअ़त करूंगा।[3]

तर्के सुन्नत का वबाल

हुज़ूर रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि मदीनए मुनव्वरा का एक फ़िरिश्ता रोज़ाना यूं पुकारता है : जिस ने

---

1 ...علم القلوب، باب النية فی جلوس العبد فی المساجد و القعود فیها، ص ۱۹۴

2 ...مسلم، کتاب المساجد، باب صلاة الجماعة من سنن الھدی، ص ۲۵۷، حدیث: ۱۴۸۸، قول: ابن مسعود

3 ...ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی الاخذ بالسنة... الخ، ۴/ ۳۰۹، حدیث: ۲۶۸۷، دون قوله شفیعه یوم القیامة

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत छोड़ी वोह क़ियामत के दिन उन की शफ़ाअ़त से महरूम रहेगा।[1]

तीसरी निय्यत

मस्जिद में बैठने वाला मुसलमानों के मजमअ़ में इज़ाफ़े की निय्यत करे ताकि उसे बड़ा फ़ज़्ल हासिल हो और वोह भी उन्ही में से एक फ़र्द शुमार हो और येह कि वोह मुन्तख़ब बन्दों में से हो जाए। जैसा कि रसूले मुकर्रम, नबिय्ये मोहतरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ كَثَّرَ سَوَادَ قَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ या'नी जो किसी क़ौम का मजमअ़ बढ़ाए वोह उन्ही में से है।[2]

यूं ही हुज़ूर इमामुल अम्बियाए वल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम पर मुसलमानों के बड़े गुरौह के साथ रहना लाज़िम है क्यूंकि भेड़िया रेवड़ से अलग और भागी हुई भेड़ को ही पकड़ता है।[3]

ख़ुशबख़्तों की मजलिस

एक रिवायत में है : मसाजिद में ज़िक्र की मजालिस वालों के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! هُمُ الْقَوْمُ لَا يَشْقٰى بِهِمْ جَلِيْسُهُمْ या'नी येह वोह लोग हैं जिन के साथ बैठने वाला भी बद बख़्त नहीं रहता।[4]

---

1 ...فضائل بیت المقدس، باب فی قول الملائکۃ الموکلین بالمساجد الثلاثۃ، ص۴۶، بتغیر قلیل

2 ...الزھد لابن مبارک، نعیم بن حماد فی نسختہ زائدا، باب استماع اللھو، ص۱۲، حدیث: ۴۲

3 ...ابن ماجہ، کتاب الفتن، باب السواد الاعظم، ۴/ ۳۲۷، حدیث: ۳۹۵۰، دون قولہ فان الذئب... الخ

نسائی، کتاب الامامۃ، باب التشدید فی ترک الجماعۃ، ص۱۴۷، حدیث: ۸۴۴، بتغیر قلیل

4 ...مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل مجالس الذکر، ص۱۱۰۸، حدیث: ۶۸۳۹، بتغیر قلیل

चौथी निय्यत

मस्जिद में बैठने वाला एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ के इन्तिज़ार के लिये वहां जमे रहने की निय्यत करे जैसा कि दर्जे ज़ैल फ़रमाने बारी तआ़ला की तफ़्सीर में मन्क़ूल है। चुनान्चे,

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۟ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝۲۰۰

(پ۴، اٰلِ عمرٰن: ۲۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो सब्र करो और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और सरहद पर इस्लामी मुल्क की निगहबानी करो और* **अल्लाह** *से डरते रहो इस उम्मीद पर कि कामयाब हो।*

एक क़ौल के मुताबिक़ इस आयत में मज़कूर लफ़्ज़ "رَابِطُوْا" से मुराद मस्जिदों में एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ के इन्तिज़ार के लिये जमे रहना है।[1]

ख़ताएं मुआ़फ़ और दरजात बुलन्द हों

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें उस चीज़ के बारे में न बताऊं जिस के सबब **अल्लाह** करीम ख़ताओं को मुआ़फ़ फ़रमाता और दरजात को बुलन्द फ़रमाता है। हज़राते सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं ! ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم। इरशाद फ़रमाया : मसाजिद की त़रफ़ कसरत से जाना, मशक़्क़त के वक़्त वुज़ू करना और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना पस येही निगहबानी है, येही निगहबानी है।[2]

---

1 ...علم القلوب، باب النية فى جلوس العبد فى المساجد والقعود فيها، ص ۱۹۵

2 ...مسلم، كتاب الطهارة، باب فضل اسباغ الوضوء على المكاره، ص ۱۲۳، حديث: ۵۸۷، بتغير قليل

बड़ी निगहबानी

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करने वाला उस शहसुवार की त़रह़ है जिस ने राहे खुदा में अपने क़रीब घोड़ा बांध रखा हो, वोह जब तक कोई बात न करे या खड़ा न हो जाए आस्मानों के फ़िरिश्ते उस पर दुरूद (रह़मत) भेजते रहते हैं और येह बड़ी निगहबानी में मश्ग़ूल है।[1]

पांचवीं निय्यत

मस्जिद में बैठने वाला अपने कान, आंखों, ज़बान और दीगर आ'ज़ा को ममनूआ़ चीज़ों से बचाने की निय्यत करे और मस्जिद में बैठने से रुहबानिय्यत (इबादत व रियाज़त में मुबालग़ा करने और लोगों से दूर रहने) की निय्यत करे। जैसा कि

इस उम्मत की रुहबानिय्यत

ह़दीस शरीफ़ में आया है कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरा नफ़्स मुझे जिस चीज़ की त़रफ़ बुलाता है और जिस बात का हुक्म देता है उस की वज्ह से ज़मीन मेरे लिये तंग हो गई है। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम्हारा नफ़्स तुम्हें किस बात का हुक्म देता है ? अ़र्ज़ की : येह मुझे रुहबानिय्यत (सब से अलग थलग रहने) का हुक्म देता है। तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ उ़स्मान ! इस बात को

[1] ...مسند احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/ ۲۶۷، حدیث: ۸۶۳۳

रहने दो क्यूंकि मेरी उम्मत की रुहबानिय्यत एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना है।[1]

एक रिवायत में यूं है कि हज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन मज़ऊ़न رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के बेटे का इन्तिक़ाल हो गया तो वोह घर में बैठ रहे और अपने लिये एक कमरा मख़्सूस कर लिया और मस्जिद की ह़ाज़िरी तर्क कर दी। हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें ग़ाइब पाया तो बुलवा कर इरशाद फ़रमाया : ऐ उ़स्मान ! क्या तुम जानते हो कि बेशक अल्लाह तआ़ला ने मेरी उम्मत पर रुहबानिय्यत को ह़राम कर दिया है और मेरी उम्मत की रुहबानिय्यत मस्जिदों में बैठना है।[2]

हज़ार रक्अ़त नफ़्ल पढ़ने से अफ़्ज़ल

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : ग़ीबत का तर्क ज़ियादा पसन्दीदा है या हज़ार रक्अ़त (नफ़्ल) नमाज़ पढ़ना ? इरशाद फ़रमाया : ग़ीबत का छोड़ना हज़ार रक्अ़त नमाज़ पढ़ने से अफ़्ज़ल है।[3]

छटी निय्यत

मस्जिद में बैठने वाला बाहर निकलने तक मस्जिद में ए'तिकाफ़ की निय्यत करे।

बे शुमार सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक अ़मल ऐसा भी है जिस का सवाब शुमार से बाहर है और वोह ए'तिकाफ़

1...امالی ابن بشران، مجلس فی صفر من السنة المذکورة، ۲/ ۳۳۵، حدیث: ۱۶۳۶، بتغیر قلیل

2...معرفة الصحابة، رقم ۲۰۱۵، عثمان بن مظعون، ۳/ ۳۶۶، حدیث: ۴۹۴۱، بتغیر قلیل

3...تنبیہ الغافلین، باب النفقة علی العیال، ص۱۸۸، حدیث: ۴۸۴، الف رکعة بدلہ عشرة آلاف

है और रसूले मुकर्रम, नबिय्ये मोहतरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी 10 दिनों का ए'तिकाफ़ फ़रमाया करते थे।[1]

हिकायत : मग़्फ़िरत करवा कर ही उठूंगा

मन्क़ूल है कि एक शख़्स किसी मस्जिद में दाख़िल हुवा, वहां एक दुरवेश व नेक आदमी को ए'तिकाफ़ की हालत में देखा तो पूछा : आप इस वक़्त यहां क्यूं बैठे हैं ? उन्हों ने फ़रमाया : मुझ से घरवाले की ना फ़रमानी हो गई तो मैं ने उस के घर में बैठने को लाज़िम कर लिया और येह अ़ह्द कर लिया है कि वोह जब तक मेरी मग़्फ़िरत नहीं फ़रमा देगा मैं यहां से नहीं निकलूंगा।[2]

यूं ही एक शख़्स किसी मस्जिद में गया तो वहां एक दुरवेश को ए'तिकाफ़ में देख कर पूछा : आप यहां क्यूं बैठे हैं ? तो उन्हों ने फ़रमाया : उस ने मुझे अपने दरवाज़े पर बुलवाया तो मैं आ गया, अब मैं हुज़ूरी की इजाज़त का इन्तिज़ार कर रहा हूं।[3]

सातवीं निय्यत

मस्जिद में बैठने वाला निय्यत करे कि "अगर मुयस्सर आया तो इल्म हासिल करूंगा और ज़िक्र के हल्क़े में शिर्कत करूंगा।" ताकि उसे बड़ा सवाब हासिल हो। जैसा कि

राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाले की मिस्ल

हदीसे पाक में आया है कि रसूले अकरम, शफ़ीए आ'ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के

1 ...ابن ماجہ، کتاب الصیام، باب فی المعتکف یزورہ اھلہ فی المسجد، ۲/ ۳۶۳، حدیث: ۱۷۷۹

2 ...علم القلوب، باب النیۃ فی جلوس العبد فی المساجد والقعود فیھا، ص ۱۹۶

3 ...علم القلوب، باب النیۃ فی جلوس العبد فی المساجد والقعود فیھا، ص ۱۹۶

जि़क्र के लिये सुब्ह़ को मस्जिद गया वोह राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाले की त़रह़ है।[1]

पांचवें न बनना

मुअ़ल्लिमे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : आ़लिम बनो या त़ालिबे इ़ल्म या आ़लिम की बात सुनने वाले बनो या इन से मह़ब्बत करने वाले और पांचवें न बनना कि हलाक हो जाओगे।[2]

साल भर की इ़बादत से ज़ियादा पसन्दीदा

सरवरे कौनैन, शहनशाहे दारैन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : आ़लिम के पास घड़ी भर बैठना **अल्लाह** तआ़ला को एक साल की इ़बादत से ज़ियादा पसन्द है जिस में वोह पलक झपकने की मिक़्दार भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी न करे।[3]

इ़ल्म की मह़फ़िल गोया रसूलुल्लाह की मह़फ़िल है

मरवी है कि "जिस ने इ़ल्म की मजलिस को पाया गोया उस ने मेरी मजलिस को पाया और जिस ने मेरी मजलिस को पाया बरोज़े क़ियामत उस के लिये किसी अ़ज़ाब की सख़्ती नहीं होगी।"[4]

सायए अ़र्श में रहने वाले

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इरशाद फ़रमाएगा :

---

1 ...حلیۃ الاولیاء، کعب الاحبار، ٦/ ١٢، حدیث: ٧٦٥٥، بتغیر قلیل

2 ...حلیۃ الاولیاء، مسعر بن کدام، ٧/ ٢٧٧، حدیث: ١٠٥١٣، بتغیر قلیل

3 ...مسند فردوس، ١/ ٣٢٨، حدیث: ٢٣٩٧، بتغیر

منهاج العابدین، الباب الاول، العقبۃ الاولی وھی عقبۃ العلم، ص ١١، بتغیر

4 ...علم القلوب، باب النیۃ فی جلوس العبد فی المساجد و القعود فیها، ص ١٩٦

اَیْنَ الْمُتَحَابُّوْنَ بِجَلَالِیْ اَلْیَوْمَ اُظِلُّھُمْ فِیْ ظِلِّیْ لَاظِلَّ اِلَّاظِلِّیْ

या'नी कहां हैं मेरी इज़्ज़तो जलाल की वज्ह से बाहम महब्बत करने वाले, आज मैं उन्हें अपने अ़र्श के साए में रखूंगा कि मेरे अ़र्श के साए के इलावा कोई साया नहीं।[1]

सय्यिदुना अबू ताालिब मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : ह़दीस शरीफ़ में "بِجَلَالِیْ" से मुराद है "मेरे एह़तिरामो इकराम और ता'ज़ीम की वज्ह से बाहम महब्बत करने वाले" मत़लब येह है कि वोह लोग मेरी इत़ाअ़त में एक दूसरे की मदद करते हैं, मेरी महब्बत में बाहम उल्फ़त रखते हैं और मेरी ही ख़ात़िर एक दूसरे से महब्बत करते हैं और ऐसा इस लिये है कि मैं इन चीज़ों को महबूब रखता हूं और मैं ने बन्दे के इस अ़मल को बड़ा और बुलन्द रुत्बा कर दिया।[2]

बुलन्द दरजा चाहते हो तो....!

हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये बाहम महब्बत करो और **अल्लाह** तआ़ला के लिये भाई बनो क्यूंकि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये किसी का भाई बनता है **अल्लाह** तआ़ला उसे इतना बुलन्द दरजा अ़त़ा फ़रमाता है जिस तक उस का कोई अ़मल भी नहीं पहुंच सकता।[3]

नेक दोस्त से बेहतर कोई चीज़ नहीं

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म

❶...مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب فی فضل الحب فی اللہ، ص۱۰۶۵، حدیث: ۲۵۶۸

❷...علم القلوب، باب النیۃ فی جلوس العبد فی المساجد والقعود فیھا، ص۱۹۷

❸...قوت القلوب، الفصل الرابع والاربعون فی الاخوۃ فی اللہ...الخ، ۲/ ۳۶۰، بتغیر

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : दीने इस्लाम के बा'द बन्दे को नेक दोस्त से बेहतर कोई चीज़ नहीं दी गई ।(1)

रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे नेक व सालेह़ दोस्त अ़त़ा फ़रमा देता है, अगर वोह (इ़बादत वग़ैरा) भूल जाए तो येह उसे याद दिलाता है और अगर वोह याद रखे तो येह उस की मदद करता है ।(2)

ह़िकायत : क्या वोह हमें अ़ज़ाब देगा ?

ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : हम अ़रफ़ात के एक पहाड़ के पास ठहरे हुए थे कि दो नौजवान आए जिन्हों ने बिग़ैर आस्तीन वाले जुब्बे पहने हुए थे, उन में से एक ने दूसरे से कहा : ऐ मह़बूब । दूसरे ने जवाब दिया : ऐ मुह़िब ! मैं ह़ाज़िर हूं । पहले ने कहा : आप क्या कहते हैं कि हम जिस की ख़ातिर एक दूसरे से मह़ब्बत करते हैं क्या वोह हमें अ़ज़ाब देगा ? ह़ज़रते सय्यिदुना साबित बुनानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورانی फ़रमाते हैं : उस वक़्त मैं ने हातिफ़े ग़ैबी से एक आवाज़ सुनी कि "हां ! वोह ऐसा नहीं करेगा ।"(3)

आठवीं निय्यत

मस्जिद में बैठने वाला येह निय्यत करे कि शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर किसी मुसलमान भाई से अचानक मुलाक़ात हो जाए और उस से फ़ाएदा उठाया जाए कि वोह दुन्या की ज़िन्दगी में उसे नफ़्अ़ दे और मरने के बा'द **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में उस की शफ़ाअ़त करे ।

1 ...شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد و الاھلین، ۶/ ۴۱۶، حدیث: ۸۷۲۴، اخ صالح یدلہ امراۃ حسناء

2 ...احیاء العلوم، کتاب اداب الالفۃ والاخوۃ... الخ، الباب الاول فی فضیلۃ الالفۃ... الخ، ۲/ ۱۹۷

3 ...علم القلوب، باب النیۃ فی جلوس العبد فی المساجد والقعود فیھا، ص ۱۹۷

नवीं निय्यत

मस्जिद में बैठने वाला बारगाहे इलाही से नुज़ूले रह़मत के इन्तिज़ार की निय्यत करे ताकि वोह भी उन में से हो जाए जिन्हें रह़मत ढांप लेती है।

महफ़िले ज़िक्र की बरकतें

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : जो लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के लिये कहीं बैठते हैं तो रह़मत उन्हें ढांप लेती है और फ़िरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं, **अल्लाह** तआ़ला अपने पास नूरी मख़्लूक़ में उन का ज़िक्र फ़रमाता है और एक पुकारने वाला उन्हें पुकार कर फ़रमाता है : बख़्शे हुए उठो, मैं ने तुम्हारे गुनाहों को नेकियों में तब्दील कर दिया है।[1]

मस्जिदें दारुल अमान हैं

हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मस्जिदें दारुल अमान हैं जहां उन्हें आबाद करने वाले अम्न में हैं, मस्जिदें मह़फ़ूज़ जगहें हैं जहां उन्हें आबाद करने वाले ह़िफ़ाज़त में हैं और मस्जिदें आराइश गाहें हैं जहां उन्हें आबाद करने वाले संवरते हैं और जब तक वोह मस्जिदों में होते हैं **अल्लाह** तआ़ला उन की ह़ाजतों को पूरा फ़रमाता और उन की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है।[2]

फ़िरिश्तों की दुआ़ का मुस्तह़िक़ कौन ?

सरवरे कौनैन, शहनशाहे दारैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : तुम में से कोई नमाज़ पढ़ कर जब तक उसी जगह बैठा रहता है तो

1 ...معجم کبیر، ۶/ ۲۱۲، حدیث: ۶۰۳۹، بتغیر قلیل

2 ...تفسیر قرطبی، پ۱۸، النور، تحت الآیۃ: ۳۶، ۱۲/ ۲۰۳

फ़िरिश्ते उस पर दुरूद भेजते रहते हैं और उस पर रह़मत नाज़िल होती है और जब तक उस का वुज़ू क़ाइम रहता है फ़िरिश्ते दुआ करते हैं : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस पर रह़म फ़रमा। फिर अगर उस का वुज़ू टूट जाए तो अब नमाज़ क़बूल नहीं होगी यहां तक कि वुज़ू कर ले।[1]

दसवीं निय्यत

मस्जिद में बैठने वाला निय्यत करे कि शायद वोह मुसलमान भाइयों से ह़या और उन की नफ़रत व बेज़ारी के ख़ौफ़ से गुनाहों को छोड़ दे। जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या कर जैसा कि तू अपनी क़ौम के नेक आदमी से ह़या करता है।[2]

किस की सोह़बत इख़्तियार की जाए ?

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : ऐसे बन्दे के पास बैठो जिस की ज़ियारत तुम्हें अल्लाह तआ़ला की याद दिलाए, जिस की गुफ़्तगू तुम्हारे अ़मल में इज़ाफ़ा करे और जिस का अ़मल तुम्हें आख़िरत की रग़बत दे।[3]

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़ातिम असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : तुम पर ऐसे शख़्स की सोह़बत लाज़िम है कि जब तुम उसे देखो तो तुम्हारे दिल

1...بخاری، کتاب الصلاۃ، باب الصلاۃ فی مسجد السوق، ۱/ ۱۸۰، حدیث: ۴۷۷، بتغیر قلیل
المغنی، کتاب الطہارۃ، باب ماینقض الطہارۃ، مسالۃ والارتداد عن الاسلام، ۱/ ۲۳۸
2...معجم الصحابۃ، سعید بن یزید الازدی، ۳/ ۸۱، حدیث: ۹۸۰
3...العقد الفرید، کتاب الزمردۃ فی المواعظ والزھد، مواعظ الانبیاء علیھم السلام، ۳/ ۸۵، بتغیر قلیل

पर उस की हैबत त़ारी हो जाए, उस की ज़ियारत तुम्हें बीवी बच्चे भुला दे और जब तक तुम उस के कुर्ब में रहो तो अपने मौला तआ़ला की ना फ़रमानी न करो।[1]

एक साहि़बे मा'रिफ़त बुजुर्ग फ़रमाते हैं : मैं नेक बन्दे से उसी त़रह़ ह़या करता हूं जैसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ह़या करता हूं।[2]

जिस से फ़िरिश्ते भी ह़या करें

(एक त़वील ह़दीसे पाक में) मरवी है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुए तो हु़ज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी पिन्डली मुबारक छुपा ली जब कि उस वक़्त बारगाहे आ़ली में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ह़ाज़िर थे और पिन्डली शरीफ़ खुली हुई थी। जब आप से इस अ़मल के बारे में अ़र्ज़ की गई तो इरशाद फ़रमाया : क्या मैं उस शख़्स से ह़या न करूं जिस से फ़िरिश्ते भी ह़या करते हैं।[3]

ग्यारहवीं निय्यत

मस्जिद में बैठने वाला अ़ज़ाबे इलाही से छुटकारे की निय्यत करे, यूं वोह अपनी उम्मीदों में कमी करने वाला और अपनी दुन्यावी ज़िन्दगी की ता'मीर व तरक़्क़ी से बे रग़बत होगा और इस ह़ालत में वोह साहि़बे फ़ज़ीलत होगा।

❶... علم القلوب، باب النیۃ فی جلوس العبد فی المساجد و القعود فیھا، ص ۱۹۸

❷... علم القلوب، باب النیۃ فی جلوس العبد فی المساجد و القعود فیھا، ص ۱۹۸

❸... مسلم، کتاب فضائل الصحابۃ، باب من فضائل عثمان بن عفان، ص ۱۰۰۴، حدیث: ۲۴۰۹

मसाजिद में बैठने की बरकात

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللّٰهِ الۡغَفَّار फ़रमाते हैं : "अगर आस्मान से कोई अ़ज़ाब नाज़िल हो तो मस्जिदों वाले उस से मह़फ़ूज़ रहेंगे।"(1)

मन्क़ूल है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वालों को मोहलिक अ़ज़ाब नहीं पहुंचते।(2)

बारहवीं निय्यत

मस्जिद में बैठने वाला **अल्लाह** तआ़ला के लिये बनाए गए दोस्तों से मुलाक़ात की निय्यत करे पस उस की मुलाक़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये होगी और **अल्लाह** तआ़ला के घर में उसे देखना होगा तो यूं उसे **अल्लाह** करीम की बारगाह से सवाब मिलेगा। चुनान्चे,

70 हज़ार फ़िरिश्तों का साथ और दुआ़

मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रज़ीन उ़क़ैली رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنۡهُ से इरशाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि जब बन्दा अपने घर से **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा के लिये अपने मुसलमान भाई से मुलाक़ात करने जाता है तो 70 हज़ार फ़िरिश्ते उस के साथ चलते हैं और उस पर दुरूद (रह़मत) भेजते हुए दुआ़ करते हैं कि ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! इस ने तेरे लिये हुस्ने सुलूक किया तू भी इस के साथ अच्छा सुलूक फ़रमा।(3) तो अगर तुम अपने जिस्म को इस में लगा सकते हो तो ज़रूर लगाओ।

---

1 ...علم القلوب، باب النية فی جلوس العبد فی المساجد و القعود فیھا، ص ۱۹۸

2 ...علم القلوب، باب النية فی جلوس العبد فی المساجد و القعود فیھا، ص ۱۹۸

3 ...حلیة الاولیاء، ابو رزین، ۱/ ۴۴۹، حدیث: ۱۲۷۲، بتغیر قلیل

यहां हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुसलमान भाई से मुलाक़ात का हुक्म दिया है।

महब्बते इलाही के मुस्तहिक़

हुज़ूर सरवरे कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है कि मेरी महब्बत उन बन्दों के लिये लाज़िम हो गई जो मेरे लिये एक दूसरे से मिलते, मेरी ख़ातिर बाहम महब्बत करते और मेरी वज्ह से ही एक दूसरे को कुछ देते हैं।[1]

नेकी करो अगर्चे मीलों सफ़र करना पड़े

एक रिवायत में है कि एक मील चल कर जाओ और किसी मुत्तक़ी इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ो, दो मील चल कर जाओ और किसी मरीज़ की इयादत करो, तीन मील चल कर जाओ और किसी जनाज़े में शिर्कत करो, जहां ज़िक्रे इलाही हो उस इल्म की मजलिस में हाज़िरी के लिये चार मील तक चल कर जाओ, पांच मील चल कर जाओ और दो नाराज़ अफ़राद के माबैन सुल्ह़ कराओ और छ मील तक चल कर जाओ और रिज़ाए रब्बुल अनाम के लिये किसी मुसलमान भाई की ज़ियारत करो।[2][3]

अगर कोई आ़लिम हो और पहचान रखता हो तो उस के लिये बयान कर्दा तमाम निय्यतें एक ही अ़मल में जम्अ़ हो सकती हैं और उसे हर निय्यत के बदले अ़ज़ीम अज्र और बड़ा सवाब अ़ता होगा लिहाज़ा

1 ...مسند احمد، مسند انصار، ۸/ ۲۳۲، حدیث: ۲۲۰۶۳

2 ....या'नी मुस्तह़ब है कि त़वील सफ़र तै़ कर के भी इन आ'माल को बजा लाने की कोशिश करो कि मरीज़ की इयादत के लिये त़वील मसाफ़त तै़ करो और सुल्ह़ करवाने के लिये इस से दुगनी और मुसलमान भाई की ज़ियारत के लिये इस से भी दुगनी मसाफ़त तै़ करो।

(فیض القدیر، ۲/ ۲۴۶، تحت الحدیث: ۱۶۴۷)

3 ...حلیۃ الاولیاء، عطاء بن میسرۃ، ۵/ ۲۲۵، رقم: ۶۹۱۲، بتغیر

تاریخ بغداد، رقم ۵۸۵۶، عیسی بن الفیروزان، ۱۱/ ۱۶۳، بتغیر

ऐसा बन्दा जिसे अच्छी निय्यतों की बदौलत एक ही अ़मल में बहुत सारे अज्र ह़ासिल हो जाएं उस में और ऐसे बन्दे में बड़ा फ़र्क़ है जो निय्यत की दुरुस्ती भूल जाने के सबब कसीर आ'माल में एक भी अज्र ह़ासिल न कर पाए। तो ऐसे शख़्स की कोशिश राएगां जाती है और अ़मल ज़ाएअ़ हो जाता सिवाए येह कि **अल्लाह** करीम उसे अपनी रह़मत से नवाज़ दे। لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه[1]

मस्जिद में बैठने की निय्यतों का ख़ुलासा

मस्जिद में बैठने वाला यूं निय्यतें करे : (1)....जमाअ़त के साथ नमाज़ पढूंगा और उस की मुह़ाफ़ज़त करूंगा। (2)....रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुवाफ़क़त व इत्तिबाअ़ करूंगा। (3)....मुसलमानों के मजमअ़ में इज़ाफ़ा करूंगा। (4)....एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ के इन्तिज़ार के लिये जमा रहूंगा। (5)....मस्जिद में बैठ कर अपने कान, आंख, ज़बान और दीगर आ'ज़ा को ममनूआ़त से बचाऊंगा और रुहबानिय्यत इख़्तियार करूंगा (या'नी इ़बादतो रियाज़त में मुबालग़ा करूंगा और लोगों से दूर रहूंगा)। (6)....मस्जिद से निकलने तक मस्जिद में ए'तिकाफ़ की निय्यत से रहूंगा। (7)....इ़ल्म ह़ासिल करूंगा ज़िक्र के ह़ल्क़ों में शरीक रहूंगा। (8)....येह निय्यत करता हूं कि शायद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर किसी मुसलमान भाई से अचानक मुलाक़ात हो गई तो उस से फ़ाएदा उठाऊंगा ताकि वोह दुन्यावी ज़िन्दगी में नफ़्अ़ का सबब बने और बा'दे वफ़ात बारगाहे इलाही में मेरी शफ़ाअ़त करे। (9)....बारगाहे इलाही से नुज़ूले रह़मत का मुन्तज़िर रहूंगा। (10)....मुसलमान भाइयों से ह़या करते हुए और उन की नफ़रत व बेज़ारी के ख़ौफ़ से गुनाहों को तर्क करूंगा।

[1]...علم القلوب، باب النية فی جلوس العبد فی المساجد و القعود فیھا، ص۱۹۹

(11)....अ़ज़ाबे इलाही से छुटकारा ह़ासिल करूंगा ताकि उम्मीदों में कमी करने वाला बन जाऊं और दुन्यावी ज़िन्दगी की ता'मीर व तरक़्क़ी से बे रग़बत हो जाऊं। (12)....**अल्लाह** तआ़ला के लिये बनाए गए दोस्तों से मुलाक़ात करूंगा।

मस्जिद से निकलते वक़्त की दुआ़

(13)....मस्जिद से निकलते वक़्त येह दुआ़ पढ़ूंगा :

بِسْمِ اللّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ، اَللّٰهُمَّ اعْصِمْنِیْ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़ और **अल्लाह** तआ़ला के रसूल पर दुरूदो सलाम नाज़िल हो। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से तेरे फ़ज़्ल का सुवाल करता हूं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे शैत़ान मरदूद से महफ़ूज़ रखना।[1]

मुसलमान भाइयों से मुलाक़ात की निय्यतें

रिज़ाए इलाही के लिये मुसलमान भाइयों से मुलाक़ात करना भी मोमिनों के लिये बाइ़से फ़ज़ीलत आ'माल में से है, लिहाज़ा बन्दे को चाहिये अपनी निय्यत को साफ़ सुथरा करे और यहां सात अच्छी और फ़ज़ीलत वाली निय्यतें जब कि पांच बुरी व मज़मूम निय्यतें हैं और पहचान रखने वाले पर लाज़िम है कि वोह अच्छी और बुरी निय्यतों को पहचाने ताकि बुरी से बच कर अच्छी की पैरवी करे। وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه

मन्क़ूल है कि एक सूफ़ी बुज़ुर्ग ने अपने एक शागिर्द से पूछा : तुम कहां जाने का इरादा रखते हो ? अ़र्ज़ की : फ़ुलां शख़्स से मिलने का इरादा है। फ़रमाया : क्या तुम मुलाक़ात की आफ़त को जानते हो ? अ़र्ज़

1...تفسیر قرطبی، پ۱۸، النور، تحت الآیۃ: ۳۶، ۱۲/ ۲۱۰، بتغیر قلیل

مسلم، کتاب صلاۃ المسافرین وقصرھا، باب مایقول اذا دخل المسجد، ص ۲۸۱، حدیث: ۱۶۵۲

की : नहीं। फ़रमाया : जान लो कि जो अपने मुसलमान भाई से दर्जे ज़ैल पांच निय्यतों से मुलाक़ात करता है तो ऐसी मुलाक़ात अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को पसन्द नहीं।(1)

मुलाक़ात की पांच आफ़तें और बुरी निय्यतें

पहली आफ़त

मुलाक़ात की पहली आफ़त व बुरी निय्यत येह है कि बन्दा खाने और ख़्वाहिश पूरी करने के लिये मुलाक़ात करे।

बुरा बन्दा

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह बन्दा बुरा है जिसे लालच चलाए और वोह बन्दा भी बुरा है जिसे ख़्वाहिश गुमराह कर दे।(2)

आख़िरी ज़माने में लोगों का ख़ुदा, दीन और ज़ेवर

हज़रते सय्यिदुना सहल رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : आख़िरी ज़माने में कुछ ऐसे लोग निकलेंगे जिन के मा'बूद उन के पेट होंगे, जिन का दीन उन का लिबास होगा और जिन का ज़ेवर उन का कलाम होगा।(3)

हिकायत : रूह की ख़्वाहिश

एक दुरवेश ने रिज़ाए इलाही के लिये एक दोस्त से मुलाक़ात की, जब वोह बैठ गया तो दोस्त ने खाना पेश किया और खाने के लिये इसरार

---

❶...علم القلوب، باب النية فی زيارة الاخوان، ص۲۰۵

❷...ترمذی، کتاب صفة القيامة، باب۱۷، ۴/ ۲۰۳، حديث: ۲۴۵۶

❸...قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بين علماء الدنيا... الخ، ۱/ ۲۷۷، بتغير قليل

करने लगा, दुरवेश ने खाने से इन्कार करते हुए कहा : मैं रूह की ख़्वाहिश के सबब तुम से मुलाक़ात करने आया हूं, हवाए नफ़्स और पेट की ख़्वाहिश के सबब नहीं। चुनान्चे, उस ने खाना नहीं खाया।(1)

हिकायत : नफ़्स की गिज़ा पर रूह की गिज़ा को तरजीह

एक मुरीद ने अपने शैख़ से मुलाक़ात की ताकि उन से मा'रिफ़त के मुतअ़ल्लिक़ कुछ पूछे, मुरीद जब बैठ गया तो उसे खाना पेश किया गया, उस ने अ़र्ज़ की : शैख़ ! मैं इस खाने से ज़ियादा किसी और शै का मोह़ताज हूं और आप पर इस के इलावा कोई और चीज़ ज़ियादा लाज़िम है, हम ने आप से (तसव्वुफ़ के) किसी नुक्ते के लिये मुलाक़ात की है (खाने के) लुक़्मे के लिये आप की ज़ियारत नहीं की, अगर हमारी निय्यत खाने की होती तो येह तो हमें आप के इलावा किसी और से भी मिल जाता, हम तो आप के पास वोह शै लेने आए हैं जो हमें आप के इलावा किसी और से नहीं मिलती, नफ़्स की गिज़ा तो हम ने रात को ही खाई है मगर रूह की गिज़ा हमें 40 दिन से नहीं मिली ह़ालांकि रूह की गिज़ा हमें नफ़्स की गिज़ा से ज़ियादा मह़बूब व पसन्द है लिहाज़ा आप ज़ियादा पसन्दीदा शै से आग़ाज़ फ़रमाइये **अल्लाह** तआ़ला आप को इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी से नवाज़े। क्यूंकि मैं ने आप को अपने मशाइख़ से येह फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बयान करते सुना है कि "मोमिन वोही है जो अपने दीन को अपनी ख़्वाहिश पर तरजीह़ दे।"(2) शैख़ ने जवाब देते हुए फ़रमाया : तुम खाना खाओ, मैं

❶...علم القلوب، باب النية فی زیارۃ الاخوان، ص ۲۰۵

❷...السنة لعبد اللّٰہ بن احمد، سل عن الایمان والرد علی المرجئة...الخ، ۱/ ۳۷۴

तुम्हें खाने की फ़ज़ीलत और मुसलमान भाई की दा'वत क़बूल करने पर 14 ह़दीसें सुनाता हूं। मुरीद ने अ़र्ज़ की : या शैख़ ! जब खाने की फ़ज़ीलत पर 14 ह़दीसें हैं तो खाना न खाने की फ़ज़ीलत पर तो 24 ह़दीसें होंगी। चुनान्चे, उस ने खाना नहीं खाया।(1)

हिकायत : पेट को दीन का रास्ता न बनाओ

दुरवेशों के एक गुरौह ने किसी आ़लिम के घर का क़स्द किया, जब वोह उन के घर पहुंचे तो उन्हों ने उन के साथ बैठने से पहले ही खाना लाने का इशारा कर दिया, खाना पेश किया गया तो उन में से एक दुरवेश खड़ा हो गया। अ़र्ज़ की गई : कहां जाते हैं ? कहा : मेरी ह़ाजत तो खाने वाले से वाबस्ता है। दूसरों ने कहा : आप तशरीफ़ रखिये, हम फ़ारिग़ हो कर आप को और इन को मिला देते हैं। दुरवेश ने कहा : ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि मैं अपने पेट को अपने दीन का रास्ता बनाऊं।(2)

दूसरी आफ़त

मुलाक़ात की दूसरी आफ़त व बुरी निय्यत येह है कि बन्दा इ़ज़्ज़त के ह़ुसूल, दिखावे और फ़ख़्र व मुबाहात के लिये मुलाक़ात करे।

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ और ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी (رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمَا) की मुलाक़ात हुई, एक ने दूसरे को नसीह़त की तो दोनों रोने लगे, ह़ज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी ने कहा : "मुझे उम्मीद है कि आज की इस मजलिस से ज़ियादा पसन्दीदा मजलिस

(1)...علم القلوب،باب النية فی زیارۃ الاخوان،ص ۲۰۵

(2)...علم القلوب،باب النية فی زیارۃ الاخوان،ص ۲۰۶

में हम पहले कभी नहीं बैठे।" ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने कहा : क्या आप अपने पास से अच्छे अच्छे अल्फ़ाज़ मुन्तख़ब कर के मुझ से बातें नहीं कर रहे और मैं भी अपने पास से अच्छी अच्छी बातें चुन कर आप से गुफ़्त्गू नहीं कर रहा था ? यूं हम दिखावा करने वाले हो गए।[1]

तीसरी आफ़त

मुलाक़ात की तीसरी आफ़त व बुरी निय्यत येह है कि बन्दा पहचान और मक़ाम व मर्तबे की ख़ातिर अपने भाई से मुलाक़ात को जाए ताकि वोह इस का इकराम व ता'ज़ीम करे।

ह़िकायत : कहीं मेरा सवाब ज़ाएअ़ न हो जाए

मन्क़ूल है कि सूफ़िया का एक गुरौह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली रूज़बारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा, उन में एक नौजवान भी था जिसे ह़ज़रत नहीं जानते थे तो आप ने लोगों से पूछा : येह नौजवान कहां से आया है, मैं इसे पहचानता नहीं हूं ? नौजवान ने अ़र्ज़ की : मैं ने आप को पहचान करवाने के लिये आप की ज़ियारत नहीं की बल्कि मैं ने आप से मुलाक़ात एक ऐसी हस्ती के इकराम व एह़तिराम के लिये की है जिस के साथ मेरी पिछले 30 साल से पहचान है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अ़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِى ने पूछा : तुम्हारा नाम क्या है ? अ़र्ज़ की : आप की पहचान ही मेरा नाम है, मुझे डर है कि कहीं मेरा येह सवाब ज़ाएअ़ न हो जाए। फिर आप ने अपने पास मौजूद खाना उसे पेश किया तो वोह नौजवान

[1]...علم القلوب،باب النية فی زيارة الاخوان،ص٢٠٦

खड़ा हो गया और कहने लगा : हमें तय्यिब के साथ ख़बीस को (या'नी आ'माल को बुरी निय्यतों के साथ) मिलाने से मन्अ़ किया गया है। इरशादे बारी तआ़ला है :

وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ۪ (پ۴، النسآء:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सुथरे के बदले गन्दा न लो। (1)

चौथी आफ़त

मुलाक़ात की चौथी आफ़त व बुरी निय्यत येह है कि बन्दा लोगों से ता'रीफ़ करवाने की ग़रज़ से अपने भाई से मुलाक़ात करे।

सच्चा इन्सान अपनी नेकियां छुपाता है

कहते हैं कि सच्चा इन्सान अपनी नेकियां छुपाता है जैसे दूसरा अपनी बुराइयां छुपाता है और उस को अपनी नेकियां क़बूल न होने का ख़ौफ़ इस दूसरे के बुराइयों की बख़्शिश न होने के ख़ौफ़ से ज़ियादा होता है।(2)

पांचवीं आफ़त

मुलाक़ात की पांचवीं आफ़त व बुरी निय्यत येह है कि बन्दा माल के हुसूल के लिये अपने मुसलमान भाई से मुलाक़ात करे।

हिकायत : मुरीदों की इस्लाह़ व तरबियत

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي के मुरीदीन में से बा'ज़ दुरवेशों की ह़ालत येह थी कि जब आप के पास वुस्अ़त व गुन्जाइश होती तो आप के साथ रहते और अगर तंगी होती तो छोड़ कर चले जाते। एक दिन आप ने इरशाद फ़रमाया : इन बे वुक़ूफ़ों को देखो, मैं

1 ...علم القلوب، باب النية فی زيارة الاخوان، ص۲۰۶

2 ...علم القلوب، باب النية فی زيارة الاخوان، ص۲۰۶

इन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये चाहता हूं और येह मुझे दुन्या और नफ़्स की ख़ातिर चाहते हैं। एक दिन आप तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक मिस्री शख़्स हाज़िरे ख़िदमत हुवा जिस के पास 200 दीनार थे, उस ने वोह दीनार आप के सामने डाल दिये। दुरवेशों को पता चला तो वोह जल्दी से आप के पास पहुंच गए, जैसे ही वोह आप के घर में दाख़िल हुए तो आप समझ गए कि येह क्यूं आए हैं? पस आप खड़े हो गए और वोह दीनार उठा लिये और एक हमवार व तंग रास्ते दरियाए दिजला तक पहुंच गए और उस के कनारे खड़े हो कर दीनारों को अपनी हथेली पर रख कर बुलन्द किया और (दीनार दरिया में फेंकते हुए) येह आयते मुबारका तिलावत की :

وَانْظُرْ اِلٰۤى اِلٰهِكَ الَّذِیْ ظَلْتَ عَلَیْهِ عَاكِفًا ؕ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِی الْیَمِّ نَسْفًا ﴿۹۷﴾

(پ۱۶، طٰہٰ:۹۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अपने उस मा'बूद को देख जिस के सामने तू दिन भर आसन मारे (पूजा के लिये बैठा) रहा क़सम है हम ज़रूर उसे जलाएंगे फिर रेज़ा रेज़ा कर के दरिया में बहाएंगे।*

फिर फ़रमाया : जो मुझे चाहता है मेरे पीछे चला आए और जो दीनारों को चाहता है वोह उन के पीछे चला जाए।(1)

हज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رحمةُ اللّٰهِ الْعَزِيز फ़रमाते हैं : किसी की ऐसी मह़ब्बत से बच जो वोह तुझ से अपनी ह़ाजत के मुत़ाबिक़ करे क्यूंकि जब वोह अपनी ह़ाजत को कम करेगा तो मह़ब्बत ख़त्म हो जाएगी।(2)

---

1 ...علم القلوب، باب النية فی زیارة الاخوان، ص۲۰۶

2 ...قوت القلوب، الفصل الرابع والاربعون، فی الاخوة فی اللّٰہ والصحبة...الخ، ۲/ ۳۷۳

मुलाक़ात की सात अच्छी निय्यतें

बन्दए मोमिन को चाहिये कि अपने मुसलमान भाई से दर्जे ज़ैल सात निय्यतों से मुलाक़ात करे ताकि उसे ढेरों अज्रो सवाब ह़ासिल हो।

पहली निय्यत

मुलाक़ात करने वाला अपने मुसलमान भाई की ह़ुरमत, इ़ज़्ज़त और मक़ामो मर्तबे की ख़ातिर उस से मुलाक़ात करे। जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में है :

बन्दए मोमिन की ह़ुरमत

ह़ुज़ूर ताजदारे दो जहां, रह़मते आ़लमिय्यां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ानए का'बा को देख कर इरशाद फ़रमाया : बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुझे शरफ़ व अ़ज़मत से नवाज़ा है मगर बन्दए मोमिन ह़ुरमत में तुझ से बढ़ कर है।[1]

आ़लिम, त़ालिबे इ़ल्म और मोमिन की शान

मरवी है कि जिस ने किसी आ़लिम की ता'ज़ीम की उस ने 70 नबियों की ता'ज़ीम की और जिस ने किसी त़ालिबे इ़ल्म को इ़ज़्ज़त दी उस ने 70 शहीदों को इ़ज़्ज़त दी[2] और जिस ने किसी मोमिन को अज़िय्यत दी उस ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अज़िय्यत पहुंचाई और जिस ने अम्बियाए उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को अज़िय्यत पहुंचाई उस ने अल्लाह तआ़ला को अज़िय्यत दी और जिस ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को अज़िय्यत दी उस पर तौरैत शरीफ़, इन्जीले मुक़द्दस और क़ुरआने करीम में ला'नत आई है।

1...معجم اوسط، ۴/ ۲۰۳، حدیث: ۵۷۱۹

2...مسند فردوس، ۳/ ۵۷۶، حدیث: ۵۸۰۵

मुसलमान की ता'ज़ीम अल्लाह की ता'ज़ीम है

हुज़ूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ज़ीशान है : जो अपने मुसलमान भाई की ता'ज़ीम करता है बेशक वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम करता है।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : एक मील तक चल कर जाओ और किसी नेक शख़्स के जनाज़े में शिर्कत करो और छ मील तक चल कर जाओ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर अपने मुसलमान भाई से मुलाक़ात करो।(2)

पांच चीज़ें मक़बूल ही मक़बूल हैं

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : पांच चीज़ें ज़मीन से आस्मान की त़रफ़ मुकम्मल बुलन्द होती हैं : (1)....मोमिन की इ़ज़्ज़त व ह़ुरमत (2)....ने'मते इलाही का शुक्र (3)....वालिदैन का ह़क़ (4)....दुन्या से बे रग़बत आ़लिम की ता'ज़ीम और (5)....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की इबादत।(3)

ह़िकायत : 100 ह़ज से अफ़ज़ल अ़मल

रिज़ाए इलाही के लिये दोस्ती रखने वाले दो अफ़राद की बाहम मुलाक़ात हुई तो एक ने दूसरे से पूछा : आप कहां से आ रहे हैं ? दूसरे ने कहा : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ह़ुरमत वाले घर (का'बतुल्लाहिल मुशर्रफ़ा) का ह़ज और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रौज़ए अक़्दस की ज़ियारत कर के आ रहा हूं और आप कहां से आ रहे हैं ? पहले ने बताया : अपने एक

1...مسند حارث، کتاب الصلاۃ، باب فی خطبۃ قد کذبھا...الخ، ۱/ ۳۱۶، حدیث: ۲۰۵

2...تاریخ بغداد، رقم ۵۸۵۶، عیسی بن الفیروزان، ۱۱/ ۱۶۳، بتغیر، عن معروف الکرخی

3...علم القلوب، باب النیۃ فی زیارۃ الاخوان، ص ۲۰۸

भाई से मुलाक़ात कर के आ रहा हूं जिस से मैं अल्लाह तआ़ला के लिये महब्बत करता हूं। दूसरा कहने लगा : क्या आप मुझे अपनी मुलाक़ात की फ़ज़ीलत (अज्रो सवाब) तोहफ़े में देते हैं ताकि मैं अपने ह़ज का सवाब आप को तोहफ़े में दे दूं? येह सुन कर पहला शख़्स कुछ देर के लिये सोच में पड़ गया। इतने में किसी ने ग़ैब से आवाज़ दी, पुकारने वाला नज़र नहीं आ रहा था मगर उस की आवाज़ सुनाई दे रही थी, वोह कह रहा था : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मुसलमान भाई से मुलाक़ात करना बारगाहे इलाही में 100 ह़ज से अफ़्ज़ल है सिवाए ह़िज्जतुल इस्लाम (फ़र्ज़ ह़ज) के।[1]

दूसरी निय्यत

मुलाक़ात से अपने मुसलमान भाई को मानूस करने और उस के दिल को अपने लिये बदलने की निय्यत करे ताकि दोनों के दरमियान (मज़ीद) महब्बत पैदा हो। अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا مَّاۤ اَلَّفْتَ بَیْنَ قُلُوْبِهِمْ وَ لٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَیْنَهُمْ (پ۱۰، الانفال:۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है सब ख़र्च कर देते उन के दिल न मिला सकते लेकिन अल्लाह ने उन के दिल मिला दिये।

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : येह आयते मुबारका अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये बाहम महब्बत करने वालों के बारे में नाज़िल हुई है।[2]

बाहमी महब्बत को मज़बूत करने वाली चार ख़ूबियां

मन्क़ूल है कि चार ख़ूबियां भाई की भाई से महब्बत को मज़बूत

1 ...علم القلوب، باب النیۃ فی زیارۃ الاخوان، ص۲۰۸

2 ...مسند بزار، ابو اسحاق الھمدانی عن ابی الاحوص عن عبد اللّٰہ، ۵/ ۴۳۹، حدیث: ۲۰۷۷

करती हैं : (1)....मुलाक़ात व ज़ियारत (2)....सलाम (3)....मुसाफ़ह़ा और (4)....तोह़फ़ा।[1]

नीज़ इस मुलाक़ात से कुछ और ह़ासिल न भी हो कम अज़ कम बन्दा इस की बदौलत मुसलमान भाई के दिल में ख़ुशी तो दाख़िल कर सकता है।[2]

बा'ज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया : भाई चारगी की फ़ज़ीलत उलफ़त, वाबस्तगी और दाइमी मह़ब्बत है।[3]

मुह़िब की निगाह मह़बूब को तलाश करती है

ख़लीफ़ा हारून रशीद ने अ़ली बिन जह्म से कहा : क़ुर्ब के मुतअ़ल्लिक़ मुझे अपना कोई शे'र सुनाओ। उस ने अ़र्ज़ की : जी। चुनान्चे, (उस ने येह अश्आ़र सुनाए) :

اَلَّفْتُ التَّوْحِيْدَ وَ الْقُرْبَةَ   وَ فِيْ كُلِّ يَوْمٍ اَرٰى تُرْبَةً

فَيَوْمٌ مُّطِيْلٌ عَلٰى نِعْمَةٍ   وَّ يَوْمٌ مُّقِيْمٌ عَلٰى نَكْبَةٍ

وَ مِمَّا يَطْلُبُ عَيْنُ الْحَبِيْبِ   حَبِيْبَ تَطَيَّبَ بِهِ الصُّحْبَةَ

तर्जमा : (1) मैं ने यक्ताई व क़ुरबत को यक्जा किया और मैं हर रोज़ कोई क़ब्र देखता हूं। (2) पस एक दिन किसी ने'मत में गुज़रता है और एक दिन किसी मुसीबत में कट जाता है। (3) और मह़ब्बत करने वाले की निगाह मह़बूब को तलाश करती है ताकि उस की बदौलत सोह़बत को पाकीज़ा बना सके।[4]

---

❶...علم القلوب، باب النية فی زيارة الاخوان، ص٢٠٨

❷...علم القلوب، باب النية فی زيارة الاخوان، ص٢٠٨

❸...علم القلوب، باب النية فی زيارة الاخوان، ص٢٠٨

❹...علم القلوب، باب النية فی زيارة الاخوان، ص٢٠٨

दीने इस्लाम के बा'द सब से बेहतर

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : दीने इस्लाम के बा'द बन्दे को नेक दोस्त से बेहतर कुछ नहीं दिया गया तो तुम में से जो अपने दोस्त की जानिब से महब्बत देखे तो उसे ज़रूर इख़्तियार करे।[1]

मोमिन दो हथेलियों की मिस्ल है

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब भी दो मोमिन मुलाक़ात करते हैं तो उन में से एक को ज़रूर भलाई नसीब होती है और बेशक मोमिन की मिसाल उन दो हथेलियों की त़रह़ है जिन में से एक दूसरी को धोती है तो उस के लिये इस का वुजूद ज़रूरी है।[2]

तीसरी निय्यत

मुलाक़ात से येह निय्यत करे कि येह अ़मल सुन्नते रसूल है और इस लिहाज़ से येह मुस्तह़ब है। जैसा कि

70 हज़ार फ़िरिश्तों की दुआ़

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (ह़ज़रते सय्यिदुना अबू रज़ीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से) इरशाद फ़रमाया : ऐ अबू रज़ीन ! क्या तुम्हें ख़बर है कि जब कोई शख़्स अपने घर से रिज़ाए इलाही के लिये अपने मुसलमान भाई से मुलाक़ात के लिये निकलता है तो 70 हज़ार फ़िरिश्ते उस के साथ चलते हैं और उस पर दुरूद

1 ...شعب الایمان، باب فی حقوق الاولاد والاھلین، ۶/ ۴۱۶، حدیث: ۸۷۲۴، بتغیر

2 ...الجامع فی الحدیث، باب الاخاء فی اللّٰہ، ۱/ ۲۹۸، حدیث: ۲۰۱، بتغیر قلیل

भेजते हैं और यूं दुआ करते हैं : "ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! इस ने तेरे लिये तअ़ल्लुक़ क़ाइम किया तू भी इस से तअ़ल्लुक़ क़ाइम फ़रमा।" (ऐ अबू रज़ीन) अगर तुम अपने आप को इस काम में लगा सकते हो तो ऐसा ज़रूर करना।[1]

एक बहुत ही प्यारी सुन्नत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं : येह हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ से अपने भाइयों से मुलाक़ात को तरजीह़ देने का हुक्म है[2] और ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मा'मूल था कि अगर कोई शख़्स तीन दिन मस्जिद से ग़ाइब रहता तो आप उस के मुतअ़ल्लिक़ लोगों से पूछा करते पस अगर वोह बीमार होता तो उस की इ़यादत फ़रमाते, अगर सफ़र में होता तो उस के लिये दुआ फ़रमाते और अगर घर में होता तो उस से मुलाक़ात फ़रमाते।[3]

99 रह़मतों का मुस्तह़िक़

ह़दीस शरीफ़ में है : जब दो दोस्त आपस में मुसाफ़ह़ा करते (हाथ मिलाते) हैं तो उन के दरमियान 100 रह़मतें तक़्सीम की जाती हैं जिन में से 99 उस के लिये होती हैं जो अपने रफ़ीक़ से ज़ियादा उन्सिय्यत रखता है।[4]

---

1 ...حلیۃ الاولیاء، ابو رزین، ۱/ ۴۴۹، حدیث: ۱۲۷۲، بتغیر قلیل

2 ...علم القلوب، باب النیۃ فی زیارۃ الاخوان، ص ۲۰۹

3 ...مسند ابی یعلی، مسند انس بن مالک، ۳/ ۲۱۷، حدیث: ۳۴۱۶، بتغیر قلیل

4 ...مسند بزار، مسند عمر بن خطاب، ۱/ ۴۳۷، حدیث: ۳۰۸، بتغیر

मुलाक़ात के वक़्त मुस्कुराने की फ़ज़ीलत

एक रिवायत में है : मुलाक़ात करने वालों में से एक दूसरे को देख कर मुस्कुराता है तो उन दोनों के गुनाह झड़ जाते हैं।[1]

नूरी सुवारियों के सुवार

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : अल्लाह तआ़ला के लिये बाहम महब्बत करने वाले और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही के लिये एक दूसरे से मुलाक़ात करने वाले जब रोज़े महशर अपनी क़ब्रों से निकलेंगे तो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त उन के लिये ऐसी सुवारियां भेजेगा जो नूर से बनी होंगी, नूर से सजाई गई होंगी, उन की लगामें नूर की होंगी और उन की ज़ीनें नूर की होंगी। ग़िलमाने जन्नत उन सुवारियों को चलाते होंगे, पस वोह अपनी क़ब्रों से इस ह़ाल में निकलेंगे कि रब्बे जलील عَزَّوَجَلَّ के लिये "मैं ह़ाज़िर हूं" की सदाएं लगा रहे होंगे। उन्हें सुर्ख़ व ज़र्द याक़ूत के महल्लात में ले जाया जाएगा जहां काफ़ूर, शराबे त़हूर और तस्नीम (जन्नत की आ'ला शराब) और मोहर लगी शराब होगी और उन सब पर रिज़ा व रह़मत का ग़लबा होगा, पस वोह क़ुर्बे ख़ास में सैराब किये जाएंगे। फिर वोह सुवारियों पर सुवार और ज़ेवरात से आरास्ता हो कर अपने लिये रखी गई कुरसियों की त़रफ़ जाएंगे जहां वोह बक़ा की सिफ़त से मुत्तसिफ़ आंखों से अपने रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ का दीदार करेंगे और ख़ुश होंगे।[2]

हज़रते सय्यिदुना अ़म्र बिन अ़ला رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : आदमी के लिये मुस्तह़ब है कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर बनाए गए दोस्त से दिन में दो बार मुलाक़ात करे।[3]

---

1 ...معجم اوسط، ۵/ ۳۶۶، حدیث: ۷۶۳۰، بتغیر قلیل

2 ...علم القلوب، باب النیۃ فی زیارۃ الاخوان، ص۲۰۹

3 ...علم القلوب، باب النیۃ فی زیارۃ الاخوان، ص۲۰۹

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू तालिब मुहम्मद बिन अली मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : गोया कि हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन अला رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने अहले जन्नत के मुतअ़ल्लिक़ इस फ़रमाने बारी तआ़ला की तावील की है :

وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٢﴾ (پ١٦،مریم:٦٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन्हें इस में उन का रिज़्क़ है सुब्हो शाम ।

तो इन्हों ने इस मुलाक़ात और दीगर बातों को दाख़िल फ़रमाया ।[1]

इस बारे में येह अश्आ़र भी कहे गए हैं :

اِذَا غِبْتُ يَوْمًا عَنْ صَدِيْقٍ وَّ لَيْلَةً ۔۔۔ وَّ لَمْ اٰتِهٖ اَهْلًا لَّبَعْثُ رَسُوْلٍ

فَقَدْ ضَلَّ عَقْلِيْ اِنْ طَلَبْتُ اِخَاءَهٗ ۔۔۔ وَ اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّ اَنْ كَانَ ذَا حَالٍ

तर्जमा : (1)....अगर मैं एक दिन या रात दोस्त से ग़ाइब रहूं और खुद उस के पास न जाऊं तो ज़रूर किसी को उस के पास भेजूंगा । (2)....अगर मैं उस से दोस्ती माल और अच्छी हालत की बिना पर रखूं तो मेरी अ़क्ल भटकी हुई है ।[2]

तू ख़ूब रहा और जन्नत भी ख़ूब है

ह़दीस शरीफ़ में है कि जब बन्दा मुश्ताक़ हो कर और मुलाक़ात की रग़बत रखते हुए अपने भाई से मुलाक़ात करता है तो उसे पीछे से एक फ़िरिश्ता यूं पुकारता है : तू ख़ूब रहा और जन्नत भी ख़ूब है ।[3]

1 ...علم القلوب،باب النیة فی زیارة الاخوان،ص٢٠٩

2 ...علم القلوب،باب النیة فی زیارة الاخوان،ص٢٠٩

3 ...الزهد لابن مبارک،باب ماجاء فی الشح،ص٢٤٦،حدیث:٧٠٩

सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को नसीहत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ालिब मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَلِی फ़रमाते हैं कि हम ने एक ह़दीस रिवायत की है कि हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا दाएं बाएं देख रहे हैं तो उन से इस बारे में इस्तिफ़्सार फ़रमाया, उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! मुझे एक शख़्स से मह़ब्बत है, मैं उसे तलाश कर रहा हूं मगर वोह नज़र नहीं आ रहा। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अ़ब्दुल्लाह ! जब तुम किसी से मह़ब्बत करो तो उस से उस का नाम और उस के वालिद का नाम पूछो और उस के घर का पता मा'लूम करो, फिर अगर वोह ग़ाइब हो तो उस से मुलाक़ात करो, अगर बीमार पड़ जाए तो उस की इ़यादत करो और अगर किसी काम में मश्ग़ूल हो तो उस की मदद करो।[1]

चौथी निय्यत

मुलाक़ात करने वाला अपने मुसलमान भाई की मुलाक़ात से गुनाहों के कफ़्फ़ारे और ख़त़ाओं के मिटने की निय्यत करे। जैसा कि

मुसाफ़ह़ा करते वक़्त मुस्कुराने की फ़ज़ीलत

ह़दीस शरीफ़ में है कि जब कोई अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने मुसलमान भाई से मुलाक़ात करे फिर दोनों मुसाफ़ह़ा करें और एक दूसरे को देख कर मुस्कुराए तो दोनों के गुनाह झड़ते हैं।[2]

1...قوت القلوب، الفصل الرابع والاربعون فی الاخوۃ فی اللّٰہ...الخ، ۲/ ۳۶۸

2...معجم اوسط، ۵/ ۳۶۶، حدیث: ۷۶۳۰، بتغیر قلیل

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि सरवरे अम्बिया, महबूबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : जब मोमिन मोमिन को देखता है और एक दूसरे से खुश हो तो अ़र्श के दरमियान से एक फ़िरिश्ता निदा देता है : "तुम दोनों अपने आ'माल नए सिरे से शुरूअ़ करो क्यूंकि **अल्लाह** तआ़ला ने तुम दोनों के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये हैं।" फिर अगर वोह उसी दिन या रात में फ़ौत हो जाएं तो सिद्दीक़ीन की मौत मरते हैं।[1]

पांचवीं निय्यत

मुसलमान भाई से मुलाक़ात में येह निय्यत करे कि उसे देखने की बरकतें हासिल करूंगा और उस के क़ुर्ब का फ़ाएदा पाऊंगा ताकि इस के ज़रीए अपने दिल की दवा करूं। जैसा कि

औलिया से महब्बत की बरकतें

हदीसे पाक में आया है : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन बन्दे का हिसाब लेगा तो उस पर हुज्जत क़ाइम हो जाएगी और उसे जहन्नम में ले जाने का हुक्म होगा, उस वक़्त बन्दा हैरानो परेशान होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : क्या तू ने दुन्या में मेरे किसी वली की ज़ियारत की और तुझे मेरी ख़ातिर उस से महब्बत थी या तू ने मेरे लिये उस से मुलाक़ात की हो या फिर मेरे औलिया में से किसी वली को मेरी ख़ातिर तुझ से महब्बत थी तो आज मैं उस की ख़ातिर तुझे छोड़ दूंगा।[2]

1...علم القلوب،باب النیۃ فی زیارۃ الاخوان،ص ۲۱۰

2...علم القلوب،باب النیۃ فی زیارۃ الاخوان،ص ۲۱۰

औलिया की औलिया से महब्बत

मन्क़ूल है कि जब ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के विसाल का वक़्त क़रीब आया तो उन से अ़र्ज़ की गई : क्या आप को कोई ख़्वाहिश है ? आप ने फ़रमाया : हां ! एक नज़र **''ह़ज़रते यूसुफ़ बिन अस्बात़''** को देखना चाहता हूं।(1)

ह़ज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन सुलैमान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं जब अपने अन्दर कुछ सुस्ती पाता हूं तो ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को एक नज़र देख लेता हूं तो फिर अ़मल में लग जाता हूं।(2)

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा बिन उ़क़्बा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मैं अपने किसी दोस्त से एक बार मिल लेता हूं तो कई दिन तक अ़मल पर कारबन्द रहता हूं।(3)

सात चीज़ों की त़रफ़ देखना इ़बादत है

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : सात चीज़ों की त़रफ़ देखना इ़बादत है : (1)...दोस्त का (रिज़ाए इलाही के लिये बनाए गए) दोस्त को देखना इ़बादत है (2)....कुरआने करीम को देखना (3)....का'बतुल्लाहिल मुशर्रफ़ा को देखना (4-5)....मां और बाप के चेहरे को देखना (6)....आ़लिम को देखना और (7)....इ़ल्म की किताब में देखना इ़बादत है।(4)

1...المجالسة وجواهر العلم، ۳/ ۹۹، رقم: ۲۹۸۴، حسن البصری بدله الفضیل بن عیاض

2...قوت القلوب، الفصل الرابع والاربعون فی الاخوة فی اللّٰہ... الخ، ۲/ ۳۶۷

3...قوت القلوب، الفصل الرابع والاربعون فی الاخوة فی اللّٰہ... الخ، ۲/ ۳۶۷

4...شعب الایمان، باب فی بر الوالدین، ۶/ ۱۸۷، حدیث: ۷۸۶۰، دون قوله والی العالم... الخ

تنبیه الغافلین، باب فضل مجالس العلم، ص ۲۳۹، حدیث: ۶۵۴، دون قوله وفی کتب العلم

हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल बिन इयाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** तआ़ला की ख़ातिर महब्बत व शौक़ के साथ अपने मुसलमान भाई के चेहरे को देखना इबादत है।[1]

अहलो इयाल की मुलाक़ात से ज़ियादा पसन्दीदा

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحمَةُاللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये बनाए गए दोस्तों से मुलाक़ात करना हमें अपने बीवी बच्चों से मुलाक़ात करने से ज़ियादा पसन्द है क्यूंकि हमारे घरवाले हमें दुन्या की याद दिलाते हैं जब कि हमारे दोस्त हमें आख़िरत की याद दिलाते हैं।[2]

छटी निय्यत

इस निय्यत से मुलाक़ात करे कि अपने मुसलमान भाई को अपना हाल सुनाएगा और उस से अपने दीन के बारे में नसीहत हासिल करेगा।

नासेह दोस्त बेहतर है या माल देने वाला ?

हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد ने फ़रमाया : रिज़ाए इलाही के लिये बनाया गया दोस्त जो हर बार मिलने पर तुम्हें **अल्लाह** तआ़ला के बारे में नसीहत करे तुम्हारे लिये उस दोस्त से बेहतर है जो हर बार की मुलाक़ात में तुम्हारे हाथ में एक दीनार रख दे।[3]

आप के दिल का क्या हाल है ?

हज़रते सय्यिदुना अबू तालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِی फ़रमाते हैं : अस्लाफ़ में से **अल्लाह** तआ़ला की ख़ातिर दोस्ती रखने वाले दो दोस्त

1 ...قوت القلوب، الفصل الرابع والاربعون فی الاخوۃ فی اللّٰہ...الخ، ۲/ ۳۶۵ بتغیر قلیل

2 ...قوت القلوب، الفصل الرابع والاربعون فی الاخوۃ فی اللّٰہ...الخ، ۲/ ۳۶۷

3 ...حلیۃ الاولیاء، بلال بن سعد، ۵/ ۲۵۷، رقم: ۷۰۳۵

जब मुलाक़ात करते थे तो एक दूसरे से कहता : आप कैसे हैं और आप का क्या ह़ाल है ? तो वोह कहता : आप अपने नफ़्स और ख़्वाहिश के साथ कैसे हैं ? आप के ख़ैर की त़रफ़ बुलाने पर नफ़्स ने आप की बात मानी या नहीं ? और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बढ़ने या पीछे हटने में आप के दिल का क्या ह़ाल है ?[1]

बा'ज़ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : हमारा ज़ियादा तर शौक़ दोस्तों से मुलाक़ात है, हम मिलते हैं तो एक दूसरे को अपने ह़ालात बताते हैं और मज़ीद के त़लबगार होते हैं ।[2]

अ़क़्ल मन्द के चार अवक़ात

आले दावूद की ह़िक्मत में है : अ़क़्ल मन्द को चाहिये कि उस के लिये चार अवक़ात हों : (1)....एक वोह वक़्त जिस में वोह अपने रब तआ़ला से मुनाजात करे (2)....एक वोह जिस में वोह अपना मुह़ासबा करे (3)....एक वोह जिस में वोह ऐसे दोस्तों के साथ बैठे जो उसे उस के नफ़्स के ऐबों से आगाह करें और आख़िरत की त़रफ़ राग़िब करें और (4)....एक वोह वक़्त हो जिस में वोह अपने नफ़्स को दुन्या की जाइज़ लज़्ज़तों के लिये छोड़ दे क्यूंकि येह वक़्त दूसरे अवक़ात के लिये मुआ़विन होता, नुफ़ूस को मानूस करता और उन्हें किसी न किसी फ़ज़ीलत तक पहुंचाता है ।[3]

दिल की तलाश

एक बुज़ुर्ग का बयान है कि मैं ने ह़ज़रते सय्यिदुना दारानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّورَانِی

1...علم القلوب، باب النیۃ فی زیارۃ الاخوان، ص۲۱۱

2...علم القلوب، باب النیۃ فی زیارۃ الاخوان، ص۲۱۱

3...شعب الایمان، باب فی تعدید نعم اللّٰہ...الخ، ۴/۱۶۴، حدیث:۴۶۷۷

को फ़रमाते सुना कि मैं अपने घर से तुम्हारे पास अपने दिल की तलाश में आता हूं, हमारे घर में ऐसा कोई नहीं जो मुझ से किसी शै का पूछे।[1]

एक अहले महब्बत का बयान है कि मुझ पर एक हालत ने ग़लबा किया तो मैं अपने घर से किसी ऐसे इन्सान की तलाश में निकला जिस से उन्सिय्यत हासिल करूं और उसे अपना हाल सुनाऊं। चुनान्चे, मेरी मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान सौरी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِی से हो गई, आप ने मुझे ग़ौर से देख कर पूछा : तुझे क्या हुवा ? मैं ने अ़र्ज़ की : मेरे पास कुछ सामान है, चाहता हूं कि कोई मेरे साथ सौदा कर ले। आप ने पूछा : दुन्या का सामान है या आख़िरत का ? मैं ने अ़र्ज़ की : आख़िरत का। पस आप ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे क़ब्रिस्तान ले गए, जब हम क़ब्रों के दरमियान पहुंचे तो फ़रमाया : अब हम उस जगह आ गए हैं जहां उख़रवी सामान का मुआ़मला हमेशा अच्छा रहता है। अगर सच्चाई तुम्हारे शामिले हाल है तो अपना सामान इन (क़ब्र वालों) पर पेश कर दो वरना रोज़े महशर के लिये अपने पास महफ़ूज़ कर लो।[2]

सातवीं निय्यत

मुलाक़ात से महब्बते इलाही की तलाश और उस वा'दए इलाहिय्या की तस्दीक़ की निय्यत करे जो **अल्लाह** तआ़ला ने ऐसे बन्दे से फ़रमाया है जो उस के किसी बन्दे से उस की ख़ातिर शदीद महब्बत के सबब मुलाक़ात करता है। जैसा कि

अल्लाह के लिये मुसलमान से महब्बत का इनआ़म

मरवी है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि एक शख़्स अपने मुसलमान भाई

---

1 ...علم القلوب، باب النية فی زيارة الاخوان، ص٢١١

2 ...علم القلوب، باب النية فی زيارة الاخوان، ص٢١١

से मुलाक़ात के लिये दूसरी बस्ती की जानिब चला तो **अल्लाह** तआ़ला ने उस के रास्ते में एक फ़िरिश्ता भेजा, फ़िरिश्ते ने उस से पूछा : कहां का इरादा है ? वोह बोला : मैं इस बस्ती में अपने एक भाई से मिलने जा रहा हूं। फ़िरिश्ते ने कहा : क्या तेरे और उस के दरमियान रिश्तेदारी है जिसे निभाना चाहते हो या उस का तुझ पर कोई एह़सान है जिसे पूरा करने का इरादा है। उस ने जवाब दिया : ऐसा कुछ नहीं है, मैं तो फ़क़त़ उस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करता हूं। फ़िरिश्ते ने कहा : मैं तेरी त़रफ़ **अल्लाह** तआ़ला का क़ासिद हूं, जिस त़रह़ तू इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करता है वोह भी तुझ से मह़ब्बत फ़रमाता है।[1]

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि **अल्लाह** तआ़ला इरशाद फ़रमाता है : मेरी ख़ातिर बाहम मह़ब्बत रखने वालों के लिये मेरी मह़ब्बत लाज़िम हो गई।[2]

इस्तिग़फ़ार का ह़क़ीक़ी मा'ना

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने एक शख़्स को इस्तिग़फ़ार करते सुना तो फ़रमाया : ऐ शख़्स क्या तू इस्तिग़फ़ार का मा'ना जानता है ? उस ने अ़र्ज़ की : नहीं। फ़रमाया : जान ले कि इस्तिग़फ़ार एक क़िस्म की तौबा है और तौबा ऐसी चीज़ है जो छ मआ़नी से जुड़ी हुई है : (1)....गुज़श्ता गुनाहों पर नदामत (2)....आयिन्दा गुनाहों से बचना (3)....वोह तमाम फ़राइज़ अदा करना जो तू अपने और **अल्लाह** तआ़ला के माबैन ज़ाएअ़ कर चुका (4)....लोगों की इज़्ज़तों और मालों में जो ह़ुक़ूक़ तेरे ज़िम्मे हैं उन्हें अदा करना (5)....ह़राम से पैदा

1 ...مسلم، کتاب البر والصلة، باب فی فضل الحب فی اللّٰہ، ص ۱۰۶۵، حدیث: ۶۵۴۹

2 ...مسند احمد، مسند انصار، ۸/ ۲۳۹، حدیث: ۲۲۰۹۱، خلقت بدلہ وجبت

होने वाली चर्बी व गोश्त को पिघलाना हत्ता कि हड्डी और जिल्द अपनी जगह वापस आ जाए और (6)....बदन को ताआत की सख़्ती और तल्ख़ी चखाना जिस तरह उसे गुनाहों का मज़ा चखाया था। येह सुन कर उस शख़्स ने अर्ज़ की : ऐसा कौन कर सकता है ? फ़रमाया : अगर तुम्हारा कपड़ा बोसीदा हो जाए तो बोसीदा बोसीदा को फ़ाएदा नहीं पहुंचा सकता और इस्तिग़फ़ार एक पैवन्द ही है और इस्तिग़फ़ार के साथ यूं दुआ करो। اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْتَقِيْلُكَ فَاَقِلْنِیْ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से ग़लती की मुआफ़ी चाहता हूं तू मेरी ग़लती मुआफ़ फ़रमा दे।[1]

मुलाक़ात की निय्यतों का ख़ुलासा

बुरी निय्यतें

मुसलमान भाई से मुलाक़ात की पांच बुरी निय्यतें जिन से बचना चाहिये : (1)....खाने, ख़्वाहिश पूरी करने, लिबास, ज़ेवरात और बातें करने की निय्यत से मुलाक़ात करना। (2)....हुसूले इ़ज़्ज़त, दिखावे और फ़ख़्र व मुबाहात के लिये मुलाक़ात करना। (3)....पहचान और मक़ामो मर्तबे की ख़ातिर मुलाक़ात करना ताकि उस की ता'ज़ीमो तकरीम की जाए। (4)....लोगों से ता'रीफ़ करवाने की ग़रज़ से मुलाक़ात करना। (5)....माल के हुसूल की निय्यत से मुलाक़ात करना।

अच्छी निय्यतें

मुसलमान से मुलाक़ात की आठ अच्छी निय्यतें जिन में अज्रो सवाब है : (1)....मुसलमान भाई की हुरमत, इ़ज़्ज़त और मक़ामो मर्तबे की ख़ातिर उस से मुलाक़ात करना। (2)....मुसलमान भाई को मानूस करने

1 ...علم القلوب، باب النية فی زيارة الاخوان، ص ۲۱۲

और उस के दिल को अपने लिये बदलने की निय्यत से मुलाक़ात करना ताकि दोनों के दरमियान (मज़ीद) महब्बत पैदा हो। (3)....मोमिन के दिल में ख़ुशी दाख़िल करने की निय्यत से मुलाक़ात करना। (4)....हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के त़रीक़े की पैरवी के लिये मुलाक़ात करना। (5)....इस निय्यत से मुलाक़ात करना कि मुसलमान भाई से मुलाक़ात गुनाहों के कफ़्फ़ारे और ख़त़ाओं के मिटने का सबब है। (6)....इस निय्यत से मुलाक़ात करना कि मुसलमान भाई को देख कर बरकतें मिलेंगी और उस के कुर्ब का फ़ाएदा उठा कर अपने दिल की दवा करूंगा। (7)....मुसलमान भाई को अपना ह़ाल सुनाने और उस से अपने दीन के मुतअ़ल्लिक़ नसीह़त ह़ासिल करने के लिये मुलाक़ात करना। (8)....महब्बते इलाही की तलाश की निय्यत से मुलाक़ात करना।

मुलाक़ात की दुआएं

मुसलमान भाइयों से मुलाक़ात में दर्जे ज़ैल दुआएं की जाएं :

(1)....अगर मुसलमान भाई के हां खाओ तो येह दुआ करो : اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِيْمَا رَزَقْتَهُمْ وَاغْفِرْ لَهُمْ وَارْحَمْهُمْ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू ने जो उन्हें रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाया है इस में उन्हें बरकत दे और उन्हें बख़्श दे और उन पर रह़म फ़रमा।[1]

(2)....अगर वोह तुम्हें कुछ पिलाए तो येह दुआ करो : اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِيْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِيْ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू उसे खिला जिस ने मुझे खिलाया और उसे पिला जिस ने मुझे पिलाया ।[2]

(3)....अगर तुम उन के हां रोज़ा इफ़्त़ार करो तो येह दुआ दो : اَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّائِمُوْنَ وَاَكَلَ طَعَامَكُمُ الْاَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ या'नी तुम्हारे हां

1 ...مسلم، کتاب الاطعمة، باب استحباب وضع النوی... الخ، ص ۸۷۰، حدیث: ۵۳۲۸

2 ...مسلم، کتاب الاطعمة، باب اکرام الضیف وفضل ایثارہ، ص ۸۷۵، حدیث: ۵۳۶۲

रोज़ादार रोज़ा खोलें और तुम्हारा खाना नेक लोग खाएं और फ़िरिश्ते तुम पर रह़मत भेजें।[1]

दुरूद शरीफ़ पढ़ने की निय्यतें

ऐ मेरे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! मैं हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ने से निय्यत करता हूं तेरे हुक्म की बजा आवरी की, तेरी किताब की तस्दीक़ की, तेरे नबी ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत (फ़रामीने मुबारका) के इत्तिबाअ़ की, उन से मह़ब्बत की, उन के ह़क़ के शौक़ व ता'ज़ीम की, उन के शरफ़ की और इस लिये उन पर दुरूद पढ़ता हूं कि वोह इस के अहल हैं। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तू अपने फ़ज़्लो एह़सान से इस दुरूद शरीफ़ को क़बूल फ़रमा, मेरे दिल से ग़फ़्लत के पर्दे हटा दे और मुझे अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा।

ऐ रब्बे करीम ! अपने मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उस शरफ़ में इज़ाफ़ा फ़रमा जिस से तू ने उन्हें नवाज़ा है और उस इ़ज़्ज़त को बढ़ा जो तू ने उन्हें अ़त़ा फ़रमाई है, ह़ज़राते मुर्सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मक़ामात में उन के मक़ाम को और ह़ज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दरजात में उन के दर्जे को मज़ीद ऊंचा फ़रमा।

ऐ तमाम जहानों के मालिक ! मैं दुन्या व आख़िरत में आ़फ़िय्यत के साथ साथ तुझ से तेरी रिज़ा और जन्नत का सुवाल करता हूं और क़ुरआनो सुन्नत और जमाअ़त (अहले सुन्नत व जमाअ़त) नीज़ बिग़ैर किसी तबद्दुल व तग़य्युर के कलिमए शहादत पर मौत का सुवाली हूं। अपने फ़ज़्लो एह़सान से मेरे गुनाहों को

[1] ...ابن ماجہ، کتاب الصیام، باب فی ثواب من فطر صائما، ۲/ ۳۴۷، حدیث: ۱۷۴۷

मुआ़फ़ फ़रमा दे बेशक तू बहुत ज़ियादा तौबा क़बूल फ़रमाने वाला मेहरबान है وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّم या'नी अल्लाह तआ़ला हमारे सरदार ह़ज़रते मुह़म्मद और आप के आल व अस्ह़ाब पर दुरूद नाज़िल फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मसाजिद में तिलावते क़ुरआन की मजालिस और दौरए क़ुरआन में ह़ाज़िरी की 42 निय्यतें

बिलाशुबा ज़िक्र के ह़ल्क़े उन बड़ी चीज़ों में से हैं जिन पर अल्लाह तआ़ला फ़िरिश्तों के सामने मुबाहात (फ़ख़्र) फ़रमाता है और इस में भी शक नहीं कि क़ुरआने करीम की तिलावत और उस का दौरा करना उन अहम इबादतों में से है जिन के ज़रीए़ बन्दा अपने मौलाए करीम का क़ुर्ब ह़ासिल करता है। इसी वज्ह से इस उम्मत के गुज़श्ता व मौजूदा नेक लोगों ने तिलावते क़ुरआन की मजलिसों का इन्तिज़ाम किया और इस के ज़रीए़ मस्जिदों को आबाद किया।

हर मुसलमान को इन इजतिमाआ़त में अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ शिर्कत करनी चाहिये ताकि इन की बदौलत अपने रब तआ़ला का क़ुर्ब ह़ासिल करे। जैसा कि हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "आ'माल का मदार निय्यतों पर है और हर शख़्स को वोही मिलेगा जिस की उस ने निय्यत की।"(1)

बन्दए मोमिन को चाहिये कि तिलावते क़ुरआन के इजतिमाआ़त में दर्जे ज़ैल निय्यतें करे : (1)....सलफ़ सालिह़ीन का त़रीक़ा ज़िन्दा रखूंगा। (2)....मस्जिद को आबाद करूंगा। (3)....मस्जिद में ए'तिकाफ़ करूंगा। (4)....मुसलमानों की ता'दाद में इज़ाफ़ा करूंगा। (5)....मस्जिद की

1...بخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی الی رسول اللّٰہ، ۱/۵، حدیث: ۱

आबादकारी और कुरआने करीम की तिलावत पर मुसलमानों की हौसला अफ़ज़ाई करूंगा। (6)....अपने वक़्त की हिफ़ाज़त कर के उसे नेक अमल से मा'मूर करूंगा। (7)....हिफ़्ज़े कुरआन में दूसरे की मदद करूंगा। (8)....अल्लाह तआला के कलाम से नसीहत हासिल करूंगा। (9)....कुरआन सुनने का फ़ाएदा उठाऊंगा। (10)....मुसलमानों के बाहमी रवाबित को मज़बूत करूंगा। (11)....रात में तिलावत हुई तो शब बेदारी करूंगा। (12)....जिसे अल्लाह तआला ने अज़मत अता की उस की ता'ज़ीम करूंगा। (13)....ग़ैर हाफ़िज़ के दिल में हिफ़्ज़ की अहम्मिय्यत बिठाऊंगा और उसे कुरआन सुनाऊंगा। (14)....जिस इजतिमाअ को फ़िरिश्ते घेरे हुए होते हैं उस में शिर्कत करूंगा। (15)....तिलावत सुन कर अपने ईमान को मज़ीद मज़बूत करूंगा। (16)....मुसलमान भाइयों के दिलों में ख़ुशी दाख़िल करूंगा। (17)....कुरआने करीम सुन कर अपने दिल को मुनव्वर करूंगा। (18)....तिलावत की बरकत से अपने सीने को कुशादा करूंगा। (19)....तिलावत कर के अज्रो सवाब पाऊंगा। (20)....कुरआने मजीद को ध्यान से सुनूंगा। (21)....कुरआने पाक की तरफ़ बुलाने वाले और इस पर मुआवनत करने वाले की बात तवज्जोह से सुनूंगा। (22)....ज़िक्रुल्लाह के वक़्त नाज़िल होने वाली बरकात और रहमत हासिल करूंगा। (23)....नेक अमल का जज़्बा पाने के लिये आख़िरत याद दिलाने वाली आयतें ग़ौर से सुनूंगा। (24)....ने'मतों से तअल्लुक़ रखने वाली आयाते मुक़द्दसा सुन कर ख़ुद पर अल्लाह तआला की ने'मतों की मा'रिफ़त हासिल करूंगा। (25)....कुरआने करीम के मो'जिज़ा होने और उस की अज़मतो शान में ग़ौरो फ़िक्र करूंगा। (26)....कुरआन वाले अल्लाह वाले हैं लिहाज़ा ख़ुद को उन में शामिल करूंगा। (27)....कलामे इलाही के ज़रीए रिफ़्अत व बुलन्दी हासिल करूंगा। (28)....कुरआने हकीम को तरतील और तजवीद के साथ पढ़ूंगा। (29)....तिलावत के इजतिमाअ में जा कर दुन्यावी मसरूफ़िय्यात से फ़रागत हासिल करूंगा।

(30)....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से दिल को सुकून पहुंचाऊंगा। (31)....ऐसी जगह पहुंच कर आ़म और सरकश शयाती़न से अपनी हि़फ़ाज़त करूंगा। (32)....दौरए कु़रआने करीम में हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करूंगा जैसा कि आप ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام के साथ किया करते थे। (33)....कु़रआने पाक के ज़रीए़ खु़द को नसीह़त करूंगा। (34)....अपना हि़फ़्ज़ और कु़रआने पाक की कि़राअत को पुख़्ता करूंगा। (35)....कु़रआने मजीद (के अह़कामात) को दूसरों तक पहुंचाऊंगा क्यूंकि हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम में से हाज़िर व मौजूद गा़इब तक पहुंचा दे।[1] (36)....ऐसी तिजारत करूंगा जो बरबाद नहीं होती। (37)....तिलावते कु़रआन के इजतिमाअ़ में जा कर सवाब ह़ासिल करूंगा। (38)....अल्लाह करीम के मुझ पर होने वाले फ़ज़्ल में इज़ाफ़ा चाहूंगा। (39)....अपने गुनाहों की बख़्शिश करवाने की कोशिश करूंगा। (40)....इत़ाअ़त बजा ला कर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से क़बूलिय्यत की उम्मीद रखूंगा।

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّ الَّذِیْنَ یَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِیَةً یَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿۲۹﴾

(پ۲۲، فاطر: ۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *बेशक वोह जो अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर वोह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जिस में हरगिज़ टोटा (नुक़्सान) नहीं।*

1 ...بخاری، کتاب العلم، باب لیبلغ العلم الشاهد الغائب، ۱/ ۵۷، حدیث: ۱۰۵

(41)....अपने और ह़ाज़िरीन के लिये हिदायत व रहनुमाई ह़ासिल करूंगा।

अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :

هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ﴿۲﴾

(پ۱، البقرۃ:۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : (कुरआन में) हिदायत है डर वालों को।

(42)....कुरआने करीम से दूरी ख़त्म करूंगा।

रात की इ़बादत की 15 निय्यतें

क़ियामुल्लैल या'नी रात की इ़बादत में दर्जे ज़ैल निय्यतें की जा सकती हैं :

(1)....बारगाहे इलाही से विलायते ख़ास्सा अ़ता होने की उम्मीद रखूंगा।

(2)....**अल्लाह** तआ़ला और उस के प्यारे रसूले करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म की ता'मील करूंगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ

(پ۱۵، بنی اسراءیل:۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और रात के कुछ ह़िस्से में तहज्जुद करो येह ख़ास तुम्हारे लिये ज़ियादा है।

हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ अ़ब्दुल्लाह ! फुलां की त़रह़ न होना कि वोह रात को क़ियाम किया करता था फिर छोड़ दिया।[1]

(3)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे क़ियाम के सबब ज़मीन वालों से अ़ज़ाब उठा ले। (4)....शब बेदारी कर के अपने नफ़्स से जिहाद करूंगा। (5)....रात में इ़बादत कर के अस्लाफ़ की पैरवी करूंगा। (6)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे

[1]...بخاری، کتاب التھجد، باب ما یکرہ من ترک...الخ، ۱/ ۳۹۰، حدیث:۱۱۵۲

अहले मा'रिफ़त वाली अ़ताओं से नवाज़ दे। (7)....रात में इबादत कर के नींद में कमी करूंगा। (8)....मुसलमान मर्दों और औ़रतों के लिये दुआ करूंगा। (9)....कुरआने करीम की तिलावत करूंगा। (10)....खुशूअ़ व खुज़ूअ़ के साथ दुआ करूंगा। (11)....क़बूलिय्यत की घड़ी को पहुंचूंगा। (12)....इख़्लास से क़रीब तर इबादत बजा लाऊंगा। (13)....शब बेदारी की अ़ज़ीम सुन्नत को ज़िन्दा करूंगा। (14)....सह़र के वक़्त तौबा व इस्तिग़फ़ार करूंगा और (15)....ह़क़ तआ़ला से अहले मा'रिफ़त को मिलने वाला फ़ैज़ ह़ासिल करूंगा।

नेकी की दा'वत की 19 निय्यतें

अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ बुलाने वाला दर्जे ज़ैल निय्यतें कर सकता है: (1)....**अल्लाह** तआ़ला का क़ुर्ब ह़ासिल करूंगा। (2)....हुक्मे इलाही की पैरवी करूंगा। (3)....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इत्तिबाअ़ करूंगा। (4)....सलफ़ सालिह़ीन की इत्तिबाअ़ और उन के हुक्म की पैरवी करूंगा। (5)....फ़र्ज़े किफ़ाया को अदा करूंगा। (6)....जितना इ़ल्म और हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जो सुन्नत जानता हूं उसे फैलाऊंगा। (7)....तक्लीफ़ व मशक़्क़त पर सब्र करूंगा। (8)....लोगों की बे रुख़ी और ए'राज़ करने पर बरदाश्त से काम लूंगा। (9)....बारगाहे ख़ुदा व बारगाहे मुस्त़फ़ा में मह़बूब बनूंगा। (10)....लोगों के बा'ज़ हुक़ूक़ अदा करूंगा। (11)....हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शरीअ़त को आ़म करूंगा। (12)....उम्मते मर्ह़ूमा से आफ़तों को दूर करूंगा। (13)....हुस्ने अख़्लाक़ सीखूंगा। (14)....अ़वाम के साथ शफ़्क़त से पेश आऊंगा। (15)....मुआ़शरे की

इस्लाह़ करूंगा। (16)....ख़ुद को और सामने वाले को नफ़्अ़ पहुंचाऊंगा। (17)....अ़त़ाए इलाही से अपने ऐबों से आगाही ह़ासिल करूंगा। (18)....**अल्लाह** तआ़ला से फ़ाएदे की उम्मीद रखूंगा और (19)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हर त़रह़ की मदद चाहूंगा।

निकाह़ की 23 निय्यतें

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ आ़रिफ़ बिल्लाह अ़ली बिन अबू बक्र सकरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से निकाह़ की दर्जे ज़ैल निय्यतें मन्क़ूल हैं :

(1)....मैं इस निकाह़ और बीवी से मह़ब्बते इलाही की निय्यत करता हूं। (2)....जिन्से इन्सानी की बक़ा के लिये बेटे के ह़ुसूल की कोशिश करूंगा। (3)....ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ख़्र व मुबाहात में इज़ाफ़े के लिहाज़ से उन की मह़ब्बत की निय्यत करता हूं। जैसा कि

ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : निकाह़ करो, ज़ियादा हो जाओ क्यूंकि मैं बरोज़े क़ियामत दीगर उम्मतों के सामने तुम पर फ़ख़्र करूंगा।[1]

(4)....इस निकाह़ और अपने क़ौलो फ़े'ल से निय्यत करता हूं कि नेक बेटे की दुआ़ से बरकत ह़ासिल करूंगा। (5)....अगर मेरा बेटा मुझ से पहले फ़ौत हो गया तो उस के बचपने की मौत से शफ़ाअ़त के ह़ुसूल की निय्यत करता हूं। (6)....मैं इस निकाह़ से निय्यत करता हूं कि शैत़ान से अपनी ह़िफ़ाज़त करूंगा। (7)....ख़्वाहिश को तोड़ूंगा। (8)....शर के फ़ितनों को ख़त्म करूंगा। (9)....आंखों की ह़िफ़ाज़त करूंगा और (10)....वस्वसों में

[1]...مصنف عبد الرزاق، کتاب النکاح، باب وجوب النکاح وفضلہ، ۶/ ۱۳۸، حدیث: ۱۰۴۳۲

कमी करूंगा। (11)....मैं बदकारियों से शर्मगाह की हिफ़ाज़त की निय्यत करता हूं। (12)....इस निकाह़ से निय्यत करता हूं कि ज़ौजा के साथ बैठ कर, उसे देख कर और उस के साथ खेल कर नफ़्स को राह़त व उन्सिय्यत पहुंचाऊंगा। (13)....दिल को सुकून पहुंचाऊंगा। (14)....दिल को इबादत के लिये तक्विय्यत दूंगा। (15)....निकाह़ के ज़रीए घरेलू इन्तिज़ामात, खाने पकाने, सफ़ाई सुथराई और बिस्तर बिछाने उठाने की मसरूफ़िय्यात नीज़ बरतन धोने और दीगर ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी की फ़राहमी से दिल को फ़ारिग़ करूंगा। (16)....निकाह़ से निय्यत करता हूं कि बीवियों के हुक़ूक़ की अदाएगी और इन्तिज़ाम व निगरानी कर के अपने नफ़्स से जिहाद करूंगा और उसे रियाज़त में लगाऊंगा। (17)....बीवियों की बुरी आ़दतों पर सब्र करूंगा। (18)....बीवियों से पहुंचने वाली मुतवक़्क़ेअ़ अज़िय्यत बरदाश्त करूंगा। (19)....बीवियों की इस्लाह़ कर के उन्हें ख़ैर व भलाई के रास्ते पर गामज़न करूंगा। (20)....बीवियों के लिये त़लबे ह़लाल की कोशिश करूंगा। (21)....औलाद की तरबियत के मुआ़मले में काविशें करूंगा। (22)....मैं इन तमाम मुआ़मलात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ताईद व ह़िमायत और उस की तौफ़ीक़ त़लब करूंगा और उस के सामने गिड़ गिड़ाऊंगा और इन के ह़ुसूल के लिये मैं उसी का मोह़ताज हूं। (23)....मैं मज़कूरा तमाम बातों में **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा की निय्यत करता हूं।

बारगाहे इलाही में दुआ़एं

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस निकाह़ से वोही निय्यत करता हूं जो तेरे नेक बन्दे और बा अ़मल उ़लमा करते हैं। जिस त़रह़ तू ने उन्हें तौफ़ीक़ दी हमें भी तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और जिस त़रह़ तू ने उन की मदद फ़रमाई

हमारी भी मदद फ़रमा, हमारी कमी को पूरा फ़रमा और हम से क़बूल फ़रमा ले, हमें पलक झपकने की मिक़्दार भी हमारे नफ़्स के सिपुर्द न फ़रमा और अपने एह़सान व करम से ख़ैरो आ़फ़िय्यत के साथ निकाह़ के तमाम मुआ़मलात को दुरुस्त फ़रमा।

ऐ रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ! तू हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा, हम पर रह़्म फ़रमा, हम से राज़ी हो जा, हम से क़बूल फ़रमा, हमें जन्नत में दाख़िला अ़त़ा फ़रमा, हमें दोज़ख़ से नजात अ़त़ा फ़रमा और हमारा हर काम ठीक फ़रमा दे।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे लिये इस निकाह़ और तमाम चीज़ों में मदद, बरकत और सलामती रख दे और इस बात से मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमा कि येह चीज़ें मुझे तुझ से दूर कर दें और मेरे और तेरी इत़ाअ़त के दरमियान रुकावट बन जाएं और मुझे बक़्दरे ज़रूरत रोज़ी अ़त़ा फ़रमा और मुझे ह़राम से बचने वाला बना।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी ज़ात और मेरा सुकून व ह़रकत अमानत हैं तो मैं जहां रहूं तू मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमा और मुझे अपनी विलायत की ख़ैरात अ़त़ा फ़रमा जो तू ने अपने नेक बन्दों को अ़त़ा फ़रमाई।

ऐ रब عَزَّوَجَلَّ ! हमारी, हमारे वालिदैन, हमारी औलाद, हमारी बीवियों, हमारे मशाइख़, हमारे भाइयों, हमारे तमाम क़राबत दारों, हमारे रिश्तेदारों और तमाम ह़ुक़ूक़ वालों और जिस का थोड़ा सा भी ह़क़ हो सब की मदद फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ तमाम जहानों के परवर दगार ! तेरे ज़िक्र, तेरे शुक्र और तेरी अच्छी इबादत पर हमारी और इन सब की मदद फ़रमा।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ सारे जहानों के पालने वाले ! हमें और इन सब को हिदायत व तौफ़ीक़ की दौलत से माला माल फ़रमा। ऐ रब्बे करीम ! ऐ ज़ुल जलाले वल इकराम ! हमें और इन्हें क़ुरआनो सुन्नत पर

ज़िन्दा रख । ऐ पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! हम अपने और इन के लिये क़बूलिय्यत का सुवाल करते हैं और उस चीज़ का सुवाल करते हैं जो हमें तुझ से क़रीब कर दे । اٰمِین

وَصَلِّ بِجَلَالِكَ عَلٰى اَشْرَفِ الْمُرْسَلِيْنَ مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! अपनी अ़ता से तमाम रसूलों से बरतर आख़िरी नबी ह़ज़रते मुह़म्मद और आप के आल व अस्ह़ाब पर दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा और सब ख़ूबियां **अल्लाह** तआ़ला के लिये जो तमाम जहानों का पालने वाला है ।

निकाह़ की दुआ़एं

निकाह़ करने वाले को दुआ़

निकाह़ करने वाले के लिये यूं दुआ़ करो :

بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ وَبَارَكَ عَلَيْكَ وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِىْ خَيْرٍ

या'नी **अल्लाह** तआ़ला तुझे बरकत अ़ता फ़रमाए और बा बरकत बनाए और तुम दोनों को ख़ैरो भलाई में जम्अ़ फ़रमाए ।(1)

निकाह़ करने वाले की दुआ़

निकाह़ करने वाला येह दुआ़ करे :

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا جَبَلْتَهَا عَلَيْهِ، بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطٰنَ وَجَنِّبِ الشَّيْطٰنَ مَا رَزَقْتَنَا

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से इस (औ़रत) की भलाई और इस की त़बीअ़त की भलाई का सुवाल करता हूं और मैं इस के शर से और इस की त़बीअ़त के शर से तेरी पनाह मांगता हूं, **अल्लाह** के नाम से

(1)...ابن ماجه، کتاب النکاح، باب تھنئة النکاح، ۲/ ۴۴۱، حدیث: ۱۹۰۵

शुरूअ, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें शैत़ान से दूर रखना और जो तू हमें अ़त़ा फ़रमाए उस से शैत़ान को दूर रखना ।[1]

पढ़ने पढ़ाने की 13 निय्यतें

(1)....इ़ल्म ह़ासिल करूंगा और दूसरों को सिखाऊंगा । (2)....पढ़ कर अपनी इस्लाह़ करूंगा । (3)....दूसरों को समझाऊंगा । (4)....दूसरों को नफ़्अ़ पहुंचाऊंगा । (5)....अपनी ज़ात को नफ़्अ़ पहुंचाऊंगा । (6)....ख़ुद फ़ाएदा उठाऊंगा । (7)....दूसरों को फ़ाएदा दूंगा । (8)....लोगों को क़ुरआनो सुन्नत के मुत़ाबिक़ अ़मल पर उभारूंगा । (9)....लोगों को हिदायत की त़रफ़ बुलाऊंगा । (10)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये लोगों की भलाई पर रहनुमाई करूंगा । (11)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करूंगा । (12)....**अल्लाह** करीम का क़ुर्ब पाऊंगा । (13)....बारगाहे इलाही से सवाब ह़ासिल करूंगा ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे सरदार ह़ज़रते मुह़म्मद और आप के आल व अस्ह़ाब पर दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें ऐसा इ़ल्म इल्हाम फ़रमा जिस से हम तेरे अह़काम व नवाही को समझ सकें और ऐसा फ़ह्म दे जिस से तेरी बारगाह में मुनाजात का त़रीक़ा जान सकें, ऐ सब से बढ़ कर रह़्म फ़रमाने वाले ।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें इ़ल्म से मालदार फ़रमा, ह़िल्म से आरास्ता फ़रमा, तक़्वा से इ़ज़्ज़त अ़त़ा फ़रमा और आ़फ़िय्यत से उ़म्दा व ख़ूब सूरत बना । ऐ सब से ज़ियादा रह़्म फ़रमाने वाले ।

1 ...بخاری، کتاب الوضوء، باب التسمیۃ علی کل حال... الخ، ۱/ ۷۳، حدیث: ۱۴۱

गोशा नशीनी की 21 निय्यतें

(1)....ज़बान और नज़र की आफ़तों से बचूंगा। (2)....दिल की हिफ़ाज़त और इस्लाह करूंगा। (3)....लोगों से कनाराकशी कर के यक्सूई हासिल करूंगा। (4)....अमल को **अल्लाह** तआला के लिये ख़ालिस करूंगा। (5)....अमल को रियाकारी से बचाऊंगा। (6)....अमल को बातिन के ख़िलाफ़ ज़ाहिर करने से बचाऊंगा। (7)....दिलों की ज़ाहिरी व बातिनी बीमारियों से अमल की हिफ़ाज़त करूंगा। (8)....दुन्या से बे रग़बती अपनाऊंगा। (9)....अपने पास मौजूद दुन्या पर क़नाअत करूंगा। (10)....शरीरों की सोहबत और कमीनों के साथ मेल जोल से बचूंगा। (11)....इबादत व ज़िक्र के लिये फ़राग़त हासिल करूंगा। (12)....गोशा नशीनी इख़्तियार करूंगा ताकि **अल्लाह** तआला की ख़ुशनूदी हासिल हो जाए। (13)....लोगों को अपने शर से बचाऊंगा। (14)....नेकी व तक़्वा के हुसूल की कोशिश करूंगा। (15)....इताअत व फ़रमां बरदारी की हलावत व मिठास महसूस करूंगा। (16)....दिल और बदन को राहत पहुंचाऊंगा। (17)....शरारतों और झगड़ों से दूर रह कर अपनी जान और दीन की हिफ़ाज़त करूंगा। (18)....ग़ौरो फ़िक्र वाली इबादत पर क़ुदरत हासिल करूंगा। (19)....राहे रास्त की रहनुमाई हासिल करूंगा। (20)....**अल्लाह** तआला का क़ुर्ब पाऊंगा। (21)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा तलाश करूंगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये भूका रहने की सात निय्यतें

मोमिन की ख़स्लतों में से भूक बड़ी शान रखती है और जब इस में निय्यत दुरुस्त हो तो येह सब से ज़ियादा पैरवी के लाइक़ है और

इस भूक में बहुत सी मुस्तह़ब निय्यतें हैं जो बन्दे को बुलन्द दरजात तक पहुंचा देती हैं।

पहली निय्यत

बन्दा भूका रहने से येह निय्यत करे कि नफ़्स को कमज़ोर करेगा, उस की ख़्वाहिशात को तोड़ेगा और उस की मुख़ालफ़त को तरजीह़ देगा ताकि वोह इत़ाअ़त वाले कामों में लग जाए और हुक्मे इलाही पर अ़मल के लिह़ाज़ से ऐसा करना मुस्तह़ब है बन्दा इस के ज़रीए़ **अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा पा लेगा और बुलन्द दरजात पर फ़ाइज़ हो जाएगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَ اَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَ نَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰىۙ(۴۰) فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِیَ الْمَاْوٰىؕ(۴۱) (پ۳۰،النّٰزعٰت:۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरा और नफ़्स को ख़्वाहिश से रोका तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है।*

नफ़्स को मग़्लूब करने का त़रीक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना यह़्या बिन मुआ़ज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर तुम इस बात पर कि "नफ़्स दुन्या छोड़ दे और इत़ाअ़त में लग कर तुम से सुल्ह़ कर ले" सातों आस्मान के फ़िरिश्तों, कमो बेश एक लाख 24 हज़ार अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام हर आस्मानी किताब व ह़िक्मत और तमाम वलियों की सिफ़ारिश भी ले आओ तो नफ़्स तुम्हारी बात नहीं मानेगा और अगर तुम इस के सामने भूक की सिफ़ारिश ले आओ तो येह तुम्हारी बात मानेगा और तुम्हारे सामने झुक जाएगा।(1)

❶...علم القلوب،باب النیۃ فی التجوع للہ،ص۲۰۰

भूक की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : उस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं ! **अल्लाह** तआ़ला की ना पसन्दीदा चीज़ छोड़ कर उस की पसन्दीदा चीज़ की त़रफ़ आने वाले सिर्फ़ भूक से ही आ सकते हैं और सिद्दीक़ीन भूक ही के ज़रीए सिद्दीक़ बनते हैं।[1]

जन्नती सुवारियों के सुवार

हज़रते सय्यिदुना ह़ज्जाज बिन ग़ुराफ़िज़ा رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान करते हैं कि मैं मक्कए मुकर्रमा में इबादतो रियाज़त में मसरूफ़ एक गुरौह के पास आया और उन से अ़र्ज़ की : मुझे बताइये कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने औलिया को अपने नफ़्सों को भूका रखने का हुक्म क्यूं दिया ? वोह बोले : क्या तुम ने नहीं देखा कि अगर सख़्त त़बीअ़त चोपाया या ऊंट बिदक जाए तो घरवाले उसे भूका रख कर ही उस पर क़ाबू पाते हैं। जब कि बन्दे का मुआ़मला येह है कि अगर वोह अपने नफ़्स को भूका प्यासा रखता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों के सामने उस पर फ़ख़्र फ़रमाता है और जिस बन्दे पर **अल्लाह** तआ़ला ने एक बार भी फ़ख़्र फ़रमाया क़ियामत के दिन उस के सर पर नूर का ताज रखा जाएगा और **अल्लाह** तआ़ला नूरी फ़िरिश्तों को भेजेगा जिन के साथ ऐसी सुवारियां होंगी जो सुर्ख़ व पीले याक़ूत से आरास्ता होंगी, उन की लगामें पिरोए हुए मोतियों की और उन के कजावे सब्ज़ ज़बरजद के होंगे, उन सुवारियों को ख़ूब रू लड़के हांकते हुए

[1]...علم القلوب،باب النية في التجوع للہ،ص٢٠٠

लाएंगे और दुन्या में भूक प्यास बरदाश्त करने वालों की क़ब्रों के सामने खड़ा करेंगे तो वोह उन पर सुवार हो कर बारगाहे इलाही में ह़ाज़िर होंगे।(1)

शैत़ान का जासूस

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْاَكْرَم बयान करते हैं : मुझे येह बात पहुंची है कि एक दिन और एक रात शैत़ान ने ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام को देखा कि आप बज़ाहिर कमज़ोर हैं तो शैत़ान ने कहा : क्या बात है कि मैं आप को कमज़ोर देख रहा हूं क्या मैं आप को खाना पेश करूं ? ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : तू अच्छी त़रह़ जानता है कि अगर मैं इन पहाड़ों और वादियों से कह दूं : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से खाना बन जाओ" तो येह खाना बन जाएंगे मगर तू मेरा दुश्मन है और नफ़्स मेरे साथ तेरा जासूस है लिहाज़ा मैं तेरे जासूस को भूका रख कर कमज़ोर करता हूं ताकि इस में इतनी त़ाक़त न रहे कि येह मेरी ख़बर तुझ तक पहुंचा सके। बेशक मेरी भूक तुझे गुस्सा दिलाती और पिघलाती है और मैं दुन्या से इस के इलावा और कुछ नहीं चाहता।(2)

भूक के बारे में येह शे'र कहा गया है :

رَاَيْتُ الْجُوْعَ يُغْلَبُ مِنْ رَّغِيْفٍ   وَمِلْئِ الْقَعْبِ مِنْ مَّاءِ الْفُرَاتِ

رَاَيْتُ الْجُوْعَ عَوْنًا لِلْمُصَلِّيْ   رَاَيْتُ الشَّبْعَ عَوْنًا لِلسَّبْحَاتِ

तर्जमा : (1)....मेरा मुशाहदा है कि जव की एक रोटी और फ़ुरात के पानी से भरे एक प्याले से भूक पर ग़लबा पाया जा सकता है। (2)....मैं

1...علم القلوب، باب النية فى التجوع لله، ص ٢٠٠

2...علم القلوب، باب النية فى التجوع لله، ص ٢٠١

ने भूक को नमाज़ी के लिये और शिकम सैरी को ज़िन्दगी के चन्द लम्हों के लिये मददगार पाया है।(1)

दूसरी निय्यत

बन्दा भूका रह कर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अह़वाल की मुवाफ़क़त की निय्यत करे ताकि बरोज़े क़ियामत इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या के ज़ुमरे में शामिल हो जाए।

रसूले मुकर्रम, शफ़ीए़ मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ या'नी जो जिस क़ौम की मुशाबहत इख़्तियार करता है वोह उन्हीं में से है।(2)

दुआ़ए मुस्त़फ़ा

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर ताजदारे दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा, मैं ने देखा कि आप एक चटाई पर चेहरए अक़्दस झुकाए तशरीफ़ फ़रमा थे और ब ज़ाहिर भूक से कमज़ोर नज़र आ रहे थे और यूं दुआ़ फ़रमा रहे थे : इलाही ! मेरी भूक और प्यास के सदक़े मेरी उम्मत के गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दे।(3)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और

1...علم القلوب، باب النية فى التجوع للّٰه، ص۲۰۱

2...ابو داود، كتاب اللباس، باب فى لبس الشهرة، ۴/ ۶۲، حديث: ۴۰۳۱

3...علم القلوب، باب النية فى التجوع للّٰه، ص۲۰۲

आप के सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ज़ाहिरी गुरबत व इफ़्लास के सबब भूक इख़्तियार किया करते थे।[1]

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की भूक

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का बयान है कि बारहा ऐसा होता कि मैं हुजरए अक़्दस और मिम्बरे अत़हर के दरमियान (या'नी रियाज़ुल जन्नह में) भूक के सबब आवाज़ें निकाल रहा होता था और लोग कहते कि "येह दीवाना हो गया है" ह़ालांकि मुझे भूक के सिवा कोई दीवानगी न होती थी[2] और कई बार ऐसा भी होता कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم नमाज़ पढ़ा रहे होते तो भूक के सबब बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ज़मीन पर गिर जाते, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब नमाज़ से फ़ारिग़ होते तो उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाते : अगर तुम जानते कि अल्लाह तआ़ला के पास तुम्हारे लिये क्या (ख़ैर व भलाई) है तो तुम (भूक को) और ज़ियादा करते।[3]

जन्नत में रसूलुल्लाह की रफ़ाक़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक अन्सारी शख़्स की इ़यादत की तो उस से इरशाद फ़रमाया : क्या तुम्हें किसी शै की ख़्वाहिश है? उस ने अ़र्ज़ की : जी हां। इरशाद फ़रमाया : जिस के पास भी (इस की मत़लूबा शै) हो वोह ले आए। एक शख़्स खड़ा हुवा और

1 ...جامع العلوم والحکم، الحدیث السابع والاربعون، ص۵۲۶، من عوز بدلہ کثیرا

2 ...ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی معیشۃ... الخ، ۴/ ۱۶۲، حدیث: ۲۳۷۴

3 ...ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی معیشۃ... الخ، ۴/ ۱۶۲، حدیث: ۲۳۷۵

रोटी का एक टुकड़ा ले आया और उस अन्सारी को खिला दिया।[1] फिर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से इरशाद फ़रमाया : "कम खाने और कम बोलने वाला जन्नत में मेरे साथ इन दो उंगलियों की तरह होगा।" और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी शहादत और दरमियान वाली उंगली से इशारा फ़रमाया।[2]

बरोज़े महशर क़ुर्बे रसूल पाने वाला

हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत तुम में से मेरे क़रीब तरीन वोह बैठेगा जिस की भूक, प्यास और ग़म तवील होगा।[3]

बिला हिसाब जन्नत में दाख़िला

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا समेत भूक के सताए हुए पांच सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हमें बहुत भूक लग रही है, क्या खाने को कुछ मिल सकता है ? तो उस वक़्त उन्हें जव के थोड़े से सत्तू मुयस्सर आए जो उन्हों ने खा लिये मगर वोह सेर न हो सके। उन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आख़िर हम कब तक भूक में मुब्तला रहेंगे ? हुज़ूर

1 ...ابن ماجہ، کتاب الطب، باب المریض یشتھی الشیء، ۴/ ۸۹، حدیث: ۳۴۴۰
الاحادیث المختارۃ، مسند عبداللہ بن عباس، ۱۲/ ۲۷۳، حدیث: ۲۹۹
2 ...مسند فردوس، ۵/ ۳۴۰، حدیث: ۸۳۶۹، دون قولہ کھاتین واشار... الخ
3 ...احیاء العلوم، کتاب کسر الشھوتین، بیان فضیلۃ الجوع وذم الشبع، ۳/ ۱۰۱، بتغیر قلیل
قوت القلوب، الفصل التاسع والثلاثون فی ترتیب الاقوات... الخ، ذکر ریاضۃ المریدین... الخ، ۲/ ۲۸۱

नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम ज़ियादा अ़र्सा इस में मुब्तला नहीं रहोगे मगर येह कि तुम **अल्लाह** तआ़ला से डरो और शुक्र अदा करो क्यूंकि मैं सब्र वालों के इ़लावा किसी क़ौम को बिग़ैर हिसाब जन्नत में दाख़िल होने वाला नहीं पाता[1] ।[2]

तीसरी निय्यत

बन्दा इस निय्यत से भूका रहे कि "दुन्यावी सामान में कमी करेगा।" तो येह उस मा'ना के लिह़ाज़ से होगा जैसा इस रिवायत में है। चुनान्चे,

अफ़्ज़ल लिबास, अफ़्ज़ल इ़ल्म और अफ़्ज़ल इ़बादत

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि उन की अफ़्ज़ल ज़िरह (लिबास) भूक होगी, अफ़्ज़ल इ़ल्म ख़ामोशी होगा और अफ़्ज़ल इ़बादत नींद होगी।[3]

और मज़कूरा निय्यत इस मा'ना में होगी जिस के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है : مَنْ رَضِيَ مِنَ اللهِ بِالْقَلِيْلِ مِنَ الرِّزْقِ رَضِيَ عَنْهُ بِالْقَلِيْلِ مِنَ الْعَمَلِ या'नी जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से थोड़े रिज़्क़ पर राज़ी हो गया **अल्लाह** करीम उस से थोड़े अ़मल पर राज़ी हो जाएगा।[4]

---

1 ....इस रिवायत में साबिरीन की फ़ज़ीलत बयान करना मक़्सूद है, ऐसा नहीं है कि इन के इ़लावा कोई और जन्नत में दाख़िल नहीं होगा, ऐसी बहुत सी रिवायात हैं जिन में दीगर नेक आ'माल पर भी जन्नत की बिशारत दी गई है, मसलन तहज्जुद, सदक़ा व ख़ैरात वग़ैरा। (अज़ इ़ल्मिय्या)

2 ...علم القلوب، باب النية في التجوع لله، ص ۲۰۲

3 ...قوت القلوب، الفصل السابع في ذكر اوراد النهار، ۱/ ۳۳، دون قوله افضل درعهم الجوع

4 ...معجم كبير، ۸/ ۱۴۰، حديث: ۷۶۲۹

गुनाहों से बचने का नुस्ख़ा

हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم फ़रमाते हैं : तुम ख़्वाहिशों को छोड़ दो तो दुन्यादारों की ख़िदमत से बच जाओगे, लज़्ज़तों को छोड़ दो तो गुनाहों से बच जाओगे और लालच को छोड़ दो तो ग़मों से बच जाओगे। बन्दा जिस क़दर मन पसन्द चीज़ें खाने के लिये अपने पेट को ढील देता है उसी क़दर तलबे दुन्या की कोशिश करता है लिहाज़ा वोह खाना छोड़ कर और ख़ुद को भूका रख कर दुन्यावी साज़ो सामान में कमी करने वाला शुमार होगा।[1]

दुन्या ! तेरा पेट है

एक बुज़ुर्ग से अ़र्ज़ की गई : दुन्या क्या है ? उन्हों ने फ़रमाया : दुन्या तेरा पेट है पस तू जितना अपने पेट से बे रग़बत होगा उसी क़दर दुन्या से बे रग़बत हो जाएगा।[2]

चौथी निय्यत

बन्दा येह निय्यत करे कि पेट को भूका रख कर कल मैदाने मह़शर में क़ियामत के उस दिन में राह़त ह़ासिल करूंगा जिस की मिक़्दार 50 हज़ार साल है, जिस में (नाफ़रमानों के लिये) खाना होगा न पानी और यूं ही राह़त होगी न सुकून।

दुन्या में भूका रहने की फ़ज़ीलत

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए आ'ज़म صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने

---

1 ...علم القلوب، باب النية فى التجوع للّٰه، ص ٢٠٣

2 ...علم القلوب، باب النية فى التجوع للّٰه، ص ٢٠٣

अ़ज़्मत निशान है : बरोज़े क़ियामत लोग प्यासे उठाए जाएंगे और दुन्या में भूके रहने वाले आख़िरत में पेट भरे होंगे।(1)

अम्बियाए किराम की रफ़ाक़त ह़ासिल हो

हु़ज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर मुमकिन हो कि जब तुम्हें मौत आए तो तुम्हारा पेट भूका और जिगर प्यासा हो तो ऐसा ही करो कि इस के बदौलत तुम आ'ला मनाज़िल व मरातिब पर फ़ाइज़ हो जाओगे, तुम्हारा ठिकाना ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ होगा और फ़िरिश्ते तुम्हारी रूह़ की आमद पर खु़श होंगे।(2)

पेट और शर्मगाह की ख़्वाहिशात का ख़ौफ़

हु़ज़ूर ताजदारे दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुझे तुम पर सब से ज़ियादा उन ख़्वाहिशात का ख़ौफ़ है जो तुम्हारे पेटों और शर्मगाहों में रखी गई हैं।(3)

पांचवीं निय्यत

बन्दा निय्यत करे कि "भूका रह कर बैतुल ख़ला में आना जाना कम करूंगा।" इस सूरत में वोह रोज़ादार भी हो तो इस की बदौलत वोह सच वालों और ह़या वालों के दरजे को पहुंच जाता है। जैसा कि

ह़या की ह़क़ीक़त तीन चीज़ें हैं

हु़ज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इरशाद फ़रमाया : अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से

---

1 ... تذکرۃ الموضوعات، باب فضل الحلاوۃ واطعامها ... الخ، ص۱۵۱، دون قوله الناس یحشرون الی عطاشا

2 ... مسند حارث، کتاب الصیام، باب فضل الصوم، ۱/ ۴۳۰، حدیث: ۳۴۷

3 ... اعتلال القلوب للخرائطی، باب ذم الهوی واتباعه، ۱/ ۴۶، حدیث: ۸۸، بتغیر قلیل

कमाहक़्क़ुहू हया करो। इन्हों ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कैसे हया करें ? इरशाद फ़रमाया : जो अल्लाह तआ़ला से कमाहक़्क़ुहू हया करना चाहता है वोह अपने पेट और उस में जो कुछ है और अपने सर और उस में जो कुछ है उस की हिफ़ाज़त करे और मौत व मुसीबत को याद रखे।(1)

यहां हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़बर दी कि हया की हक़ीक़त येह तीन ख़स्लतें हैं और इन में से एक पेट की हिफ़ाज़त है और वोह रिज़ाए इलाही के लिये भूका रहना है ताकि पेट में चीज़ों के दाख़िल होने और निकलने का अ़मल कम रहे।

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मुझे बैतुल ख़ला में बहुत ज़ियादा आने जाने में अपने रब عَزَّوَجَلَّ से हया आती है हत्ता कि मैं तमन्ना करता हूं कि अल्लाह तआ़ला मेरा रिज़्क़ ठीकरी में रख देता तो मैं उसे चूस लिया करता यहां तक कि मुझे मौत आ जाती।(2)

खाना खाते वक़्त सहाबा की तमन्ना

हुज़ूर इमामुल अम्बियाए वल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ता'रीफ़ करते हुए हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : उन में से कोई एक वक़्त का खाना खाते तो तमन्ना करते कि काश ! येह उन के पेट में बाक़ी रहता जैसे पानी में ठीकरी बाक़ी रहती है पस येह उन का दुन्यावी ज़ादे राह हो जाता।(3)

1 ...ترمذی، کتاب صفة القیامة، باب ۲۴، ۴/ ۲۰۷، حدیث: ۲۴۶۶، بتغیر قلیل

2 ... المجالسة وجواهر العلم، ۱/ ۳۷۹، رقم: ۹۷۸، بتغیر قلیل

3 ...موسوعة ابن ابی دنیا، کتاب الجوع، ۴/ ۹۷، رقم: ۱۰۹

छटी निय्यत

बन्दा भूका रहने से निय्यत करे कि अल्लाह तआ़ला की पकड़ और नाराज़ी से बचूंगा। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِي ने फ़रमाया : जो दो बार की भूक के दरमियान एक बार सेर हुवा उस ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब की सीरत को अपना लिया और येह तब होगा जब बन्दा सौमे दह्र रखे तो रात में रोज़ा खोले और उस के बा'द एक दिन का रोज़ा रखे पस येह दो बार की भूक के दरमियान एक बार का सेर होना (पेट भरना) है तो येह भूक उस के सेर होने से ज़ियादा होगी।[1]

सातवीं निय्यत

बन्दा निय्यत करे कि भूका रह कर उन मसाइबो आलाम को याद रखूंगा जो भूक वालों को पहुंचते हैं।

ताकि भूकों को याद रखूं

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन या'क़ूब عَلَيْهِمَا السَّلَام जब मिस्र के ख़ज़ानों के मालिक बने तो आप ने कभी पेट भर कर खाना नहीं खाया। आप से इस बारे में अ़र्ज़ की गई तो इरशाद फ़रमाया : मुझे ख़ौफ़ है कि अगर मैं ने पेट भर कर खाया तो भूके को भूल जाऊंगा।[2]

1 ...قوت القلوب، الفصل التاسع والثلاثون فی ترتیب الاقوات...الخ، ذکر ریاضة المریدین...الخ، ۲/ ۲۸۲، مفهومًا

2 ...علم القلوب، باب النیة فی التجوع لله، ص ۲۰۴

पांच चीज़ें और पांच लोग

मन्क़ूल है कि पांच चीज़ें ऐसी हैं जिन की क़दर पांच त़रह़ के लोग ही जानते हैं : (1)....सिह़्ह़त व आफ़िय्यत की ने'मत को बीमार (2)....ज़िन्दगी की क़ीमत को मुर्दे (3)....पेट भरने की क़द्रो क़ीमत भूके (4)....नींद की लज़्ज़त दर्दो तक्लीफ़ वाले और (5)....रोशनी की ने'मत को अंधेरे में रहने वाले ही जानते हैं।[1]

भूका रहने की निय्यतों का खुलासा

(1)....भूका रह कर नफ़्स को कमज़ोर करूंगा, उस की ख़्वाहिशात को तोड़ूंगा और उस की मुख़ालफ़त को तरजीह़ दूंगा ताकि वोह इत़ाअ़त वाले कामों में लग जाए। (2)....भूका रह कर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अह़्वाल की मुवाफ़क़त करूंगा ताकि उन के गुरौह में शामिल हो जाऊं। (3)....भूका रह कर दुन्या के ज़ादे राह में कमी करूंगा। (4)....भूका रह कर मैदाने मह़्शर के लिये राह़त का सामान करूंगा। (5)....भूका रह कर बैतुल ख़ला में आना जाना कम करूंगा। (6)....भूक के ज़रीए़ **अल्लाह** तआ़ला की पकड़ से नजात और उस की नाराज़ी से बचूंगा। (7)....भूका रह कर उन मसाइबो आलाम को याद रखूंगा जो भूक वालों को पहुंचते हैं।

किताबों के हुसूल और मुत़ालए की 48 निय्यतें

किताबें ह़ासिल करने और उन्हें पढ़ने के लिये दर्जे ज़ैल निय्यतें की जा सकती हैं : (1)....**अल्लाह** तआ़ला की रिज़ा, उस का क़ुर्ब और उस की मह़ब्बत ह़ासिल करूंगा। (2)....इ़ल्म की बक़ा और उसे मिटने से

1 ...علم القلوب،باب النية فی التجوع للّٰہ،ص۲۰۴

बचाने की कोशिश करूंगा। (3)....रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शरीअ़त की नश्रो इशाअ़त और इत्तिबाअ़ में इज़ाफ़ा कर के आप की महब्बत बढ़ाऊंगा। (4)....उ़लमा, औलिया, नेक बन्दों और तमाम मुसलमानों की दुआ़ओं की बरकतें पाऊंगा। (5)....बुज़ुर्गों के उ़लूम फैला कर उन की शफ़ाअ़त का त़लबगार बनूंगा। (6)....इन उ़लूम से महरूम लोगों तक येह उ़लूम पहुंचाऊंगा। (7)....मेरे बा'द इन उ़लूम पर क़ाइम रहने वालों तक येह उ़लूम पहुंचाऊंगा ताकि वोह मेरे लिये दुआ़ करें। (8)....इल्मे दीन वालों से मन्सूब हो कर और उन के गुरौह में दाख़िल हो कर ख़ुद को शैत़ान से बचाऊंगा। (9)....अपने नफ़्स को मश्ग़ूल रखूंगा। (10)....ख़ुद को नसीह़त करूंगा। (11)....किताबों को वसीला बनाते हुए इन के ज़रीए़ दूसरों को नसीह़त करूंगा। (12)....मुसन्निफ़ ने जो निय्यत व इरादा किया उस की तक्मील में कोशिश करूंगा। (13)....उस के मक़्सद को अपना मक़्सूद बनाऊंगा। (14)....उस की मुराद को ज़िन्दा करूंगा। (15)....जिस तक न पहुंची उस तक पहुंचाऊंगा। (16)....सुन कर नफ़्अ़ उठाने वालों तक पहुंचाऊंगा। (17)....इन के ज़रीए़ नफ़्अ़ उठाने वाले मुसलमानों को फ़ाएदा पहुंचाऊंगा। (18)....कुतुब और इन की हिफ़ाज़त कर के शिआ़रे इस्लाम का इज़हार करूंगा। (19)....इन के ज़रीए़ इल्म को फैलाऊंगा। (20)....नेकी व तक़्वा पर दूसरों की मदद करूंगा। (21)....नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। (22)....दुरुस्त बात तक रसाई ह़ासिल करूंगा। (23)....ह़क़ बात कहूंगा। (24)....ह़क़ बात को क़बूल करूंगा। (25)....लोगों को ह़क़ सुनाऊंगा। (26)....इल्म को आ़म कर के उस की ख़िदमत करूंगा। (27)....ख़ुद से जहालत दूर करूंगा। (28)....नेक लोगों से मुशाबहत इख़्तियार करूंगा। (29)....नेकूकारों से निस्बत क़ाइम करूंगा।

(30)....सालिहीन के तौर तरीक़ों से ख़ुद को मुज़य्यन करूंगा । (31)....**अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा करूंगा जैसा कि उस ने हमें ख़ैरो भलाई पर रखा । (32)....रिवायात व अक़्वाल को दिरायत की कसोटी पर परखूंगा । (33)....दोनों जहान के शर को दूर करूंगा । (34)....अपने लिये, दोस्त अह़बाब और तमाम मुसलमानों के लिये दारैन का फ़ाएदा ह़ासिल करूंगा । (35)....नेक लोगों का ज़िक्र कर के रह़मत का नुज़ूल त़लब करूंगा । (36)....शैत़ान को ज़लील करूंगा और उस से जंग करूंगा । (37)....नफ़्से अम्मारा या'नी गुनाह का हुक्म देने वाले नफ़्स से जिहाद करूंगा । (38)....ख़ुद को सिद्क़ो सफ़ा से आरास्ता करूंगा । (39)....नेक लोगों का ज़िक्र कर के गुनाहों की बख़्शिश का सामान करूंगा । (40)....सालिहीन की ह़िकायात से दिल को तक़्विय्यत पहुंचाऊंगा और इसे साबित क़दम रखूंगा । (41)....सूफ़ियाए किराम के त़रीक़े पर ईमान रखूंगा और इस की तस्दीक़ करूंगा । (42)....गुरौहे सूफ़िया में इज़ाफ़ा करूंगा । (43)....उन के अह़वाल व आ'माल को अपनाऊंगा । (44)....**अल्लाह** करीम के फ़ज़्लो रह़मत का उम्मीदवार बनूंगा । (45)....**अल्लाह** तआ़ला की मदद व तौफ़ीक़ ह़ासिल करूंगा । (46)....बारगाहे इलाही में ख़ुद को पेश रखूंगा । (47)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ मोह़ताजी रखूंगा । (48)....ह़ुसूले कुतुब और मुत़ालए़ में सालिहीन, उ़लमा और बा अ़मल लोगों वाली निय्यत रखूंगा ।

बारगाहे इलाही में इल्तिजाएं

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम से क़बूल फ़रमा, हम में जो कमी है उसे पूरा फ़रमा दे, हमें एक लम्ह़ा भी हमारे नफ़्सों के सिपुर्द न करना, अपने करम व एह़सान से ख़ैरो आ़फ़िय्यत में हमारे तमाम मुआ़मलात दुरुस्त फ़रमा ।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी, हमारे मां बाप, हमारे असातिज़ए किराम, हमारी औलाद, हमारे रिश्तेदारों, हमारी बीवियों और तमाम अहले हुक़ूक़ की मग़फ़िरत फ़रमा और उस की भी बख़्शिश फ़रमा जिस ने हमें पढ़ाया या जिस को हम ने पढ़ाया और जिस ने हमें दुआ का कहा या जिस को हम ने दुआ का कहा। हम पर रह़्म फ़रमा, हम से राज़ी हो जा, हमें जन्नत में दाख़िल फ़रमा, हमें जहन्नम से नजात अ़ता फ़रमा और हमारे हर काम को दुरुस्त फ़रमा दे।

ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! कुतुब के हुसूल, इन के मुत़ालए, मेरे तमाम अस्बाब और ह़रकातो सकनात नीज़ मेरे तमाम तसर्रुफ़ात में मेरी मदद फ़रमा और बरकत व सलामती अ़ता फ़रमा, दिल और बदन की राह़त के साथ तमाम कामों को आसान फ़रमा दे ताकि येह मुझे तुझ से ग़ाफ़िल न करें और मेरे और तेरी फ़रमां बरदारी के दरमियान रुकावट न बनें और मुझे पाक दामनी अ़ता फ़रमा और मेरा मुआ़मला बराबर बराबर कर दे (या'नी फ़ाएदा व नुक़्सान के बिग़ैर नजात मिल जाए)।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी ह़रकत व सुकून तेरे पास अमानत है, मैं जहां रहूं तू मेरी ह़िफ़ाज़त फ़रमा, मुझे अपनी विलायत से नवाज़ दे और हर जगह मुझे अम्न अ़ता फ़रमा, मुझे अपनी उस विलायत से मुशर्रफ़ फ़रमा जिस से तू अपने नेक बन्दों को मुशर्रफ़ करता है।

ऐ मालिको मौला ! न तेरी रह़मत से मायूसी है और न ही तेरी ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ी है। ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! हम तुझ से तेरे फ़ज़्ल का सुवाल करते हैं, तेरे अ़द्ल से तेरी ही पनाह में आते हैं, तेरी त़रफ़ ज़ियादा बेहतर की रग़बत रखते हैं और तेरे फ़रमान की त़रफ़ माइल हैं।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे पास उतना ही इ़ल्म है जो तू ने हमें सिखाया, उतना ही अ़मल है जिस की तू ने हमें तौफ़ीक़ दी और वोही ह़ाल है जो तू ने हमें नवाज़ा है। ऐ इ़ज़्ज़तो जलाल वाले ! तू पाक है, तेरे सिवा

कोई इबादत के लाइक़ नहीं, हम तुझ से ख़ैरो आफ़िय्यत के साथ अच्छे ख़ातिमे का सुवाल करते हैं और हमारी मक़्बूल इबादत से और तेरी बारगाह में हमारे नफ़्अ़ बख़्श आ'माल के तुफ़ैल हमें नफ़्अ़ अ़ता फ़रमा।

اٰمِیْن یَارَبَّ الْعٰلَمِیْنَ بِجَاہِ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ، خَاتَمِ النَّبِیِّیْنَ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَعَلٰی سَائِرِ الْاَنْبِیَاءِ وَالْمُرْسَلِیْنَ وَاٰلِ کُلٍّ وَّسَائِرِ الصَّالِحِیْن

या'नी ऐ तमाम जहानों के पालने वाले ! तमाम रसूलों के सरदार आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़तो बुज़ुर्गी का वासिता येह सारी दुआएं क़बूल फ़रमा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमाए हुज़ूर नबिय्ये करीम और तमाम अम्बिया व रुसुल पर और उन सब की आल और सारे नेक लोग पर भी रह़मत व सलामती नाज़िल फ़रमा।

दर्स सुनने और देने नीज़ इ़ल्मो ज़िक्र के ह़ल्क़ों और सालिह़ीन की जगहों पर ह़ाज़िरी की 40 निय्यतें

(1)....सालिह़ीन के मक़ामात की बरकतें लूटूंगा। (2)....अल्लाह तआ़ला की अ़त़ाओं का त़ालिब रहूंगा। (3)....खुद समझूंगा और दूसरों को समझाऊंगा। (4)....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल तलाश करूंगा। (5)....सालिह़ीन जिस की बक़ा चाहते हैं उस के लिये कोशिश करूंगा। (6)....हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ूंगा। (7)....इल्म ह़ासिल करूंगा। (8)....ए'तिकाफ़ की निय्यत करूंगा (येह उस वक़्त है जब येह काम मस्जिद में हों)। (9)....खुद को अपनी ज़ात के लिये सुवाल करने से बचाऊंगा। (10)....नमाज़ का इन्तिज़ार करूंगा। (11)....रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अह़ादीसे करीमा सुनूंगा।

(12)....ह़दीस शरीफ़ सुन कर दूसरों तक पहुंचाऊंगा। (13)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ातिर मुसलमान भाइयों से मुलाक़ात करूंगा। (14)....वहां दुआएं मांगूंगा। (15)....इस्तिग़फ़ार करूंगा या'नी अपने गुनाहों की बख़्शिश चाहूंगा। (16)....क़ुरआने करीम की तिलावत करूंगा। (17)....शआ़इरे इस्लाम का इज़हार करूंगा। (18)....इ़ल्म को फेलाऊंगा। (19)....वक़्फ़ करने वाले और जिस पर वक़्फ़ किया गया उस की निय्यत का लिहाज़ रखूंगा। (20)....नमाज़े जुमुआ़ में शिर्कत पर ह़ज के सवाब की उम्मीद रखूंगा। (21)....जामेअ़ मस्जिद में नमाज़े अ़स्र की ह़ाज़िरी में उ़मरह के सवाब की उम्मीद रखूंगा। (22)....एक नमाज़ के बा'द दूसरी के इन्तिज़ार में सरह़दे इस्लाम पर घोड़ा बांधने के सवाब की निय्यत करूंगा। (23)....नेकी और तक़्वा पर मदद करूंगा। (24)....नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। (25)....इ़ल्म की ख़िदमत करूंगा और उसे आ़म करूंगा। (26)....अपने आप से जहालत को दूर करूंगा। (27)....ईमान को तरोताज़ा करूंगा। (28)....नेक व सालेह़ बन्दों की मुशाबहत इख़्तियार करूंगा। (29)....रिवायत को दिरायत से परखूंगा। (30)....नेकूकारों का ज़िक्र कर के रह़मते इलाही का त़लबगार बनूंगा। (31)....नफ़्स के साथ जिहाद कर के उसे मग़लूब करूंगा। (32)....नसीह़त क़बूल करूंगा। (33)....दूसरों को नसीह़त करूंगा। (34)....सालिह़ीन के तज़किरे और उन के वाक़िआ़त बयान कर के गुनाह बख़्शवाऊंगा। (35)....नीज़ इस अ़मल से दिल को तक़्विय्यत पहुंचाऊंगा। (36)....दिल को तम्बीह करूंगा, समझाऊंगा। (37)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और जन्नत ह़ासिल करूंगा। (38)....**अल्लाह** तआ़ला की नाराज़ी और जहन्नम से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करूंगा। (39)....इन तमाम आ'माल में ईमान, तस्दीक़

और सवाब की उम्मीद रखूंगा। (40)....आ'माल, उ़लूम और अह़वाल के बजाए **अल्लाह** करीम के फ़ज़्लो रह़मत पर नज़र रखूंगा।

बारगाहे इलाही में इल्तिजा

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! न तेरी रह़मत से मायूसी है और न ही तेरी ख़ुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ी है। ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ! हम तुझ से तेरे फ़ज़्ल का सुवाल करते हैं, तेरे अ़द्ल से तेरी ही पनाह में आते हैं, तेरी त़रफ़ ज़ियादा बेहतर की रग़बत रखते हैं और तेरे फ़रमान की त़रफ़ माइल हैं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे पास वोही इ़ल्म है जो तू ने हमें सिखाया, वोही अ़मल है जिस की तू ने हमें तौफ़ीक़ दी और वोही ह़ाल है जिस से तू ने हमें नवाज़ा है। तू पाक है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, ऐ इ़ज़्ज़तो जलाल वाले।

मुसलमानों पर वक़्फ़ मफ़ादाते आ़म्मा की चीज़ें, ज़मीन और अमवाल में 46 निय्यतें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلَّم

(1)....कुंआं खुदवा कर **अल्लाह** तआ़ला का क़ुर्ब ह़ासिल करूंगा। (2)....रिज़ाए इलाही तलाश करूंगा। (3)....मुसलमानों को नफ़्अ़ पहुंचाऊंगा। (4)....मुसलमानों की दुआ़एं लूंगा। (5)....चोपायों को फ़ाएदा पहुंचाऊंगा। (6)....अहले इस्लाम की मदद करूंगा। (7)....इस पर दुन्यवी व उख़रवी इन्आ़मात के वा'दों की तस्दीक़ करूंगा। (8)....नफ़्अ़ पाने और पहुंचाने के लिये जाए नमाज़ और मस्जिद बनाऊंगा। (9)....वहां नमाज़ पढ़ूंगा। (10)....दूसरे मुसलमान इस में नमाज़ पढ़ेंगे। (11)....मुसलमानों से दुआ़ओं का त़लबगार बनूंगा। (12)....उन्हें नफ़्अ़ पहुंचाऊंगा। (13)....उन

की मदद करूंगा। (14)....येह सब **अल्लाह** तआ़ला के लिये करूंगा। (15)....शआ़इरे इस्लाम में इज़ाफ़ा करूंगा। (16)....इस्लाम और मुसलमानों में शुमूलिय्यत का इज़हार करूंगा। (17)....इन चीज़ों से दुन्या व आख़िरत में फ़ाएदा उठाऊंगा। (18)....अपने आप से दुन्या व आख़िरत का शर दूर करूंगा। (19)....इन के ज़रीए नुज़ूले रह़मत त़लब करूंगा। (20)....इन कामों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़त़ाओं का त़लबगार रहूंगा। (21)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इन कामों को वसीला बनाऊंगा। (22)....**अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पसन्द में कोशिश करूंगा। (23)....मैं इस के ज़रीए **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा करूंगा जैसा कि उस ने मुझे हर ह़ाल में ख़ैर व भलाई में रखा है। (24)....मैं वोही निय्यत करता हूं जो इन कामों में औलिया व उ़लमा करते हैं। (25)....इन अफ़्आ़ल से शैत़ान को ज़लीलो रुस्वा करूंगा। (26)....बुराई का हुक्म देने वाले नफ़्स के साथ जिहाद करूंगा। (27)....येह काम कर के मुसलमानों के साथ मुशाबहत इख़्तियार करूंगा। (28)....सालिह़ीन के त़ौर त़रीक़ों से ख़ुद को मुज़य्यन व आरास्ता करूंगा। (29)....**अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा व ख़ुशनूदी ह़ासिल करूंगा। (30)....उ़लमाए उ़ज़्ज़ाम और औलिया किराम को ख़ुश करने वाला काम करूंगा (31)....इस में माल सर्फ़ कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करूंगा। (32)....नीज़ हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत ह़ासिल करूंगा। (33)....नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। (34)....ईमान की तजदीद करूंगा या'नी इसे ताज़ा करूंगा। (35)....भलाई व तक़्वा पर मदद करूंगा। (36)....ह़क़ आ़म करूंगा, ह़क़ क़बूल करूंगा, ह़क़ वाला अ़मल करूंगा और ह़क़ को पसन्द रखूंगा। (37)....नफ़्स के जो काम ज़ियादा लाइक़ है

इसे वहां मसरूफ़ करूंगा। (38)....इस इमारत की मिट्टी, तर्ज़े ता'मीर, नक़्शा और इस से जुड़े तमाम आलात में जो भी तसर्रुफ़ और ख़र्च होगा उस से अल्लाह करीम को राज़ी करूंगा। (39)....इस के ज़रीए अपने ईमान व तस्दीक़ को ज़ाहिर करूंगा। (40)....दिल को तक़्विय्यत पहुंचाऊंगा और इसे नसीहत करूंगा। (41)....इस काम से बे तवज्जोगी बरतने वाले तमाम लोगों की तरफ़ से नियाबत करूंगा। (42)....और उन लोगों से हरज व तंगी को दूर करूंगा। (43)....इन सब बातों में सवाब की निय्यत रखूंगा। (44)....अपने अमल के बजाए अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्ल और उस की रहमत पर नज़र रखूंगा। (45)....बारगाहे इलाही से मदद और तौफ़ीक़ तलब करूंगा। (46)....उस की बारगाह में खुद को झुकाऊंगा और अपनी मजबूरी और मोहताजी का इज़हार करूंगा।

दुआ

ऐ हमारे रब عَزَّوَجَلَّ ! तू हम से इस को क़बूल फ़रमा, हमारी कमी को पूरा फ़रमा और हमें पलक झपकने बल्कि इस से कम मिक़्दार भी हमारे नफ़्सों के सिपुर्द न फ़रमा।

येह निय्यतें हज़रते सय्यिदुना शैख़ अली बिन अबू बक्र सकरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के वसाया से मन्क़ूल हैं।

मशाइख़ व बुज़ुर्गाने दीन से मुलाक़ात की सात निय्यतें

(1)....दीनी व दुन्यावी मुआमलात में उन से फ़ाएदा उठाऊंगा। (2)....हुज़ूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस हुक्म पर अमल करूंगा

कि جَالِسُوا الْكُبَرَاءَ या'नी बड़ों की बारगाह में बैठा करो।"[1] (3)....उन हस्तियों पर नाज़िल होने वाली रह़मत से हिस्सा पाऊंगा। (4)....उन की नज़रे करम का उम्मीदवार रहूंगा ताकि अल्लाह तआ़ला मेरी बिगड़ी ह़ालत को संवार दे। (5)....नेक लोगों की सोह़बत में बैठूंगा। (6)....येह उम्मीद रखूंगा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे दिल को पाकीज़ा फ़रमा दे। (7)....येह निय्यत रखूंगा कि अल्लाह करीम ज़ाहिर की त़रह़ मेरे बात़िन को भी उन बुज़ुर्गों से जोड़ दे।

नेक इजतिमाआ़त में ह़ाज़िरी की 11 निय्यतें

(1)....अपने वक़्त की ह़िफ़ाज़त करूंगा। (2)....ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़ुक्म पर अ़मल करूंगा। (3)....येह निय्यत करूंगा कि अल्लाह तआ़ला मुझे उस जगह से ग़ाइब न पाए जहां का उस ने मुझे ह़ुक्म फ़रमाया है। (4)....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का क़ुर्ब ह़ासिल करूंगा। (5)....वहां जा कर अपने बात़िन को साफ़ और सुथरा करूंगा। (6)....नेक इजतिमाअ़ के ह़ाज़िरीन की ता'दाद में इज़ाफ़ा करूंगा। (7)....अगर मुझे मौत आने वाली हुई तो मजलिसे ख़ैर में ह़ाज़िर हो कर अच्छी ह़ालत इख़्तियार करूंगा। (8)....ख़ुद को ख़ैरो भलाई वालों के साथ जोड़ूंगा। (9)....नफ़्सो शैत़ान और हवस व दुन्या पर ग़लबा ह़ासिल करूंगा। (10)....फ़िरिश्तों की मुशाबहत इख़्तियार करूंगा। (कि ऐसे इजतिमाआ़त में फ़िरिश्तों की आमद होती है) और (11)....बारगाहे इलाही में अपने दरजात बुलन्द करवाऊंगा।

इजतिमाए मीलाद में ह़ाज़िरी की 10 निय्यतें

(1)....ताजदारे अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ भेजने वाले इजतिमाअ़ में शिर्कत करूंगा। (2)....ऐसे इजतिमाअ़ में शिर्कत

[1] ...معجم کبیر، ۲۲/ ۱۲۵، حدیث: ۳۲۴

करूंगा जिस की रग़बत उ़लमाए किराम रखते हैं। (3)....हु़ज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सीरते मुक़द्दसा का बयान सुनूंगा। (4)....नसीह़त व हिदायत वाली मजलिस में ह़ाज़िर होऊंगा। (5)....हु़ज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आ़दाते मुबारका का बयान सुन कर उन्हें अपनाऊंगा। (6)....अपने वक़्त को ख़ैरो भलाई में सर्फ़ करूंगा। (7)....अहले ह़क़ (मीलाद मनाने वालों) के गुरौह में इज़ाफ़ा करूंगा। (8)....येह निय्यत रखूंगा कि इजतिमाए़ मीलाद में हु़ज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के जो अख़्लाक़ व अवसाफ़ सुनूं, **अल्लाह** तआ़ला मुझे भी उन में से हि़स्सा अ़ता फ़रमा दे। (9)....प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये जो करना वाजिब है मैं उस पर अ़मल करूंगा। (10)....इजतिमाए़ मीलाद में इस दुआ़ के साथ ह़ाज़िरी दूंगा कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमाए।

ज़ियारते क़ुबूर की सात निय्यतें

(1)....हु़ज़ूर ताजदारे दो जहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ व पैरवी करूंगा। (2)....आख़िरत, क़ब्र और मौत की ह़ालत को याद करूंगा। (3)....अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और दीगर मुसलमानों के लिये दुआ़ करूंगा। (4)....ज़ियारते क़ुबूर से ख़ुद को नसीह़त करूंगा। (5)....फ़ौतशुदगान के बा'ज़ हुक़ूक़ अदा करूंगा। (6)....फ़ौतशुदा लोगों से राबित़ा क़ाइम करूंगा। (7)....हु़ज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस हुक्म पर अ़मल करूंगा कि "तुम क़ब्रों की ज़ियारत किया करो।"[1]

[1]...مسلم، کتاب الجنائز، باب استئذان النبی صلی اللہ علیہ وسلم ... الخ، ص ۳۷۷، حدیث

ज़ियारते क़ुबूर की दुआ

क़ब्रों की ज़ियारत के वक़्त ज़ियारत करने वाला जो चाहे दुआ करे और येह कहना मुस्तहब है :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ وَيَرْحَمُ اللّٰهُ الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنَّا وَالْمُسْتَاْخِرِيْنَ، اَسْاَلُ اللّٰهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ

या'नी ऐ घरवालो ! मोमिनो और मुसलमानो ! तुम पर सलाम हो, बेशक **अल्लाह** तआ़ला ने चाहा तो हम भी तुम से मिलने वाले हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम में से आगे जाने वालों और पीछे रह जाने वालों पर रह़्म फ़रमाए, मैं **अल्लाह** करीम से हमारे और तुम्हारे लिये आ़फ़िय्यत का सुवाल करता हूं।[1]

गाड़ी चलाने की चार निय्यतें

(1)....सुवारी की दुआ़ का हमेशा ख़याल रखूंगा। (2)....ह़ाजत मन्दों और कमज़ोरों के कामों में मददगार बनूंगा। (3)....पैदल चलने वालों और बैठे हुओं को सलाम करूंगा। (4)....ट्रेफ़िक क़वानीन की पासदारी करूंगा।

मस्जिद की सफ़ाई की 10 निय्यतें

(1)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मस्जिदें आबाद करने वालों में शुमूलिय्यत इख़्तियार करूंगा। (2)....**अल्लाह** तआ़ला से बड़ा सवाब पाऊंगा। (3)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक पसन्दीदा लोगों में ख़ुद को शामिल करूंगा। (4)....मस्जिद की सफ़ाई के ज़रीए जन्नत में दाख़िले का मुस्तह़िक़ बनूंगा। (5)....सफ़ाई कर के नमाज़ियों को मस्जिद की जानिब राग़िब करूंगा। (6)....नमाज़ियों की ता'दाद में इज़ाफ़ा करूंगा। (7)....इस

[1]...مسلم، کتاب الجنائز، باب ما یقال عند دخول القبور...الخ، ص ۳۷۶، ۳۷۷، حدیث: ۲۲۵۶، ۲۲۵۷

निय्यत के साथ सफ़ाई करूंगा कि इस की बरकत से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे ज़ाहिरो बातिन को साफ़ सुथरा फ़रमा दे। (8)....अपने गुनाहों को मिटाऊंगा। (9)....जन्नत में अपने लिये हूरे ऐन की ता'दाद बढ़ाऊंगा। (10)....इजतिमाई ज़रूरिय्यात में अपने मुसलमान भाइयों का मददगार बनूंगा।

घर में रहने की छ निय्यतें

(1)....लोगों से ख़ुद को दूर रखूंगा। (2)....घरवालों की उन्सिय्यत का सामान करूंगा। (3)....घर के काम काज में घरवालों का हाथ बटाऊंगा। (4)....ख़ुद को फ़ितनों से महफ़ूज़ रखूंगा। (5)....हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को जो हुक्म दिया उस की पैरवी करूंगा कि "तुम्हें तुम्हारा घर काफ़ी हो।"[1] (6)....घरवालों से बात चीत करूंगा।

हाथ मिलाने की आठ निय्यतें

(1)....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करूंगा। (2)....मुसलमान भाइयों से महब्बत का इज़हार करूंगा। (3)....मुसलमानों से जान पहचान बनाऊंगा। (4)....मुसलमान भाइयों के लिये ख़ुशी ज़ाहिर करूंगा। (5)....मुसलमानों से उन का हाल चाल पूछूंगा। (6)....हाथ मिलाने की सुन्नत को ज़िन्दा रखूंगा। (7)....मुसलमान भाइयों का रंजो ग़म दूर करूंगा। (8)....मुसलमानों के सामने तवाज़ोअ़ व आजिज़ी का इज़हार करूंगा।

1...ترمذی، کتاب الزھد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، ۴/ ۱۸۲، حدیث: ۲۴۱۴، عن عقبۃ بن عامر

रिश्तेदारों से मुलाक़ात की पांच निय्यतें

(1)....उन के साथ महब्बत व उलफ़त का इज़हार करूंगा। (2)....उन से क़ुर्बत को बढ़ाऊंगा। (3)....उन के हालात वग़ैरा के मुतअ़ल्लिक़ पूछूंगा। (4)....उन के दिलों में ख़ुशी दाख़िल करूंगा। (5)....उन से दुआ़ की दरख़्वास्त करूंगा।

लाइब्रेरी में दाख़िल होने की 21 निय्यतें

(1)....इल्म हासिल करूंगा। (2)....इल्म को सहीह़ मआख़िज़ों से लूंगा। (3)....ह़क़ की तलाश और दुरुस्त इल्म के लिये कोशिश करूंगा। (4)....उ़लमाए किराम के लिखे और मुदव्वन किये हुए इल्मी आसार से बिल ख़ुसूस मदद लूंगा। (5)....अपने ईमान को मज़बूत करूंगा। (6)....इल्म वालों और उन के आसार की क़द्र करूंगा। (7)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'ज़ीम बजा लाऊंगा। (8)....बारी तआ़ला के फ़ुयूज़ात और फ़ज़्लो करम का उम्मीदवार होऊंगा। (9)....इल्मी बातें क़बूल करूंगा। (10)....इल्म को दूसरों तक पहुंचाऊंगा। (11)....इल्म से फ़ाएदा उठाऊंगा। (12)....अपने आप को नसीह़त करूंगा। (13)....इल्म से जो भी मुदव्वन हुवा उस से आगाही हासिल करूंगा। (14)....जो सीखूंगा उस की इक़्तिदा व पैरवी करूंगा। (15)....लाइब्रेरी में आमदो रफ़्त रखने वाले अहले इल्म, नेक लोगों और दिरायत व रिवायत के माहिरीन से फ़ाएदा उठाऊंगा। (16)....बा बरकत और भलाई वाली जगहों का इरादा करूंगा। (17)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो रह़मत से हिस्सा पाऊंगा। (18)....नसीह़त को क़बूल करूंगा। (19)....नफ़्स की तरबियत व इस्लाह़ करूंगा। (20)....नफ़्स को सलफ़े सालिह़ीन के अख़्लाक़ अपनाने पर उभारूंगा। (21)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और मख़्लूक़ के ह़ुक़ूक़ की पहचान हासिल करूंगा।

सदक़ा करने की 11 निय्यतें

(1)....**अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त का क़ुर्ब ह़ासिल करूंगा। (2)....अपने आप को रब तआ़ला की नाराज़ी से बचाऊंगा। (3)....ख़ुद को जहन्नम की आग से मह़फ़ूज़ करूंगा। (4)....मुसलमान भाइयों पर रह़्म करूंगा। (5)....अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब के साथ सिलए रेह़्मी करूंगा। (6)....माली त़ौर पर कमज़ोर लोगों की मदद करूंगा। (7)....हुज़ूर साहिबे जूदो अ़त़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुताबअ़त व पैरवी करूंगा। (8)....अपने मुसलमान भाइयों के दिलों में ख़ुशी दाख़िल करूंगा। (9)....अपने आप से और तमाम मुसलमानों से बलाएं दूर करूंगा। (10)....**अल्लाह** तआ़ला के दिये हुए रिज़्क़ में से ख़र्च करूंगा। (11)....नफ़्सो शैत़ान को ज़ेर करूंगा।

किताब की ख़रीदो फ़रोख़्त की सात निय्यतें

(1)....इस अ़मल से ज़ाहिरी व बात़िनी फ़ाएदा उठाऊंगा। (2)....अपना वक़्त भलाई के काम में सर्फ़ करूंगा। (3)....दूसरों को ख़ैरो भलाई सीखाऊंगा। (4)....इ़ल्म की ह़िफ़ाज़त करूंगा। (5)....इ़ल्म को आ़म करूंगा। (6)....इस अ़मल में मश्ग़ूल हो कर फ़ुज़ूल बातों से कनारा कशी इख़्तियार करूंगा। (7)....अगर कोई रिआ़यत त़लब करेगा तो उस के साथ तआ़वुन करूंगा।

अपने पास तस्बीह़ रखने की छ निय्यतें

(1)....सालिह़ीन की पैरवी करूंगा। (2)....नेक काम में इस से मदद लूंगा। (3)....वक़्त की ह़िफ़ाज़त करते हुए **अल्लाह** तआ़ला का ब

कसरत ज़िक्र करने वाला बनूंगा। (4)....सलफ़ सालिहीन की मुताबअ़त करूंगा। (5)....इस के ज़रीए़ मुख़्तलिफ़ अज़्कार की ता'दाद याद रखूंगा। (6)....अपने आ'ज़ा को इत़ाअ़त में मश्ग़ूल रखूंगा।

चादर इस्ति'माल करने की 10 निय्यतें

(1)....हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करूंगा। (2)....नमाज़ की सुन्नतों में से एक सुन्नत पर अ़मल करूंगा। (3)....नेक बन्दों की पैरवी करूंगा। (4)....सालिहीन से मुशाबहत इख़्तियार करूंगा। (5)....नेकूकारों के गुरौह में इज़ाफ़ा करूंगा। (6)....ख़ुद पर अल्लाह तआ़ला की ने'मत का इज़हार करूंगा। (7)....अपने लिबास की तक्मील करूंगा। (8)....नमाज़ की ता'ज़ीम के लिये ज़ीनत इख़्तियार करूंगा। (9)....अपने सत्र को छुपाऊंगा।

चादर ओढ़ने की दुआ़

(10)....येह दुआ़ पढ़ूंगा :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا الثَّوْبَ وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ

या'नी सब ख़ूबियां उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे येह कपड़ा पहनाया और मेरी ताक़त व कुव्वत के बिग़ैर (महज़ अपने फ़ज़्ल से) येह मुझे अ़त़ा फ़रमाया।[1]

घड़ी इस्ति'माल करने की चार निय्यतें

(1)....आ'माले ख़ैर के लिये अपने अवक़ात की हिफ़ाज़त करूंगा। (2)....नमाज़ के अवक़ात का ख़याल रखूंगा। (3)....वक़्त को तक़्सीम कारी के साथ चलाऊंगा। (4)....अपने अवक़ात का ध्यान रखूंगा।

[1]... ابو داود، کتاب اللباس، باب ما یقول اذا لبس ثوبا جدیدا، ۴/ ۵۹، حدیث: ۴۰۲۳

अ़जाइब घरों और तफ़रीह़ गाहों की पांच निय्यतें[1]

(1)....अपने रफ़ीक़ों के दिलों में ख़ुशी दाख़िल करूंगा । (2)....अपने दिल को राह़त व सुकून पहुंचाऊंगा । (3)....मुसलमान भाइयों की मदद करना सीखूंगा । (4)....दोस्तों से राबिते़ मज़बूत़ करूंगा । (5)....दोस्तों में इज़ाफ़ा करूंगा ।

अज़ान देने की 12 निय्यतें

(1)....एक अ़मले ख़ैर करूंगा । (2)....बा आवाज़े बुलन्द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करूंगा । (3)....लोगों को नमाज़ की ह़ाज़िरी पर उभारूंगा । (4)....इस निय्यत के साथ अज़ान दूंगा कि मेरी आवाज़ सुनने वाला हर कोई गवाही देगा कि येह **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करने वाला है । (5)....नमाज़ से पीछे रह जाने की बुराई को ख़त्म करूंगा । (6)....मेरी आवाज़ सुनने वाला हर कोई मेरे गवाही देने पर गवाह होगा । (7)....अम्र बिल मा'रूफ़ करूंगा या'नी नेकी का हुक्म दूंगा । (8)....ख़ुद को **अल्लाह** तआ़ला के ज़िक्र में मश्ग़ूल करूंगा । (9)....ग़ाफ़िलों के दरमियान ज़िक्रे इलाही करूंगा । (10)....शआ़इरे इस्लाम में से एक शिआ़र का इज़हार करूंगा । (11)....भलाई के कामों पर मुसलमानों की मदद करूंगा । (12)....हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत का इत्तिबाअ़ करूंगा ।

1....याद रहे कि आज कल तफ़रीह़ गाहों और पार्कों में उ़मूमन बे ह़याई और बे शर्मी के काम होते हैं, बद निगाही आ़म है और वहां त़रह़ त़रह़ के गुनाह होते हैं लिहाज़ा ऐसी जगहों में जाना ख़ुद को ख़त़रे में डालना है । अलबत्ता अगर किसी तफ़रीह़ गाह या पार्क में ऐसा नहीं होता तो बयान कर्दा और दीगर अच्छी निय्यतों के साथ वहां जाना यक़ीनन अज्रो सवाब का ज़रीआ़ बन सकता है । (अज़ अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

अज़ान सुनते वक़्त की दुआएं

जब बन्दा अज़ान सुने तो जिस त़रह़ मुअज़्ज़िन कहे येह भी उसी त़रह़ कहता जाए । ह़ज़रते सय्यिदुना यह़या رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारे बा'ज़ अह़बाब ने बयान किया कि जब मुअज़्ज़िन "حَیَّ عَلَی الصَّلٰوۃ" कहे तो सुनने वाला जवाब में येह कहे । "لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہ" और उन्हों ने फ़रमाया कि हम ने तुम्हारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को इसी त़रह़ जवाब देते सुना है[1] और जब इक़ामत में मुअज़्ज़िन "قَدْقَامَتِ الصَّلٰوۃ" कहे तो तुम जवाब में यूं कहो : اَقَامَهَااللّٰهُ وَاَدَامَهَامَادَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ (या'नी जब तक ज़मीनो आस्मान हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे क़ाइमो दाइम रखे) और जब अज़ाने फ़ज्र में मुअज़्ज़िन "اَلصَّلٰوۃُ خَیْرٌمِّنَ النَّوْم" कहे तो तुम यूं कहो "صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ وَنَصَحْتَ" (या'नी तू ने सच कहा, नेकी की और नसीह़त की)[2]।[3]

शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा का ह़ुसूल

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स अज़ान सुन कर यूं कहे :

"اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَاِنِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَاِنِ الَّذِیْ وَعَدْتَّهٗ"

---

1 ...بخاری، کتاب الاذان، باب مایقول اذا سمع المنادی، ۱/ ۲۲۳، حدیث: ۶۱۳

2 ....अज़ान का जवाब देने का मुफ़स्सल व आसान त़रीक़ा नीज़ अज़ान के फ़ज़ाइलो बरकात जानने के लिये **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत़बूआ़ 499 **सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल किताब "**नमाज़ के अह़काम**" सफ़ह़ा 138 ता 165 या 32 **सफ़ह़ात** पर मुश्तमिल मत़बूआ़ रिसाला "**फ़ैज़ाने अज़ान**" का मुत़ालआ़ कीजिये ।

3 ...ابو داود، کتاب الصلاۃ، باب مایقول اذا سمع الاقامۃ، ۱/ ۲۲۲، حدیث: ۵۲۸
احیاء العلوم، کتاب اسرار الصلاۃ، الباب الاول فی فضائل الصلاۃ... الخ، ۱/ ۲۰۰

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस दा'वते ताम्मा और सलाते क़ाइमा के मालिक तू ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को वसीला और फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमा और उन को मक़ामे मह़मूद में खड़ा कर जिस का तू ने उन से वा'दा किया है) ।" तो उस के लिये क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त ह़लाल है ।[1]

अज़ान सुन कर येह कलिमात भी कह लिये जाएं :

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِسَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ نَبِيًّا وَّ رَسُوْلًا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا

(या'नी मैं **अल्लाह** तआ़ला के रब होने, हमारे सरदार ह़ज़रते मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी व रसूल होने और इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हूं) ।[2]

मशरूबात पीने की 23 निय्यतें

(1)....**अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त पर क़ुव्वत ह़ासिल करूंगा। (2)....इन मशरूबात से मिलते जुलते जन्नती मशरूबात को याद करूंगा। (3)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम तख़्लीक़ और अ़जाइबाते क़ुदरत में ग़ौरो फ़िक्र करूंगा। (4)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़त़ाकर्दा रिज़्क़ में से खाऊं और पियूंगा। (5)....**अल्लाह** तआ़ला की पाकीज़ा और सुथरी चीज़ें खाऊंगा। (6)....जो काम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को मह़बूब है उस के लिये नशात़ या'नी दिल जमई और फ़रह़त व ताज़गी ह़ासिल करूंगा। (7)....ख़ैरो भलाई के लिये अपनी हिम्मत व ह़ौसले को पुख़्ता करूंगा। (8)....अगर नफ़्स त़लबे इ़ल्म या ह़िफ़्ज़े क़ुरआन या अस्बाक़ के याद करने में सुस्ती करेगा तो मशरूबात पी कर अपनी हिम्मत बढ़ाऊंगा। (9)....जिस्म जो हमारे पास

1 ...بخاری، کتاب الاذان، باب الدعاء عند النداء، ۱/ ۲۲۴، حدیث: ۶۱۴

2 ...مسلم، کتاب الصلاۃ، باب القول مثل قول المؤذن... الخ، ص ۱۶۳، حدیث: ۸۵۱

अमानत है इस की हिफ़ाज़त करूंगा। (10)....जिहाद के लिये हमा वक़्त ख़ुद को मुस्तइद (तय्यार) रखूंगा और कुव्वत हासिल करूंगा। (11)....अल्लाह तआ़ला के नेक बन्दे इन से जो निय्यत करते हैं वोह निय्यत रखूंगा। (12)....मशरूबात से सितम रसीदा और शिकस्ता दिलों की मदद करूंगा। (13)....हाजतें पूरी करने में मदद करूंगा। (14)....मुसलमान जो मुश्किल कामों के मोहताज होते हैं उन में शरीक हो कर उन का हाथ बटाऊंगा। (15)....अपनी हिम्मत व कुव्वत को अपने मुसलमान भाइयों की मदद में सर्फ़ करूंगा। (16)....उन से ईज़ा व तक्लीफ़ को दूर करूंगा। (17)....दुश्मनाने दीन और कुफ़्फ़ार पर बड़ाई का इज़हार करूंगा। (18)....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र और उस की ता'ज़ीम करूंगा। (19)....अल्लाह तआ़ला ने खाने पीने की जो चीज़ें बनाई हैं उन की अ़ज़मत व बुलन्दी में ग़ौरो फ़िक्र करूंगा। (20)....अल्लाह करीम ने जो चीज़ें मुझ पर फ़र्ज़ फ़रमाई हैं उन की अदाएगी पर कुव्वत हासिल करूंगा। (21)....मज़लूमों से ज़ुल्म और ज़ालिमों का क़हर दूर करने पर ताक़त हासिल करूंगा। (22)....अपने ख़ालिक़ व मालिक से अपना हिस्सा पाऊंगा। (23)....हम्दो शुक्र कर के अदाए हक़ की कोशिश करूंगा।

मिस्वाक की सात निय्यतें

(1)....सुन्नत पर अ़मल करूंगा। (2)....हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मिस्वाक से मुतअ़ल्लिक़ हुक्म की पैरवी करूंगा। (3)....कुरआने करीम की तिलावत के लिये अपने मुंह को साफ़ सुथरा करूंगा। (4)....नमाज़ में ज़िक्रे इलाही के लिये मुंह की सफ़ाई करूंगा। (5)....अपने मुंह की बू को पाकीज़ा रखूंगा। (6)....अपने दांतों को चमकदार बनाऊंगा। (7)....तहारत व नज़ाफ़त का एहतिमाम करूंगा।

मिस्वाक करने की दुआ

मिस्वाक करते वक़्त येह दुआ करना मुस्तहब है :

اَللّٰهُمَّ بَيِّضْ بِهٖ اَسْنَانِيْ وَشَدِّبِهٖ لَثَاتِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْهِ يَااَرْحَمَ الرَّاحِمِيْن

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस के ज़रीए मेरे दांतों को सफ़ेद और मसूढ़ों को मज़बूत फ़रमा दे और मेरे लिये इस में बरकत अ़ता फ़रमा, ऐ सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान।(1)

बुलन्द आवाज़ से तिलावत वग़ैरा की छ निय्यतें

जब रियाकारी का ख़ौफ़ न हो तो बुलन्द आवाज़ से तिलावत वग़ैरा की येह निय्यतें हो सकती हैं : (1)....अपने दिल को बेदार रखूंगा। (2)....ग़ौरो फ़िक्र के लिये अपने ख़याल व ध्यान को मुज्तमअ़ (इकठ्ठा) रखूंगा। (3)....अपनी समाअ़त को इस की जानिब लगाए रखूंगा। (4)....नींद को खुद से भगाऊंगा। (5)....जोशो नशात़ में इज़ाफ़ा करूंगा। (6)....ऊंगने वाले की नींद भगाऊंगा, ग़ाफ़िल को बेदार रखूंगा और उन्हें पुर जोश बनाऊंगा।

आख़िरी सफ़ों में नमाज़ पढ़ने की निय्यत

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन आ़मिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَافِر का बयान है कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه के साथ नमाज़ पढ़ी, उन्हों ने सफ़ों से पीछे हटना शुरूअ़ किया यहां तक कि आख़िरी सफ़ में जा पहुंचे। नमाज़ के बा'द मैं ने उन से अ़र्ज़ की : "क्या येह नहीं कहा गया कि सब से बेहतर सफ़ पहली सफ़ है ?" तो आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : "जी हां !

(1)...اسنی المطالب، کتاب الطهارة، باب صفة الوضوء، فصل فی سنن الوضوء، ۱/ ۱۹۴

मगर येह उम्मत तमाम उम्मतों में से ज़ियादा रह़्म की गई है । बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब अपने किसी बन्दे को नमाज़ में देखता है तो उसे भी और उस के पीछे जितने लोग हों सब को बख़्श देता है, मैं इस उम्मीद पर पीछे हो गया कि इन लोगों में से किसी की त़रफ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नज़रे रह़मत फ़रमाए तो मेरी भी बख़्शिश हो जाए ।"[1]

एक रिवायत के मुत़ाबिक़ उन्हों ने फ़रमाया कि मैं ने येह बात रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुनी है ।

लिहाज़ा आख़िरी सफ़ों में नमाज़ पढ़ने वाला ह़दीसे पाक में बयान कर्दा मग़्फ़िरत की उम्मीद की निय्यत करे और अगली सफ़ों में अपने आगे नमाज़ पढ़ने वाले के तुफ़ैल अपनी नमाज़ के क़बूल होने की भी निय्यत करे ।

तालाब वग़ैरा पर जाने की पांच निय्यतें[2]

(1)....ज़ाहिरो बात़िन को ग़ुस्ल दूंगा । (2)....ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत का इत्तिबाअ़ करूंगा । (3)....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

---

[1]...احیاء العلوم، کتاب اسرار الصلاۃ، الباب الخامس فضل الجمعۃ...الخ، بیان آداب الجمعۃ...الخ، ۱/۲۴۸

[2]....मौजूदा दौर में तालाब वग़ैरा तो उ़मूमन नहीं पाए जाते अलबत्ता स्विमिंग पुल्ज़ वग़ैरा बनाए जाते हैं जहां आ़म त़ौर पर सत्रपोशी का एहतिमाम बहुत कम होता है, लोग ! مَعَاذَاللہ नीकरें और छोटी छोटी चड्डियां पहन कर नहा रहे होते हैं जिस से उन के घुटने और रानें खुली हुई होती हैं जब कि मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से ले कर दोनों घुटनों समेत जिस्म का हिस्सा सत्र में दाख़िल है लिहाज़ा मर्द का बिला ज़रूरत इतना हिस्सा किसी को दिखाना या किसी और का देखना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । फिर येह कि बा'ज़ स्विमिंग पुल्ज़ में तो ! مَعَاذَاللہ ना मह़रम मर्द व औ़रत एक साथ नहाते हैं, येह सब बे ह़याई और गुनाह के काम हैं और ऐसी जगहों में जाने की शरीअ़त में मुमानअ़त है । अलबत्ता अगर किसी जगह येह चीज़ें न हों तो पर्दे की मुकम्मल रिआ़यत करते हुए बयान कर्दा निय्यतों के साथ स्विमिंग कर सकते हैं । (अज़ अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

की इताअ़त व फ़रमां बरदारी पर कुव्वत ह़ासिल करूंगा। (4)....अगर मुझ से कोई ऐसी जगह धुलने से रह गई जिस का धोना सुन्नत या ज़रूरी था उसे धोऊंगा। (5)....वहां बैठे लोगों के दिलों में ख़ुशी दाख़िल करूंगा। इन के इ़लावा जो भी अच्छी निय्यतें **अल्लाह** तआ़ला बन्दे को सिखाए वोह निय्यतें की जा सकती हैं।

दर्स में ह़ाज़िरी की छ निय्यतें

(1)....दर्स की मुफ़ीद बातों पर अ़मल करूंगा। (2)....दर्स सुन कर लोगों तक पहुंचाऊंगा। (3)....तवज्जोह और ख़ामोशी के साथ सुनूंगा ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे इस की समझ अ़ता फ़रमाए। (4)....दर्स देने वाले मशाइख़ से इमदाद त़लब करूंगा। (5)....**अल्लाह** तआ़ला की नवाज़िशात ह़ासिल करूंगा। (6)....अपने ख़यालात को जिला बख़्शूंगा।

मुसलमान भाइयों को नसीह़त करने की सात निय्यतें

(1)....अपने आप को और सामने वाले को नफ़्अ़ पहुंचाऊंगा। (2)....इस निय्यत से नसीह़त करूंगा कि **अल्लाह** तआ़ला मुझे मेरे ऐ़बों से आगाह फ़रमाए। (3)....हर लिह़ाज़ से इस के ज़रीए़ फ़ाएदा और इमदाद त़लब करूंगा। (4)....बुज़ुर्गाने दीन के त़रीक़े की पैरवी करूंगा। (5)....इ़ल्म और त़ालिबाने इ़ल्म की ख़िदमत करूंगा। (6)....नसीह़त के राइज निज़ाम की ह़िफ़ाज़त करूंगा। (7)....इस ज़िम्मेदारी को निभाने का शुऊ़र बेदार करूंगा।

मसाइल लिखने की तीन निय्यतें

(1)....इ़ल्म, इस के मसाइल और इस की बारीकियों की ह़िफ़ाज़त

करूंगा। (2)....इस निय्यत से लिखूंगा कि जो इन से वाक़िफ़ होगा वोह इन से नफ़्अ़ उठाएगा। (3)....यूं येह मेरे लिये सदक़ए जारिय्या हो जाएगा।

वुज़ू की छ निय्यतें

(1)....**अल्लाह** तआ़ला के हुक्म को बजा लाऊंगा। (2)....इस निय्यत से वुज़ू करूंगा कि **अल्लाह** करीम मुझे बाबे वुज़ू से जन्नत में दाख़िल फ़रमाए। (3)....वुज़ू की सुन्नतें अदा करूंगा। (4)....येह निय्यत रखूंगा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा ह़श्र उन लोगों के साथ फ़रमाए जिन के मुंह और हाथ आसारे वुज़ू से चमकते होंगे। (5)....नमाज़ पढ़ने की निय्यत से वुज़ू करूंगा। (6)....और येह कि इस की बरकत से **अल्लाह** तआ़ला मुझे ज़ाहिरी व बातिनी गुनाहों से पाक फ़रमाएगा।

वुज़ू करते वक़्त की दुआ़एं

यहां ह़ुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي की किताब "इह़याउल उ़लूमिद्दीन" से वुज़ू के बारे में वारिद दुआ़एं दर्ज की जातीं हैं

वुज़ू शुरूअ़ करते वक़्त की दुआ़ :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيٰطِيْنِ وَاَعُوْذُبِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं शयातीन के वस्वसों से तेरी पनाह चाहता हूं और ऐ मेरे रब ! इन के मेरे पास ह़ाज़िर होने से तेरी पनाह मांगता हूं।

दोनों हाथ धोते वक़्त की दुआ़ :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْيُمْنَ وَالْبَرَكَةَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الشُّؤْمِ وَالْهَلَكَة

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से बरकत का सुवाल करता हूं और बद बख़्ती व हलाकत से तेरी पनाह मांगता हूं।

कुल्ली करते वक़्त की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی تِلَاوَةِ كِتَابِكَ وَكَثْرَةِ الذِّكْرِ لَكَ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! अपनी किताब की तिलावत और अपने ज़िक्र की कसरत पर मेरी मदद फ़रमा।

नाक में पानी पहुंचाते वक़्त की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اَوْجِدْنِیْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ وَاَنْتَ عَنِّیْ رَاضٍ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मेरे लिये जन्नत की ख़ुश्बू बना दे और तू मुझ से राज़ी हो।

नाक साफ़ करते वक़्त की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ رَّوَائِحِ النَّارِ وَمِنْ سُوْءِ الدَّارِ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं जहन्नम की बदबूओं और बुरे घर (दोज़ख़) से तेरी पनाह मांगता हूं।

चेहरा धोते वक़्त की दुआ :

اَللّٰهُمَّ بَیِّضْ وَجْهِیْ بِنُوْرِكَ یَوْمَ تَبْیَضُّ وُجُوْهُ اَوْلِیَائِكَ وَلَا تُسَوِّدْ وَجْهِیْ بِظُلُمَاتِكَ یَوْمَ تَسْوَدُّ وُجُوْهُ اَعْدَائِكَ

या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! जिस दिन तेरे औलिया के चेहरे रोशन होंगे उस दिन अपने नूर से मेरे चेहरे को भी रोशन फ़रमा देना और जिस दिन तेरे दुश्मनों के चेहरे सियाह होंगे उस दिन सियाही से मेरा चेहरा सियाह न फ़रमाना।

सीधा हाथ धोते वक़्त की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِیْ كِتَابِیْ بِیَمِیْنِیْ وَحَاسِبْنِیْ حِسَابًا یَّسِیْرًا या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मेरा नामए आ'माल दाहने (सीधे) हाथ में देना और मुझ से आसान हिसाब करना।

उल्टा हाथ धोते वक़्त की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ تُعْطِیَنِیْ كِتَابِیْ بِشِمَالِیْ اَوْمِنْ وَّرَاءِ ظَهْرِیْ या'नी ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं इस बात से तेरी पनाह चाहता हूं कि तू मुझे मेरा आ'माल नामा बाएं (उल्टे) हाथ में या पीठ के पीछे से दे।

सर का मस्ह करते वक़्त की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اَغْشِنِیْ بِرَحْمَتِكَ وَاَنْزِلْ عَلَیَّ مِنْ بَرَكَاتِكَ وَاَظِلَّنِیْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ یَوْمَ لَا ظِلَّ اِلَّا ظِلُّكَ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे अपनी रह़मत से ढांप ले, मुझ पर अपनी बरकतें नाज़िल फ़रमा और मुझे उस दिन अ़र्श का साया अ़त़ा फ़रमाना जिस दिन तेरे अ़र्श के साए के सिवा कोई साया न होगा।

कानों का मस्ह करते वक़्त की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ الَّذِیْنَ یَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَیَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ اَللّٰهُمَّ اَسْمِعْنِیْ مُنَادِیَ الْجَنَّةِ مَعَ الْاَبْرَارِ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे उन में से बना दे जो बात सुन कर अच्छी बात पर अ़मल करते हैं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे नेक लोगों के साथ जन्नत के मुनादी की आवाज़ सुना।

गर्दन का मस्ह करते वक़्त की दुआ :

اَللّٰهُمَّ فُكَّ رَقَبَتِیْ مِنَ النَّارِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ السَّلَاسِلِ وَالْاَغْلَالِ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरी गर्दन आग से आज़ाद फ़रमा और मैं जहन्नम के तौ़क़ और ज़न्जीरों से तेरी पनाह मांगता हूं।

सीधा पाउं धोते वक़्त की दुआ :

اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْ قَدَمِیْ عَلَی الصِّرَاطِ الْمُسْتَقِیْمِ یَوْمَ تَزِلُّ الْاَقْدَامُ فِی النَّارِ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे उस दिन पुल सिरात़ पर साबित क़दमी अ़त़ा फ़रमा जिस दिन उस पर क़दम जहन्नम की त़रफ़ फिसलेंगे।

उल्टा पाउं धोते वक़्त की दुआ :

اَعُوْذُبِكَ اَنْ تَزِلَّ قَدَمِیْ عَنِ الصِّرَاطِ یَوْمَ تَزِلُّ فِیْهِ اَقْدَامُ الْمُنَافِقِیْنَ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जिस दिन पुल सिरात़ पर मुनाफ़िक़ीन के क़दम फिसल रहे होंगे उस दिन मैं अपने क़दम फिसलने से तेरी पनाह मांगता हूं।

वुज़ू के बा'द की दुआ

वुज़ू के बा'द येह दुआ पढ़े :

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ
مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ عَمِلْتُ سُوْءًا وَّ ظَلَمْتُ
نَفْسِيْ اَسْتَغْفِرُكَ اَللّٰهُمَّ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ فَاغْفِرْلِيْ وَتُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ اَللّٰهُمَّ
اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ وَاجْعَلْنِيْ مِنْ عِبَادِكَ الصَّالِحِيْنَ
وَاجْعَلْنِيْ عَبْدًا صَبُوْرًا شَكُوْرًا وَّاجْعَلْنِيْ اَذْكُرُكَ كَثِيْرًا وَّاُسَبِّحُكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا۔

या'नी मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूं कि ह़ज़रत मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं । ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! तेरे लिये पाकी है और तेरी ही ता'रीफ़ है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं ने बुराई की और अपनी जान पर ज़ुल्म किया। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से मग़्फ़िरत का त़लबगार हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं, पस मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा तू बहुत ज़ियादा तौबा क़बूल करने वाला, रह़्म फ़रमाने वाला है। ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मुझे तौबा करने वालों, पाक लोगों में कर दे, मुझे अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा, मुझे साबिरो शाकिर बन्दा बना, मुझे ऐसा बना दे कि कसरत से तेरा ज़िक्र करूं और सुब्ह़ो शाम तेरी पाकी बयान करता रहूं।

वुज़ू के बा'द वाली दुआ की फ़ज़ीलत

मन्क़ूल है कि जिस ने वुज़ू के बा'द येह कलिमात कहे उस के वुज़ू पर मोहर लगा दी जाएगी और उसे अ़र्श के नीचे बुलन्द कर दिया जाएगा। वोह हमेशा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह़ो तक़्दीस बयान करता रहेगा और वुज़ू करने वाले के लिये इस का सवाब क़ियामत तक लिखा जाता रहेगा।(1)

(1)...احیاء العلوم، کتاب اسرار الطهارة، القسم الثانی فی طهارة الاحداث، کیفیة الوضوء، ۱/۱۸۳، ۱۸۴

नया कपड़ा पहनने की छ निय्यतें

(1)....अपना सत्र छुपाऊंगा। (2)....ने'मत का इज़हार करूंगा। (3)....**अल्लाह** तआ़ला के लिये ह़म्दो शुक्र बजा लाऊंगा। (4)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये आ़जिज़ी व इन्किसारी करूंगा। (5)....किसी पर भी तकब्बुर नहीं करूंगा। (6)....उन ह़ुल्लों (मल्बूसात) को याद करूंगा जो **अल्लाह** तआ़ला अहले जन्नत को पहनाएगा ताकि उन के ह़ुसूल के लिये अपने नफ़्स को अच्छा करूं फिर मेरा नफ़्स मुझे नेक आ'माल पर उभारेगा यहां तक कि मैं भी जन्नती हो जाऊं।

नया कपड़ा पहनने की दुआ़

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ كَسَوْتَنِيْهِ اَسْاَلُكَ مِنْ خَيْرِهٖ وَخَيْرِ مَاصُنِعَ لَهٗ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّ مَاصُنِعَ لَهٗ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तेरे लिये ही सब ता'रीफ़ें हैं, तू ने मुझे येह पहनाया है, मैं तुझ से इस की भलाई और जिस मक़्सद के लिये येह बनाया गया है उस की भलाई का सुवाल करता हूं और मैं इस की बुराई से और जिस मक़्सद के लिये येह बनाया गया है उस की बुराई से तेरी पनाह मांगता हूं।

नया कपड़ा पहनने वाले को दुआ़

नया कपड़ा पहनने वाले को यूं दुआ़ दी जाए : تُبْلِىْ وَيُخْلِفُ اللّٰهُ تَعَالٰى या'नी आप इस को पुराना कीजिये और **अल्लाह** तआ़ला इस के बा'द दूसरा नसीब फ़रमाए।[1]

बाज़ार जाने की नव निय्यतें

(1)....ग़ाफ़िलों में **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करूंगा। (2)....जिस से मुलाक़ात हुई उसे सलाम करूंगा। (3)....रिज़्क़ त़लब करूंगा। (4)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें देखूंगा और उन पर शुक्र अदा करूंगा।

[1]...ابو داود، کتاب اللباس، باب مایقول اذا لبس ثوبا جدیدا، ۴/ ۵۹، حدیث: ۴۰۲۰

(5)....हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा व पैरवी करूंगा। (6)....नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा। (7)....कमज़ोर की मुआ़वनत करूंगा। (8)....मज़लूम की मदद करूंगा। (9)....बुराई को ख़त्म करूंगा वरना कम अज़ कम दिल में बुरा जानूंगा।

बाज़ार में दाख़िले की दुआ़

बाज़ार में दाख़िल हों तो येह पढ़ें :

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ
الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ كُلُّهٗ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये बादशाही है और तमाम ता'रीफ़ें उसी के लिये हैं, वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह हमेशा से ज़िन्दा है उसे मौत नहीं, सारी भलाई उसी के क़ब्ज़े में है और वोह हर शै पर क़ादिर है।[1]

बैतुल ख़ला में जाने की आठ निय्यतें

(1)....इन्सान के कमज़ोर होने का ए'तिराफ़ करूंगा। (2)....येह इक़रार करूंगा कि इन्सान निकलने वाली चीज़ को ब आसानी निकालने से भी आ़जिज़ है। (3)....नुक़्सान देह शै से ख़ुद को बचाने का जो हुक्मे इलाही है उस की पैरवी करूंगा। (4)....बैतुल ख़ला के साथ जो सुन्नतें ख़ास हैं उन्हें बजा लाऊंगा। (5)....हिस्सी व मा'नवी नजासतों से पाकी हासिल करूंगा। (6)....क़ल्बी ज़िक्र से ग़ाफ़िल नहीं रहूंगा।[2] (7)....तन्हाई

1...ترمذی، کتاب الدعوات، باب مایقول اذا دخل السوق، ۵/ ۲۷۰، حدیث: ۳۴۳۹

2....इस्तिन्जा करते वक़्त किसी मस्अलए दीनी में ग़ौर न करे कि बाइ़से महरूमी है और छींक या सलाम या अज़ान का जवाब ज़बान से न दे और अगर छींके तो ज़बान से اَلْحَمْدُ لِلّٰه न कहे, दिल में कह ले। (बहारे शरीअ़त, हिस्सा दुवुम, 1 / 409)

में भी ख़ौफ़े ख़ुदा दिल में रखूंगा जैसा कि लोगों के दरमियान रखता हूं। (8)....हैबत के सबब इन्किसारी करूंगा।

बैतुल ख़ला में दाख़िले से पहले की दुआ

इस्तिन्जा ख़ाने में दाख़िल होने लगे तो पहले अपना उल्टा पाउं बढ़ाए और दाख़िल होने से पहले येह दुआ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ[1] الرِّجْسِ النَّجِسِ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ[2]

या'नी अल्लाह तआ़ला के नाम से शुरूअ़, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! मैं नापाक व ख़बीस मर्दूद शैत़ान से तेरी पनाह चाहता हूं।

बैतुल ख़ला से निकलने के बा'द की दुआ

जब बैतुल ख़ला से निकलने लगे तो सीधा पाऊं बढ़ाए, बाहर निकल कर पहले तीन बार येह कहे "غُفْرَانَكَ" फिर येह दुआ पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذَاقَنِیْ لَذَّتَهٗ وَاَبْقٰی مَنْفَعَتَهٗ وَاَخْرَجَ عَنِّیْ اَذَاهُ

या'नी सब ख़ूबियां उस अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे इस की लज़्ज़त चखाई, इस के फ़ाएदे को बाक़ी रखा और इस की तक्लीफ़ को मुझ से दूर कर दिया।[3]

फिर येह पढ़े : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّی الْاَذٰی وَعَافَانِیْ या'नी तमाम ता'रीफ़ें उस अल्लाह तआ़ला के लिये जिस ने मुझ से अज़िय्यत को दूर किया और मुझे आ़फ़िय्यत अ़त़ा फ़रमाई।[4]

---

1 ...بخاری، کتاب الوضوء، باب مایقول عند الخلاء، ۱/ ۷۳، حدیث: ۱۴۲

2 ...معجم کبیر، ۵/ ۲۰۴، حدیث: ۵۰۹۹

3 ...ابو داود، کتاب الطھارۃ، باب مایقول الرجل اذا خرج من الخلاء، ۱/ ۴۵، حدیث: ۳۰
شعب الایمان، باب فی تعدید نعم اللّٰہ، ۴/ ۱۱۳، حدیث: ۴۴۶۹

4 ...ابن ماجہ، کتاب الطھارۃ، باب مایقول اذا خرج من الخلاء، ۱/ ۱۹۳، حدیث: ۳۰۱

खाना खाने की नव निय्यतें

(1)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इताअ़त व फ़रमां बरदारी पर कुव्वत हासिल करूंगा। (2)....**अल्लाह** तआ़ला के हुक्म पर अ़मल करूंगा। (3)....इताअ़त में मुस्तइद (तय्यार) रहने के लिये अहले जन्नत के खाने को याद करूंगा। (4)....गुनाहों से दूर रहने के लिये दोज़ख़ियों के खाने को पेशे नज़र रखूंगा। (5)....खाना अ़ता करने पर **अल्लाह** करीम का शुक्र बजा लाऊंगा। (6)....खाने के आदाब पर अ़मल करूंगा।[1] (7)....मुसलमानों के दिल में ख़ुशी दाख़िल करूंगा। (8)....इन्सानी सिह़्ह़त की ह़िफ़ाज़त करूंगा। (9)....अमानते जिस्म की ह़िफ़ाज़त करूंगा।

खाना खाने से पहले की दुआ़

खाना खाने से क़ब्ल येह दुआ़ पढ़ी जाए :

بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَاَطْعِمْنَا خَيْرًا مِّنْهُ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ़, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें इस खाने में बरकत अ़ता फ़रमा और हमें इस से बेहतर खिला।[2]

अगर कोई शुरूअ़ में दुआ़ पढ़ना भूल जाए तो यूं पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ या'नी खाने के शुरूअ़ व आख़िर में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही के नाम से खाता हूं।[3]

1....खाने के आदाब से आगाही ह़ासिल करने के लिये शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना **अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मायानाज़ तस्नीफ़ "**आदाबे त़आ़म**" का मुत़ालआ़ कीजिये।

2...ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب اللبن، ۴/ ۳۵، حدیث: ۳۳۲۲

مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الاطعمۃ، باب فی التسمیۃ علی الطعام، ۵/ ۵۶۴، حدیث: ۱۱

3...مصنف ابن ابی شیبۃ، کتاب الاطعمۃ، باب فی التسمیۃ علی الطعام، ۵/ ۵۶۳، حدیث: ۳

खाना खाने के बा'द की दुआ

जब खाना खा चुके तो येह दुआ पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ या'नी तमाम ता'रीफ़ें उस **अल्लाह** करीम के लिये जिस ने मुझे येह खाना खिलाया और मेरी ताक़त व कुव्वत के बिग़ैर येह मुझे अ़ता फ़रमाया।[1]

क़हवा और चाए पीने की चार निय्यतें

(1)....जिन बुज़ुर्गों ने क़हवा व चाए इस्ति'माल फ़रमाई है उन की पैरवी करूंगा। (2)....इबादत के लिये नशात़ व ताज़गी ह़ासिल करूंगा। (3)....किसी के हां चाए पी कर उस मेज़बान को ख़ुश करूंगा। (4)....पीने की सुन्नतों और आदाब पर अ़मल करूंगा।

तिजारत की 20 निय्यतें

(1)....अपने आप को ह़राम से बचाऊंगा। (2)....बक़दरे ज़रूरत रोज़ी ह़ासिल करूंगा। (3)....ख़ुद को लोगों से मांगने से बचाऊंगा। (4)....अवलाद और घरवालों में से अपने ज़ेरे कफ़ालत अफ़राद का ख़र्च उठाऊंगा। (5)....रिश्तेदारों की ख़िदमत करूंगा। (6)....फ़ुक़रा व मसाकीन पर सदक़ा करूंगा। (7)....कमज़ोरों और मिस्कीनों की मदद करूंगा। (8)....लोगों के साथ मुआ़मलात पर सब्र करूंगा। (9)....उन की गुस्सा दिलाने वाली बातों को बरदाश्त करूंगा। (10)....मेहमान को इ़ज़्ज़त दूंगा। (11)....कोई सौदा वापस करवाना चाहेगा तो वापस कर लूंगा। (12)....फ़र्ज़े किफ़ाया पर अ़मल करूंगा। (13)....लोगों की ज़रूरतों में उन का हाथ बटाऊंगा। (14)....मुसलमानों को नसीह़तें करूंगा। (15)....अपने मुआ़मले

[1]...ابن ماجہ، کتاب الاطعمۃ، باب ما یقال اذا فرغ من الطعام، ۴/ ۲۰، حدیث: ۳۲۸۵

में इन्साफ़ व एहसान की राह इख़्तियार करूंगा। (16)....लोगों को नेकी की दा'वत दूंगा। (17)....बाज़ार में नज़र आने वाली हर बुराई से मन्अ़ करूंगा। (18)....तमाम फ़र्ज़े किफ़ाया को अदा करूंगा। (19)....अपनी कमाई के ज़रीए़ दीन का मददगार बनूंगा। (20)....तमाम मुसलमानों के लिये वोही पसन्द करूंगा जो अपने लिये पसन्द करता हूं।

लोगों की ह़ाजतें पूरी करने और उन का हाथ बटाने की छ नियतें

(1)....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म की पैरवी करूंगा। (2)....इस निय्यत के साथ मदद करूंगा कि अल्लाह तआ़ला मेरी मदद फ़रमाएगा। (3)....प्यारे आक़ा, दो आ़लम के दाता صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करूंगा। (4)....लोगों के दिलों में ख़ुशी दाख़िल करूंगा। (5)....आ़जिज़ी व इन्किसारी का इज़हार करूंगा। (6)....येह निय्यत रखूंगा कि अल्लाह करीम मेरी ह़ाजत के लिये भी मददगार मामूर फ़रमाएगा।

पालतू जानवर ख़रीदने की सात नियतें

(1)....इन के साथ मेहरबानी व शफ़्क़त भरा सुलूक करूंगा। (2)....इस निय्यत से ख़रीदूंगा कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इन के सबब मुझ पर रह़म फ़रमाए। (3)....इन के हुक़ूक़ की रिआ़यत करूंगा। (4)....इन के मुआ़मले में बरदाश्त से काम लूंगा। (5)....इन को अल्लाह तआ़ला का रिज़्क़ पहुंचाने का सबब बनूंगा। (6)....रह़मत व शफ़्क़त का बरताव सीखूंगा। (7)....अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ात में ग़ौरो फ़िक्र करूंगा।

मुर्ग़ की आवाज़ सुनें तो क्या करें ?

रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब तुम मुर्ग़ की पुकार सुनो तो **अल्लाह** तआ़ला से उस का फ़ज़्ल मांगो क्यूंकि उस ने फ़िरिश्ते को देखा और अगर तुम गधे का रेंकना सुनो तो शैत़ान मर्दूद से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगो क्यूंकि उस ने शैत़ान को देखा ।[1]

अनदेखी मख़्लूक़

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, शफ़ीए आ'ज़म صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जब रात में कुत्तों का भोंकना और गधे का रेंकना सुनो तो उन से **अल्लाह** तआ़ला की पनाह मांगो क्यूंकि वोह उसे देखते हैं जिसे तुम नहीं देख सकते ।[2]

सुवारी वग़ैरा ख़रीदने की चार निय्यतें

(1)....ख़ुद पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों का इज़हार करूंगा । (2)....जो गाड़ी वग़ैरा नहीं ख़रीद सकते उन की मदद करूंगा । (3)....इसे ख़ैरो भलाई के कामों में इस्ति'माल करूंगा । (4)....लोगों की ह़ाजतें पूरी करूंगा ।

गाड़ी पर सुवार होने की दुआ़

بِسْمِ اللّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ، اَلْحَمْدُ لِلّٰه، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَا یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

1...بخاری، کتاب بدء الخلق، باب خیر مال المسلم غنم... الخ، ۲/ ۴۰۵، حدیث: ۳۳۰۳

2...ابو داود، کتاب الادب، باب فھیق الحمیر ونباح الکلاب، ۴/ ۴۲۳، حدیث: ۵۱۰۳

या'नी **अल्लाह** तआ़ला के नाम से शुरूअ़, तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, पाक है वोह ज़ात जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे क़ाबू में आने की न थी और हम अपने रब तआ़ला की त़रफ़ फिरने वाले हैं, तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** तआ़ला के लिये, वोह सब ख़ूबियों सराहा है, तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, तेरे लिये पाकी है ऐ हमारे परवर दगार ! बेशक मैं ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया पस तू मुझे बख़्श दे क्यूंकि तेरे सिवा कोई भी गुनाहों को बख़्शने वाला नहीं।[1]

मरीज़ से मुलाक़ात की छ निय्यतें

(1)....मुसलमान का ह़क़ अदा करूंगा। (2)....ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुक्म पर अ़मल करूंगा। (3)....सुन्नते रसूल की पैरवी करूंगा। (4)....मरीज़ से अपने लिये आ़फ़िय्यत की दुआ़ करवाऊंगा। (5)....उस के दिल में ख़ुशी दाख़िल करूंगा। (6)....उस की ज़रूरिय्यात में तआ़वुन करूंगा।

इयादत करते वक़्त की दो दुआ़एं

(1)....मरीज़ के लिये यूं दुआ़ करो : لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَآءَ الله या'नी कोई ह़रज की बात नहीं اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ येह मरज़ गुनाहों से पाक करने वाला है।[2]

(2)....सात बार येह दुआ़ पढ़े :

اَسْاَلُ اللهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ या'नी मैं अ़ज़मत वाले **अल्लाह**

1 ...ابو داود، كتاب الجهاد، باب ما يقول الرجل اذا ركب، ۳/ ۴۹، حديث: ۲۶۰۲

2 ...بخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوة فی الاسلام، ۲/ ۵۰۵، حديث: ۳۶۱۶

عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करता हूं जो अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है कि वोह तुझ को शिफ़ा दे।[1]

उ़र्स वग़ैरा में ह़ाज़िरी की आठ निय्यतें

(1)....मज़ारात व कुबूर की ज़ियारत करूंगा। (2)....हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करूंगा (कि आप हर साल शुहदाए उ़हुद के मज़ारात पर तशरीफ़ ले जाते थे)। (3)....अहले ह़क़ के गुरौह में इज़ाफ़ा करूंगा। (4)....सलफ़ सालिह़ीन की पैरवी करूंगा। (5)....ख़ैर व भलाई पर जम्अ़ होने वालों का ह़िस्सा बनूंगा। (6)....ह़ाज़िरीन के साथ दुआ़ में शिर्कत करूंगा। (7)....मुसलमान भाइयों से जान पहचान बनाऊंगा। (8)....बारगाहे इलाही से कोई नवाज़िश व अ़त़ा पाऊंगा।

हस्पताल वग़ैरा जाने की 35 निय्यतें

(1)....मरीज़ों के लिये **अल्लाह** तआ़ला से शिफ़ा व आ़फ़िय्यत त़लब करूंगा। (2)....उन के इलाज में कोशिश करूंगा इस निय्यत के साथ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हर मरज़ के लिये दवा पैदा फ़रमाई है। (3)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो जूद का त़लबगार रहूंगा। (4)....**अल्लाह** तआ़ला की क़ुदरत के मनाज़िर देखूंगा। (5)....मरीज़ों और ज़ख़्मियों की ग़म ख़्वारी करूंगा। (6)....उन के दिलों में ख़ुशी व सुरूर दाख़िल करूंगा। (7)....नेकी व तक़्वा पर तआ़वुन करूंगा। (8)....उन्हें नसीह़तें करूंगा। (9)....उन से दुआ़ की दरख़्वास्त करूंगा। (10)....क़ुदरते इलाही के सामने आ़जिज़ होने का इक़रार करूंगा। (11)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ैसले पर राज़ी रहूंगा। (12)....**अल्लाह** तआ़ला के अ़ज़ीम फ़ज़्लो क़ुदरत को याद

[1]...ابو داود، کتاب الجنائز، باب الدعاء للمریض عند العیادۃ، ۳/ ۲۵۱، حدیث: ۳۱۰۶

करूंगा और याद दिलाऊंगा। (13)....ज़िक्रे इलाही करूंगा और उस के दर पे रहूंगा। (14)....ऐसी जगहों पर जाऊंगा जो कुदरते बारी तआ़ला की याद दिलाती हैं। (15)....उन को दरपेश कामों में मदद करूंगा। (16)....ज़ाहिरी व बातिनी ग़म ख़्वारी करूंगा। (17)....वोह तमाम निय्यतें रखूंगा जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे करते हैं। (18)....उन्हें फ़ाएदा पहुंचाऊंगा और उन से फ़ाएदा ह़ासिल भी करूंगा। (19)....इल्मे दीन आ़म करूंगा। (20)....उन्हें **अल्लाह** तआ़ला की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी की त़रफ़ बुलाऊंगा। (21)....लोगों के साथ ख़ुश ख़ुल्क़ी का मुज़ाहरा करूंगा। (22)....लोगों की रहनुमाई करूंगा। (23)....उन्हें नसीह़तें करूंगा। (24)....उन की त़रफ़ से पहुंचने वाली अज़िय्यत पर सब्र करूंगा। (25)....अपनी इ़ज़्ज़त लोगों के लिये मुबाह़ कर दूंगा कि अगर कोई बे इ़ज़्ज़ती करेगा तो उस से उलझूंगा नहीं। (26)....इल्म सीख कर उस पर अ़मल करूंगा। (27)....अपने सारे दिन में हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इत्तिबाअ़ करूंगा। (28)....लोगों से किसी अन्देशे के पेशे नज़र सर को झुका कर रखूंगा। (29)....अपने इरादे को पुख़्ता रखूंगा। (30)....त़वील ख़ामोशी इख़्तियार करूंगा। (31)....अपने आ'ज़ाए बदन को पुर सुकून रखूंगा। (32)....अह़काम की पैरवी में सबक़त करूंगा। (33)....तक़्दीर पर ए'तिराज़ नहीं करूंगा। (34)....हमेशा ग़ौरो फ़िक्र करता रहूंगा। (35)....**अल्लाह** करीम के फ़ज़्लो करम पर भरोसा रखूंगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ह़द्दाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْجَوَاد फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला तुम पर रह़्म फ़रमाए, निय्यत का अच्छा रखना और उस का ख़ालिस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये होना तुम पर लाज़िम है।

आप ने अपनी किताब "अल ह़िकम" में फ़रमाया :

مَنْ اَصْلَحَ نِيَّتَهٗ بَلَغَ اُمْنِيَّتَهٗ या'नी जिस ने अपनी निय्यत अच्छी कर ली वोह

अपनी आरज़ूओं को पहुंच गया।''(1) इसी मफ़्हूम की एक बात आप ने येह फ़रमाई : اِذَاصَلُحَتِ الْمَقَاصِدُلَمْ يَخِبِّ الْقَاصِدُ या'नी जब इरादे अच्छे हों तो क़ासिद ख़ियानत नहीं करता।''(2) और हमारे हां अ़वाम कहती है : اَلنِّيَّةُ مَطِيَّةٌ या'नी निय्यत सुवारी है। और "مَطِيَّة" की जम्अ़ "مَطَايَا" आती है और येह वोह ऊंट होते हैं जिन को सफ़र के लिये तय्यार किया जाता है।

सफ़र की 11 निय्यतें

(1)....सफ़र के मुतअ़ल्लिक़ हुक्मे नबवी की पैरवी करूंगा। (2)....ज़ाहिरी व बातिनी रिज़्क़ तलाश करूंगा। (3)....ह़लाल रोज़ी ह़ासिल करूंगा। (4)....इन तमाम बातों में रिज़ाए रब्बुल अनाम को पेशे नज़र रखूंगा। (5)....जहां जा रहा हूं वहां के नेक लोगों की ज़ियारत करूंगा। (6)....उन बुज़ुर्गों की बरकतें ह़ासिल करूंगा। (7)....सफ़र में जो इ़ल्म ह़ासिल होगा उस से बन्दों को नफ़्अ़ पहुंचाऊंगा। (8)....नावाक़िफ़ों को इ़ल्म सीखाऊंगा। (9)....गुमराह लोगों की दुरुस्त सम्त में रहनुमाई करूंगा। (10)....ह़दीस शरीफ़ में सफ़र से सिह़ह़त के मिलने का ज़िक्र है, उसे ह़ासिल करूंगा। (11)....ज़ाहिरी व बातिनी बीमारियों से शिफ़ा ह़ासिल करूंगा।

येह कलाम ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ली बिन मुह़म्मद ह़ब्शी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى की किताब "وَقَفَاتٌ تَاَمُّلِيَّةٌ عَلٰى جَانِبِ الْوَصَايَاوَالْاِجَازَاتِ الْحَبْشِيَّة" से लिया गया है।

(1)... كتاب الحكم للحداد، ص ٢٢

(2)... كتاب الحكم للحداد، ص ٢٢

सफ़र की दुआ

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़र पर रवाना होते तो यूं कहते :

اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّا اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ، اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْاَلُكَ فِیْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰى وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضٰى، اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهٗ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَالْخَلِيْفَةُ فِی الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَاٰبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْٓءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَالْاَهْلِ

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है। पाक है वोह ज़ात जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे क़ाबू में आने की न थी और हम अपने रब عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ लौटने वाले हैं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम अपने इस सफ़र में तुझ से नेकी, तक़्वा और ऐसे अ़मल का सुवाल करते हैं जो तुझे पसन्द हो। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारे इस सफ़र को हम पर आसान फ़रमा और इस की मसाफ़त को हमारे लिये कम कर दे। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! सफ़र में तू ही हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला है और घरवालों का निगहबान है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं सफ़र की मशक़्क़तों, बुरे इन्तिज़ार और माल व घरवालों में बुरी वापसी से तेरी पनाह मांगता हूं।

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब सफ़र से वापस लौटते तो येही कलिमात फ़रमाते और इतने अल्फ़ाज़ बढ़ा देते : اٰيِبُوْنَ، تَآئِبُوْنَ، عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ या'नी हम लौटने वाले, तौबा करने वाले, इबादत करने वाले और अपने रब عَزَّوَجَلَّ की हम्दो सना करने वाले हैं।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1 ...مسلم، کتاب الحج، باب ما یقول اذا رکب الی سفر الحج وغیرہ، ص ۵۳۸، حدیث: ۳۲۷۵

सय्यिदुना हूद عَلَيْهِ السَّلَام के मज़ार की ज़ियारत की 49 निय्यतें

ज़ियारत के लिये जाने वाले जब तुम इरादा कर लो तो अपने गुमान को अच्छा करो, दिल में मज़ारे पाक की अ़ज़मत को बिठाओ और ज़ियादा से ज़ियादा अच्छी निय्यतें करो जो तुम्हें रब्बे करीम का क़ुर्ब अ़ता करें।

बुज़ुर्गों ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़द्दस नबी ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلَيْهِ السَّلَام के मज़ारे मुबारक की ज़ियारत के मुतअ़ल्लिक़ बहुत सारी अच्छी निय्यतें और अच्छे मक़ासिद तह़रीर फ़रमाए हैं, तुम इन निय्यतों और मक़ासिद को उन की कुतुब में देख सकते हो और जो कोशिश करता है पा लेता है और तुम वहां सैर सपाटे और तफ़रीह़ के इरादे से मत जाओ बल्कि बुलन्द मरातिब और मज़बूत़ मक़ासिद पाने के लिये जाओ।

अब मैं **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द, उसी पर भरोसा और उसी से मदद त़लब करते हुए निय्यतें बयान करता हूं :

(1)....दर्जे ज़ैल फ़रामीने बारी तआ़ला पर अ़मल करूंगा :

(۱)...هُوَالَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِیْ مَنَاكِبِهَا (پ۲۹،الملک:۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *वोही है जिस ने तुम्हारे लिये ज़मीन राम (ताबेअ़) कर दी तो उस के रस्तों में चलो।*

(۲)...قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ (پ۱۱،یونس:۱۰۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तुम फ़रमाओ देखो आस्मानों और ज़मीन में क्या क्या है।*

(۳)...سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِى الْاٰفَاقِ (پ۲۵، حم السجدة:۵۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अभी हम उन्हें दिखाएंगे अपनी आयतें दुन्या भर में।*

(2)....एक नबिय्ये मुर्सल ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلَيْهِ السَّلَام के मज़ारे पाक की ज़ियारत करूंगा। (3)....इस मुअ़ज़्ज़ज़ जगह में हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़ानिय्यत ह़ासिल करूंगा। (4)....इल्म ह़ासिल करूंगा और दूसरों को सीखाऊंगा। (5)....वा'ज़ो नसीह़त की बातें सुनूंगा। (6)....मा'रिफ़ते इलाही रखने वालों के चेहरों पर नज़र डालूंगा। (7)....ऐसी हस्तियों से मदद त़लब करूंगा। (8)....ह़ज़राते उ़लमाए किराम की बारगाहों में बैठूंगा। (9)....इल्म की मजलिसों में ह़ाज़िरी दूंगा। (10)....मुसलमानों को फ़ाएदा पहुंचाऊंगा। (11)....अपनी ज़ात के लिये नफ़्अ़ उठाऊंगा। (12)....मुझे कोई हुक्म देगा तो उस की इत़ाअ़त करूंगा। (13)....अपने वालिदैन के हुक्म की पैरवी करूंगा। (14)....बा बरकत जगहों में इ़बादत करूंगा। (15)....इन जगहों में इ़बादत कर के ज़मीन को अपने लिये गवाह बनाऊंगा। (16)....हुज़ूर ताजदारे ख़त्मे नबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ व कमालात सुनूंगा। (17)....क़ुरआने करीम की तिलावत सुनूंगा। (18)...."لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" कहूंगा। (19)....तस्बीह़ या'नी سُبْحٰنَ اللّٰه कहूंगा। (20)....अस्तग़फ़ार करूंगा। (21)....हुज़ूर इमामुल अम्बिया ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلَيْهِ السَّلَام पर दुरूद भेजूंगा। (22)....ह़ज़राते उ़लमाए किराम की इक़्तिदा में नमाज़े बा जमाअ़त अदा करूंगा। (23)....औलियाए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमाए किराम के मज़ारात की ज़ियारत करूंगा ताकि उन के मज़ाराते मुक़द्दसा को आबाद रख कर उन की ता'लीमात को आ़म किया जाए। (24)....बार बार उन की बरकतें

हासिल करूंगा। (25)....मुअ़ज़्ज़ज़ मक़ाम पर सदक़ा व ख़ैरात करूंगा। (26)....ह़ज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, फ़िरिश्तों और नेक बन्दों पर सलाम भेजूंगा। (27)....ऐसे मजमए़ में शामिल हो जाऊंगा जिन के बारे में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : لَاتَجْتَمِعُ اُمَّتِیْ عَلٰی ضَلَالَةٍ या'नी मेरी उम्मत किसी गुमराही पर जम्अ़ नहीं हो सकती।[1] (28)....मौक़अ़ मिला तो वहां अज़ान व इक़ामत कहूंगा। (29)....आने वाले मेहमानों और ज़ाइरीन की ख़िदमत करूंगा। (30)....नाबीना की रहनुमाई करूंगा। (31)....सिर्री व जहरी त़ौर पर **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र करूंगा। (32)....एक वक़्त में दो नमाज़ों को जम्अ़ करूंगा।[2] (33)....रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ (जैसे पथ्थर–कांटे

1...مسند احمد، حدیث ابی بصرة الغفاری، ۱۰/ ۳۴۹، حدیث: ۲۷۲۹۳

2....येह निय्यत शाफ़ेई इस्लामी भाइयों के लिये है।
अह़नाफ़ का मौक़िफ़ इस बारे में येह है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नबिय्ये करीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم के इरशादात से नमाज़े फ़र्ज़ का एक ख़ास वक़्त जुदागाना मुक़र्रर फ़रमाया है कि न उस से पहले नमाज़ की सिह़्ह़त न उस के बा'द ताख़ीर की इजाज़त, ज़ुह्रीन (ज़ोहर व अ़स्र) अ़र्फ़ा व इशाईन (मग़रिब व इशा) मुज़्दलिफ़ा के सिवा दो नमाज़ों का क़स्दन एक वक़्त में जम्अ़ करना सफ़रन ह़ज़रन (या'नी ह़ालते सफ़र व इक़ामत में) हरगिज़ किसी त़रह़ जाइज़ नहीं। क़ुरआने अ़ज़ीम व अह़ादीसे सिह़ाह़ सय्यिदुल मुर्सलीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस की मुमानअ़त पर शाहिद अ़द्ल हैं। येही मज़्हब है जय्यिद सह़ाबए किराम, ताबेईने इ़ज़ाम, अइम्मए दीन व अकाबिरे तब्ए़ ताबेईन رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن का। तह़क़ीक़े मक़ाम येह है कि जम्अ़ बैनस्सलातैन या'नी दो नमाज़ें मिला कर पढ़ना दो क़िस्म (का) है : **जम्ए़ फ़े'ली** जिसे जम्ए़ सौरी भी कहते हैं कि वाक़ेअ़ में हर नमाज़ अपने वक़्त में वाक़ेअ़ मगर अदा में मिल जाएं जैसे ज़ोहर अपने आख़िर वक़्त में पढ़ी कि इस के ख़त्म पर वक़्ते अ़स्र आ गया अब फ़ौरन अ़स्र अव्वल वक़्त पढ़ ली, हुईं तो दोनों अपने अपने वक़्त और फ़े'लन व सूरतन मिल गईं। इसी त़रह़ मग़रिब में देर की यहां तक कि शफ़क़ डूबने पर आई उस वक़्त पढ़ी इधर फ़ारिग़ हुए कि शफ़क़ डूब गई इशा का वक़्त हो गया वोह पढ़ ली, ऐसा मिलाना ब उ़ज़्रे मरज़ व ज़रूरते सफ़र बिलाशुबा जाइज़ है हमारे उ़लमाए किराम भी इस की रुख़्सत देते हैं। इमाम अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया है कि जो शख़्स बारिश, सफ़र या किसी और वज्ह से दो नमाज़ों को जम्अ़ करना....................................

वग़ैरा) हटाऊंगा। (34)....मज़ार से जुड़ी निशानियों की ता'ज़ीम करूंगा। (35)....**अल्लाह** तआ़ला के लिये महब्बत रखने वाले अह़बाब के साथ बैठूंगा जिन को मुख़्तलिफ़ शहरों से एक जगह सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद जम्अ़ करती है। (36)....मरीज़ों की इयादत करूंगा। (37)....जनाज़ों में शिर्कत करूंगा। (38)....**अल्लाह** तआ़ला की ख़ातिर दोस्तों से मुलाक़ात करूंगा। (39)....जिन से सिलए रेह़्मी करना आबा व अज्दाद से भलाई करना है उन से सिलए रेह़्मी करूंगा। (40)....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़मीन और बनाई हुई चीज़ों में ग़ौरो फ़िक्र करूंगा। (41)....ऐसी जगहों में दाख़िल होऊंगा जहां नेकूकार ठहरते और भले लोग बैठते हैं। (42)....अपने इस्लामी भाइयों से मुलाक़ात

.....चाहे तो उस को चाहिये कि पहली को आख़िर वक़्त तक मुअख़्ख़र कर दे और दूसरी में जल्दी कर के अव्वल वक़्त में अदा करे, इस त़रह़ दोनों को जम्अ़ कर ले, ताहम होगी हर नमाज़ अपने वक़्त में। दूसरी क़िस्म **जम्अ़ वक़्ती** है जिसे जम्अ़ ह़क़ीक़ी भी कहते हैं। इस जम्अ़ के येह मा'ना हैं कि एक नमाज़ दूसरी के वक़्त में पढ़ी जाए जिस की दो सूरतें हैं : **जम्अ़ तक़्दीम** कि वक़्त की नमाज़ मसलन ज़ोहर या मग़रिब पढ़ कर इस के साथ ही मुत्तसिलन बिला फ़स्ल पिछले वक़्त की नमाज़ मसलन अ़स्र या इ़शा पेशगी पढ़ लें और **जम्अ़ ताख़ीर** कि पहली नमाज़ मसलन ज़ोहर या मग़रिब को बा वस्फ़ क़ुदरत व इख़्तियार क़स्दन उठा रखें कि जब इस का वक़्त निकल जाएगा पिछली नमाज़ मसलन अ़स्र या इ़शा के वक़्त में पढ़ कर इस के बा'द मुत्तसिलन ख़्वाह मुन्फ़सिलन उस वक़्त की नमाज़ अदा करेंगे, येह दोनों सूरतें ब ह़ालते इख़्तियार सिर्फ़ ह़ुज्जाज को सिर्फ़ ह़ज में सिर्फ़ अ़स्र अ़रफ़ा व मग़रिब मुज़्दलिफ़ा में जाइज़ हैं। इन के सिवा कभी किसी शख़्स को किसी ह़ालत में किसी सूरत जम्अ़ वक़्ती की अस्लन इजाज़त नहीं अगर जम्अ़ तक़्दीम करेगा (तो) नमाज़े अख़ीर महज़ बात़िल व नाकारा जाएगी जब इस का वक़्त आएगा फ़र्ज़ होगी न पढ़ेगा ज़िम्मे पर रहेगी और जम्अ़ ताख़ीर करेगा तो गुनहगार होगा अ़मदन (जानबूझ कर) नमाज़ क़ज़ा कर देने वाला ठहरेगा अगर्चे दूसरे वक़्त में पढ़ने से फ़र्ज़ सर से उतर जाएगा। (फ़तावा रज़विय्या, 5-160 ता 163, मुल्तक़त़न)

नोट : जम्अ़ बैनस्सलातैन से मुतअ़ल्लिक़ तफ़्सीली मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये **फ़तावा रज़विय्या, जिल्द 5, सफ़ह़ा 159 ता 313** का मुत़ालआ़ कीजिये !

करूंगा । (43)....मुसलमान भाइयों के गुरौह में इज़ाफ़ा करूंगा । (44)....कमज़ोरों और मिस्कीनों के साथ तआ़वुन करूंगा ।

मज़ारे नबी की बरकात

(45)....किसी कहने वाले की इस बात पर अ़मल करूंगा कि "हज़रते सय्यिदुना हूद عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मज़ारे अक़्दस पर ख़ामोशी तस्बीह़, मुस्कुराना इबादत और ज़िन्दगी गुज़ारना अख़्लाक़ को संवारना है ।

नेकियों भरे सफ़र की बरकतें

(46)....हुज़ूर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस मुबारक फ़रमान पर अ़मल करूंगा कि سَافِرُوْا تَصِحُّوْا या'नी सफ़र करो सिह़्ह़त याब हो जाओगे ।"(1)

सफ़र में जाइज़ मिज़ाह़ करना इबादत है

(47)....इस फ़रमाने आ़ली पर अ़मल करूंगा कि مِزَاحُ الرَّجُلِ فِی السَّفَرِ مَعَ اَخِیْہِ عِبَادَۃٌ या'नी सफ़र में अपने मुसलमान भाई के साथ (जाइज़) मिज़ाह़ करना इबादत है ।"(2)

(48)....मज़कूरा तमाम निय्यतें अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के लिये करूंगा । (49)....जो निय्यत सलफ़ सालिह़ीन की, मैं भी वोही निय्यत रखूंगा ।

बारगाहे इलाही में इल्तिजा

اَللّٰھُمَّ اَدْخِلْ نِیَّاتِنَا فِیْ نِیَّاتِھِمْ وَاَعْمَالَنَا فِیْ اَعْمَالِھِمْ یَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ

1 ...مسند احمد، مسند ابی ھریرۃ، ۳/ ۳۲۲، حدیث: ۸۹۵۴

2 ....तख़रीज नहीं मिली ।

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमारी निय्यतों को अस्लाफ़ की निय्यतों से और हमारे आ'माल को उन के आ'माल से मिला दे, ऐ सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान।

इख़्तिताम

हुज़ूर रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सलफ़ सालिह़ीन और बा'द के बुज़ुर्गों से मन्क़ूल निय्यतों में से जो **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मोह़ताज बन्दे **मुह़म्मद सा'द बिन अ़लवी ऐ़दरूस** के लिये आसान फ़रमाया यहां इस का इख़्तिताम होता है। **अल्लाह** तआ़ला से दुआ़ है कि वोह इन के ज़रीए़ नफ़्अ़ अ़ता फ़रमाए और इन को ख़ालिस अपने लिये कर दे, बेशक वोह दुआ़ क़बूल फ़रमाने वाला है।

फ़ेहरिस्ते ह़िकायात

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा
अच्छी निय्यत का फ़ाएदा	16	नफ़्स की ग़िज़ा पर रूह़ की ग़िज़ा को तरजीह़	58
मह़बूबो मुह़िब ही को बुलाया जाता है	20	पेट को दीन का रास्ता न बनाओ	59
ऐ सांप के बच्चो !	33	कहीं मेरा सवाब ज़ाएअ़ न हो जाए	60
मग़फ़िरत करवा कर ही उठूंगा	46	मुरीदों की इस्लाह़ व तरबियत	61
क्या वोह हमें अ़ज़ाब देगा ?	49	100 ह़ज से अफ़्ज़ल अ़मल	64
रूह़ की ख़्वाहिश	57		

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

तफ़्सीली फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा
इजमाली फ़ेहरिस्त	4	ह़िकायत : मह़बूबो मुह़िब ही को बुलाया जाता है	20
किताब पढ़ने की निय्यतें	7	"لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه" के बा'द सब से अच्छा कलाम	21
तआ़रुफ़े इ़ल्मिय्या (अज़ अमीरे अहले सुन्नत مَدَّظِلُّهُ)	8	**दूसरी निय्यत**	21
पहले इसे पढ़ लीजिये	10	अ़ज़ाब से मह़फ़ूज़ व मामून	22
आग़ाज़े सुख़न	13	**तीसरी निय्यत**	22
अच्छी निय्यतों की अहम्मिय्यत	13	सुब्ह़ो शाम मस्जिद जाने की फ़ज़ीलत	23
मोमिन की निय्यत अ़मल से बेहतर है	14	कफ़्फ़ारात	23
निय्यत पर कामिल नेकी का सवाब	14	मस्जिद की त़रफ़ चल कर जाने की फ़ज़ीलत	24
तौफ़ीक़ के 70 दरवाज़े	14	**चौथी निय्यत**	24
हर मुबाह़ काम पर सवाब ह़ासिल हो	15	अच्छे और बुरे उम्मती	25
जितनी निय्यतें ज़ियादा उतना सवाब भी ज़ियादा	15	नमाज़ का एह़तिराम	25
ह़िकायत : अच्छी निय्यत का फ़ाएदा	16	नमाज़ियों का जन्नत में दाख़िला	26
फ़क़त़ निय्यत पर सवाब	16	फ़िरिश्ते ख़ुश नसीबों के नाम लिखते हैं	27
आ'माल के सवाब का मदार	16	**पांचवीं निय्यत**	27
तिहाई इ़ल्म	17	अ़ज़ाब से छुटकारा	27
निय्यत के मुतअ़ल्लिक़ अस्लाफ़ के अक़्वाल	17	क़ुर्बे इलाही कैसे ह़ासिल हो ?	28
मस्जिद जाने की आठ निय्यतें	19	अ़ज़ीम अमानत की अदाएगी का वक़्त	28
पहली निय्यत	19		
अल्लाह से मुलाक़ात करने वाला	19		
मस्जिद की ह़ाज़िरी भी तौफ़ीक़े इलाही से मिलती है	20		

नमाज़ के वक़्त फ़िरिश्तों की पुकार	28	मस्जिद में दाख़िले की दुआ	38
सय्यिदुना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ और नमाज़	29	**मस्जिद में बैठने की 12 निय्यतें**	39
छटी निय्यत	29	मोमिनीन के बाग़ात	39
कामिल मोमिन की अ़लामत	29	**पहली निय्यत**	40
अल्लाह वाले	30	बा जमाअ़त नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत	40
नूर में डूबे हुए	30	बा जमाअ़त नमाज़ में चार ख़ूबियां	41
मसाजिद आबाद करने वालों का मक़ामो मर्तबा	30	**दूसरी निय्यत**	41
		सुन्नत पर अ़मल का सवाब	41
सातवीं निय्यत	31	तर्के सुन्नत का वबाल	41
मस्जिद में नेकी की दा'वत देने के मवाक़ेअ़	32	**तीसरी निय्यत**	42
		ख़ुश बख़्तों की मजलिस	42
मसाजिद को इन कामों से बचाओ	32	**चौथी निय्यत**	43
हिकायत : ऐ सांप के बच्चो !	33	ख़ताएं मुआ़फ़ और दरजात बुलन्द हों	43
इन को अल्लाह से कोई काम नहीं	33	बड़ी निगहबानी	44
मसाजिद की ता'मीर का मक़्सद	34	**पांचवीं निय्यत**	44
आठवीं निय्यत	34	इस उम्मत की रुहबानिय्यत	44
ख़तरात और हलाकतों से महफ़ूज़	35	हज़ार रक्अ़त नफ़्ल पढ़ने से अफ़्ज़ल	45
बेहतरीन जगहें और बेहतरीन लोग	35	**छटी निय्यत**	45
इब्लीस के फ़ितने से महफ़ूज़	35	बे शुमार सवाब	45
मोमिन को शैतान से बचाने वाले क़ल्ए	36	हिकायत : मग़फ़िरत करवा कर ही उठूंगा	46
मस्जिद जाने की निय्यतों का ख़ुलासा	37		
मस्जिद जाने की दुआ	37	**सातवीं निय्यत**	46

राहे ख़ुदा में जिहाद करने वाले की मिस्ल	46	महब्बते इलाही के मुस्तहिक़	54
पांचवें न बनना	47	नेकी करो अगर्चे मीलों सफ़र करना पड़े	54
साल भर की इबादत से ज़ियादा पसन्दीदा	47	**मस्जिद में बैठने की निय्यतों का ख़ुलासा**	55
इल्मी महफ़िल गोया रसूलुल्लाह की महफ़िल है	47	मस्जिद से निकलते वक़्त की दुआ	56
सायए अर्श में रहने वाले	47	**मुसलमान भाइयों से मुलाक़ात की निय्यतें**	56
बुलन्द दरजात चाहते हो तो....!	48	**मुलाक़ात की पांच आफ़तें और बुरी निय्यतें**	57
नेक दोस्त से बेहतर कोई चीज़ नहीं	48	**पहली आफ़त**	57
हिकायत : क्या वोह हमें अज़ाब देगा ?	49	बुरा बन्दा	57
आठवीं निय्यत	49	आख़िरी ज़माने में लोगों का ख़ुदा, दीन और ज़ेवर	57
नवीं निय्यत	50	हिकायत : रूह की ख़्वाहिश	57
महफ़िले ज़िक्र की बरकतें	50	हिकायत : नफ़्स की ग़िज़ा पर रूह की ग़िज़ा को तरजीह	58
मस्जिदें दारुल अमान हैं	50		
फ़िरिश्तों की दुआ का मुस्तहिक़ कौन ?	50	हिकायत : पेट को दीन का रास्ता न बनाओ	59
दसवीं निय्यत	51	**दूसरी आफ़त**	59
किस की सोहबत इख़्तियार की जाए ?	51	**तीसरी आफ़त**	60
जिस से फ़िरिश्ते भी हया करें	52	हिकायत : कहीं मेरा सवाब ज़ाएअ न हो जाए	60
ग्यारहवीं निय्यत	52		
मसाजिद में बैठने की बरकात	53	**चौथी आफ़त**	61
बारहवीं निय्यत	53	सच्चा इन्सान अपनी नेकियां छुपाता है	61
70 हज़ार फ़िरिश्तों का साथ और दुआ	53	**पांचवीं आफ़त**	61

हिकायत : मुरीदों की इस्लाह़ व तरबियत	61	सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को नसीह़त	71
मुलाक़ात की सात अच्छी निय्यतें	63	**चौथी निय्यत**	71
पहली निय्यत	63	मुसाफ़ह़ा करते वक़्त मुस्कुराने की फ़ज़ीलत	71
बन्दए मोमिन की हुरमत	63	**पांचवीं निय्यत**	72
आ़लिम, त़ालिबे इ़ल्म और मोमिन की शान	63	औलिया से मह़ब्बत की बरकतें	72
मुसलमान की ता'ज़ीम अल्लाह की ता'ज़ीम है	64	औलिया की औलिया से मह़ब्बत	73
		सात चीज़ों की त़रफ़ देखना इ़बादत है	73
पांच चीज़ें मक़्बूल ही मक़्बूल हैं	64	अह़लो इ़याल की मुलाक़ात से ज़ियादा पसन्दीदा	74
हिकायत : 100 ह़ज से अफ़्ज़ल अ़मल	64		
दूसरी निय्यत	65	**छटी निय्यत**	74
बाहमी मह़ब्बत को मज़बूत़ करने वाली चार ख़ूबियां	65	नासेह़ दोस्त बेहतर है या माल देने वाला ?	74
		आप के दिल का क्या ह़ाल है ?	74
मुह़िब की निगाह मह़बूब को तलाश करती है	66	अ़क़्ल मन्द के चार अवक़ात	75
दीने इस्लाम के बा'द सब से बेहतर	67	दिल की तलाश	75
मोमिन दो हथेलियों की मिस्ल है	67	**सातवीं निय्यत**	76
तीसरी निय्यत	67	अल्लाह के लिये मुसलमान से मह़ब्बत का इन्आ़म	76
70 हज़ार फ़िरिश्तों की दुआ़	67		
एक बहुत ही प्यारी सुन्नत	68	इस्तिग़फ़ार का ह़क़ीक़ी मा'ना	77
99 रह़मतों का मुस्तह़िक़	68	**मुलाक़ात की निय्यतों का ख़ुलासा**	78
मुलाक़ात के वक़्त मुस्कुराने की फ़ज़ीलत	69	बुरी निय्यतें	78
नूरी सुवारियों के सुवार	69	अच्छी निय्यतें	78
तू ख़ूब रहा और जन्नत भी ख़ूब है	70	मुलाक़ात की दुआ़एं	79

दुरूद शरीफ़ पढ़ने की निय्यतें	80	दुआए मुस्तफ़ा	95
मसाजिद में तिलावते कुरआन की मजालिस और दौरए कुरआन में हाज़िरी की 42 निय्यतें	81	सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की भूक	96
		जन्नत में रसूलुल्लाह की रफ़ाक़त	96
		बरोज़े महशर कुर्बे रसूल पाने वाला	97
रात की इबादत की 15 निय्यतें	84	बिला हिसाब जन्नत में दाख़िला	97
नेकी की दा'वत की 19 निय्यतें	85	**तीसरी निय्यत**	98
निकाह़ की 23 निय्यतें	86	अफ़्ज़ल लिबास, अफ़्ज़ल इल्म और अफ़्ज़ल इबादत	98
बारगाहे इलाही में दुआएं	87		
निकाह़ की दुआएं	89	गुनाहों से बचने का नुस्ख़ा	99
निकाह़ करने वाले को दुआ	89	दुन्या ! तेरा पेट है	99
निकाह़ करने वाले की दुआ	89	**चौथी निय्यत**	99
पढ़ने पढ़ाने की 13 निय्यतें	90	दुन्या में भूका रहने की फ़ज़ीलत	99
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ	90	अम्बियाए किराम की रफ़ाक़त हासिल हो	100
गोशा नशीनी की 21 निय्यतें	91	पेट और शर्मगाह की ख़्वाहिशात का ख़ौफ़	100
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये भूका रहने की सात निय्यतें	91	**पांचवीं निय्यत**	100
		हया की हक़ीक़त तीन चीज़ें हैं	100
पहली निय्यत	92	खाना खाते वक़्त सहाबा की तमन्ना	101
नफ़्स को मग़लूब करने का त़रीक़ा	92	**छटी निय्यत**	102
भूक की अहम्मिय्यत व फ़ज़ीलत	93	**सातवीं निय्यत**	102
जन्नती सुवारियों के सुवार	93	ताकि भूकों को याद रखूं	102
शैत़ान का जासूस	94	पांच चीज़ें और पांच लोग	103
दूसरी निय्यत	95	**भूका रहने की निय्यतों का ख़ुलासा**	103

किताबों के हुसूल और मुतालए की 48 निय्यतें	103	रिश्तेदारों से मुलाक़ात की पांच निय्यतें	116
		लाइब्रेरी में दाख़िल होने की 21 निय्यतें	116
बारगाहे इलाही में इल्तिजाएं	105	सदक़ा करने की 11 निय्यतें	117
दर्स सुनने और देने नीज़ इल्मो ज़िक्र के हल्क़ों और सालिहीन की जगहों पर हाज़िरी की 40 निय्यतें	107	किताब की ख़रीदो फ़रोख़्त की सात निय्यतें	117
		अपने पास तस्बीह रखने की छ निय्यतें	117
बारगाहे इलाही में इल्तिजा	109	चादर इस्ति'माल करने की 10 निय्यतें	118
मुसलमानों पर वक़्फ़ मफ़ादाते आम्मा की चीज़ें, ज़मीन और अमवाल में 46 निय्यतें	109	चादर ओढ़ने की दुआ	118
		घड़ी इस्ति'माल करने की चार निय्यतें	118
दुआ	111	अजाइब घरों और तफ़रीह गाहों की पांच निय्यतें	119
मशाइख़ व बुज़ुर्गाने दीन से मुलाक़ात की सात निय्यतें	111	अज़ान देने की 12 निय्यतें	119
		अज़ान सुनते वक़्त की दुआएं	120
नेक इजतिमाआत में हाज़िरी की 11 निय्यतें	112	शफ़ाअते मुस्तफ़ा का हुसूल	120
		मशरूबात पीने की 23 निय्यतें	121
इजतिमाए मीलाद में हाज़िरी की 10 निय्यतें	112	मिस्वाक की सात निय्यतें	122
ज़ियारते क़ुबूर की सात निय्यतें	113	मिस्वाक करने की दुआ	123
ज़ियारते क़ुबूर की दुआ	114	बुलन्द आवाज़ से तिलावत वग़ैरा की छ निय्यतें	123
गाड़ी चलाने की चार निय्यतें	114		
मस्जिद की सफ़ाई की 10 निय्यतें	114	आख़िरी सफ़ों में नमाज़ पढ़ने की निय्यत	123
घर में रहने की छ निय्यतें	115	तालाब वग़ैरा पर जाने की 5 निय्यतें	124
हाथ मिलाने की आठ निय्यतें	115	दर्स में हाज़िरी की छ निय्यतें	125

मुसलमान भाइयों को नसीहत करने की सात निय्यतें	125	पालतू जानवर ख़रीदने की सात निय्यतें	135
		मुर्ग़ की आवाज़ सुनें तो क्या करें ?	136
मसाइल लिखने की तीन निय्यतें	125	अन देखी मख़्लूक़	136
वुज़ू की छ निय्यतें	126	**सुवारी वग़ैरा ख़रीदने की चार निय्यतें**	136
वुज़ू करते वक़्त की दुआ़एं	126	गाड़ी पर सुवार होने की दुआ़	136
वुज़ू के बा'द की दुआ़	128	**मरीज़ से मुलाक़ात की छ निय्यतें**	137
वुज़ू के बा'द वाली दुआ़ की फ़ज़ीलत	129	इ़यादत करते वक़्त की दो दुआ़एं	137
नया कपड़ा पहनने की छ निय्यतें	130	**उ़र्स वग़ैरा में ह़ाज़िरी की 8 निय्यतें**	138
नया कपड़ा पहनने की दुआ़	130	**हस्पताल वग़ैरा जाने की 35 निय्यतें**	138
नया कपड़ा पहनने वाले को दुआ़	130	**सफ़र की 11 निय्यतें**	140
बाज़ार जाने की नव निय्यतें	130	सफ़र की दुआ़	141
बाज़ार में दाख़िले की दुआ़	131	**सय्यिदुना हूद عَلَيْهِ السَّلَام के मज़ार की ज़ियारत की 49 निय्यतें**	142
बैतुल ख़ला में जाने की आठ निय्यतें	131		
बैतुल ख़ला में दाख़िले से पहले की दुआ़	132	मज़ारे नबी की बरकात	146
बैतुल ख़ला से निकलने के बा'द की दुआ़	132	नेकियों भरे सफ़र की बरकतें	146
खाना खाने की नव निय्यतें	133	सफ़र में जाइज़ मिज़ाह़ करना इ़बादत है	146
खाना खाने से पहले की दुआ़	133	बारगाहे इलाही में इल्तिजा	146
खाना खाने के बा'द की दुआ़	134	इख़्तिताम	147
क़ह़वा और चाए पीने की चार निय्यतें	134	फ़ेहरिस्ते ह़िकायात	147
तिजारत की 20 निय्यतें	134	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	148
लोगों की ह़ाजतें पूरी करने और उन का हाथ बटाने की छ निय्यतें	135	मआख़िज़ो मराजेअ़	155
		❁❁❁❁	

ماٰخذ و مَراجع

قرآن پاک	کلام باری تعالیٰ	....
نام کتاب	**مصنف / مؤلف**	**مطبوعہ**
ترجمۂ کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
التفسیر الکبیر	امام محمد بن عمر رازی شافعی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث ۱۴۲۰ھ
روح المعانی	شہاب الدین سید محمود آلوسی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث ۱۴۲۰ھ
تفسیر القرطبی	امام محمد بن احمد قرطبی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۷۱ھ	دار الفکر ۱۴۲۰ھ
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم ۱۴۱۹ھ
سنن الترمذی	امام محمد بن عیسٰی ترمذی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن ابی داود	امام ابوداود سلیمان بن اشعث علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث ۱۴۲۱ھ
سنن نسائی	امام احمد بن شعیب نسائی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۶ھ
سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید قزوینی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
المصنف	عبد اللہ بن محمد بن ابی شیبۃ علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
المصنف	حافظ ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
المسند	امام احمد بن محمد بن حنبل علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
المسند	امام ابوبکر احمد بن عمرو بزار علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم ۱۴۲۴ھ
المسند	حافظ حارث بن ابی اسامہ علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۸۲ھ	المدینۃ المنورہ ۱۴۱۳ھ
المسند	ابویعلٰی احمد بن علی موصلی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
مشکاۃ المصابیح	محمد بن عبد اللہ خطیب تبریزی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۷۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۴ھ
مسند فردوس	شیرویہ بن شہردار دیلمی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۰۹ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۰۶ھ
مستدرک	امام محمد بن عبد اللہ حاکم علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ

الموسوعة	عبداللہ بن محمد ابن ابی الدنیا علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریۃ ۱۴۲۶ھ
المعجم الکبیر	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	داراحیاء التراث ۱۴۲۲ھ
المعجم الاوسط	حافظ سلیمان بن احمد طبرانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۰ھ
حلیۃ الاولیاء	ابونعیم احمد بن عبداللہ اصبہانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۸ھ
الزھد	امام احمد بن محمد بن حنبل علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالغد الجدید ۱۴۲۶ھ
الزھد	ابوعبدالرحمٰن عبداللہ بن مبارک علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۸۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت
الموضوعات	عبدالرحمٰن بن علی بن الجوزی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۹۸ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۲۱ھ
معرفۃ الصحابۃ	ابونعیم احمد بن عبداللہ اصبہانی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۲ھ
فتح الباری	حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۵ھ
احیاء العلوم	ابوحامد محمد بن محمد غزالی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	دارصادر بیروت
قوت القلوب	امام ابوطالب محمد بن علی مکی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۸۶ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۶ھ
علم القلوب	امام ابوطالب محمد بن علی مکی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۸۶ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۳۵ھ
تنبیہ الغافلین	ابولیث نصر بن محمد سمرقندی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۷۳ھ	دارالکتاب العربی ۱۴۲۰ھ
المسند	امام حافظ سلیمان داود طیالسی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۰۴ھ	دارالمعرفۃ بیروت
الجامع فی الحدیث	عبداللہ بن وھب بن مسلم مصری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۹۷ھ	دارابن جوزی ۱۴۱۶ھ
جامع العلوم والحکم	عبدالرحمٰن بن شھاب الدین علیہ الرحمہ متوفّٰی ۷۹۵ھ	مکتبۃ الفیصلیۃ مکہ
التبصرۃ	عبدالرحمٰن بن علی ابن جوزی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۳ھ
تاریخ مدینہ	ابوزید عمر بن شبۃ نمیری بصری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۶۲ھ	دارالفکر بیروت
العظمۃ	محمد بن محمد المعروف بابی الشیخ علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۶۹ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۴ھ
فضائل بیت المقدس	محمد الواحد بن احمد مقدسی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۴۳ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۰۵ھ
امالی	عبدالملک بن محمد بشران علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۳۰ھ	دارالوطن ریاض ۱۴۱۸ھ
منہاج العابدین	ابوحامد محمد بن محمد غزالی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیۃ
المغنی	عبداللہ بن احمد الشھیر بابن قدامۃ علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۲۰ھ	دارعالم الکتب ۱۴۰۶ھ

معجم الصحابة	ابوالقاسم عبداللہ بن محمد بغوی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۱۷ھ	مکتبۃ دارالبیان ۱۴۲۱ھ
العقد الفرید	احمد بن محمد عبد ربہ اندلسی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۲۸ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
تاریخ بغداد	احمد بن علی خطیب بغدادی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۱۷ھ
المجالسۃ وجواہر العلم	ابوبکر احمد بن مروان مالکی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۳۳ھ	دارالکتب العلمیۃ ۱۴۲۱ھ
الاحادیث المختارۃ	محمد بن عبدالواحد حنبلی مقدسی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۶۴۳ھ	دار خضر ۱۴۲۱ھ
تذکرۃ الموضوعات	محمد طاہر بن علی ہندی فتنی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۸۶ھ	دار احیاء التراث ۱۳۴۳ھ
اعتلال القلوب	محمد بن جعفر بن محمد خرائطی علیہ الرحمہ متوفّٰی ۳۲۷ھ	نزار مصطفٰی الباز ۱۴۲۰ھ
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی قاری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۱۰۱۴ھ	دارالفکر بیروت
السنۃ	عبداللہ بن احمد بن حنبل علیہ الرحمہ متوفّٰی ۲۹۰ھ	دار ابن قیم دمام ۱۴۰۶ھ
اسنی المطالب...	ابویحیٰی ذکریا بن محمد انصاری علیہ الرحمہ متوفّٰی ۹۲۶ھ	.....

ज़ोहर के आख़िरी दो नफ़्ल के भी क्या कहने

ज़ोहर के बा'द चार रक्अ़त पढ़ना मुस्तहब है कि ह़दीसे पाक में फ़रमाया : जिस ने ज़ोहर से पहले चार और बा'द में चार (रक्अ़त) पर मुह़ाफ़ज़त की अल्लाह तआ़ला उस पर आग ह़राम फ़रमा देगा। (نسائی، ص۳۱۰، حدیث:۱۸۱۳) अ़ल्लामा सय्यिद त़ह़त़ावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : सिरे से आग में दाख़िल ही न होगा और उस के गुनाह मिटा दिये जाएंगे और उस पर (हुक़ूक़ुल इ़बाद या'नी बन्दों की ह़क़ तलफ़ियों के) जो मुत़ालबात हैं अल्लाह तआ़ला उस के फ़रीक़ को राज़ी कर देगा या येह मत़लब है कि ऐसे कामों की तौफ़ीक़ देगा जिन पर सज़ा न हो (حاشیۃ الطحطاوی علی الدر، ۱/ ۲۸۴) और अ़ल्लामा शामी قُدِّسَ سِرُّہُ السَّامی फ़रमाते हैं : उस के लिये बिशारत येह है कि सआ़दत पर उस का ख़ातिमा होगा और दोज़ख़ में न जाएगा। (ردالمحتار، ۱/ ۵۴۷)

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी ।

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN
0133048

MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाखें

۞ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
۞ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
۞ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
۞ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net

www.dawateislami.net